समता अपार शक्ति

समता

अध्यात्मिक पत्र

साचा नाम प्रभु सिमरिये, मिल संगत प्रेम कमाइये ।
"संगत" सफल यह जोवना, जो रेहनी साँची पाइये ।।

समता

अध्यात्मिक पत्र

(प्रथम भाग)

(परम योगीराज श्री सद्गुरु देव महात्मा मंगत राम जी द्वारा समय-समय पर प्रेमियों को लिखे गये पत्रों का संग्रह)

प्रकाशक

संगत समतावाद (रजि०)

समता योगाश्रम, छछरौली रोड

जगाधरी जिला अम्बाला (हरयाणा)

हज़ारों वर्ष की तपस्या इतना फल नहीं देती जितना दो घड़ी सत्संग से लाभ होता है। सत्संग में सहज ही सब भेद का विचार समझ आ जाता है। मूर्ख आदमी भी गुणवन्त हो जाता है, सत्संग ही तीर्थ है और ईश्वर प्राप्ति का कारण है। (श्री मंगतराम जी)

प्रथम संस्करण 1976 …..1000

संगत समतावाद (रजि०) समता योगाश्रम, छछरोली रोड, जगाधरी (हरयाणा) की ओर से राज प्रिन्टर्स राजा मण्डो आगरा-२ से मुद्रित।

प्रकाशक की ओर से

भारत की पवित्र भूमि में समय-समय पर संत महापुरुषों ने जन्म लेकर भूली भटकी जन्ता को सत मार्ग दर्शाया और उन्हें मोह माया को घोर जाल से बचा कर प्रभु परायणता का पाठ पढ़ाया। इस के अतिरिक्त उन्हें जीवन सम्बन्धी, समाज सम्बन्धी और संसार सम्बन्धी भिन्न-भिन्न विचारों द्वारा यथार्थ जीवन को अपनाने का आदेश दिया। जहाँ ऐसे सत पुरुषों ने स्थान-स्थान का भ्रमण करके सर्व साधारण को अपने अमृत व मनोहर तथा कल्याणकारी बचनों और वाणी द्वारा जीवन सुधार के साधन बतलाये वहाँ समय-समय पर सत की जिज्ञासा रखने वालों को पत्तों द्वारा भी गूह्य से गूह्य उपदेश दे कर उनके तप्त हृदयों को ठण्डा किया।

परम संत शिरोमणि सतगुरु देव महात्मा मंगत राम जी महाराज भी ऐसे ही सतपुरुष हुये हैं जिन्हों ने इस पंच भौतिक शरीर में आकर ममता वाद की प्रचण्ड अग्नि में तप्त संसारियों को शान्ति प्राप्ति का आदेश दिया।

आप के अनुभवी सत उपदेश इस समय दो महान ग्रन्थों "श्री समता प्रकाश" (वाणी) तथा "श्री समता विलास" (बचनों) में प्रकाशत हो चुके हैं। जिन का स्वाध्याय करके

मानव मात्र आनन्द प्राप्त कर रहे हैं। अब इस पुस्तक द्वारा सर्व साधारण के लाभ हेतू इस युग पुरुष के सत उपदेशों से भरपूर पत्नों का संग्रह प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि मानव मात्र इनका विचार पूर्वक स्वाध्याय करके शाश्वत शान्ति का अनुभव कर सकें। यह वह पत्र हैं जो आप ने अपने जीवन काल में समय-समय पर अपने शिष्यों को उनके संशे निवृति, चेतावनी हेतु और समता की शिक्षा सुलभ रूप से पेश करने के लिये लिखा करते थे।

संगत समता वाद

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
1. जीवन सम्बन्धी पत्र	1- 100
2. सत्संग सम्बन्धी पत्र	101 – 102
3. धर्म सम्बन्धी पत्र	125 - 137
4. योग सम्बन्धी पत्र	141 - 206
5. आश्रम सम्बन्धी पत्र	207 - 228
6. गुरु-शिष्य सम्बन्धी पत्र	229 - 246
7. बाल धर्म सम्बन्धी पत्र	247 - 248
8. चेतावनी	249 - 250

जीवन सम्बन्धी पत्र

महा मन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार अजनमा, अदद्वैत पुरख ।

सर्व व्यापक कल्यान मूरत परमेश्वराये नमस्तं ॥

जीवन सम्बन्धी पत्र !

१. हर वक्त नेक अमल और गुरु बचन के विश्वासी बनें !-

आशीर्वाद पहुँचे ! पत्र मिला, ईश्वर सत् श्रद्धा देवें ! तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी ! ईश्वर सत् अनुराग देवे ! हर वक्त नेक अमल और गुरु वचन के विश्वासी बनें। बच्चों वाले ख्यालात को तर्क (त्याग) कर देवें। इस जिन्दगी का सही मकसद (उद्देश्य) बहुत दूर है । समता के असूलों (नियमों) को अपनाएँ । ईश्वर बल बुद्धि देवे । तमाम प्रेमियों को दुबारा आशीर्वाद कहनी । ईश्वर इच्छा से कल से लाहौर आये हैं। और शायद जल्दी ही किसी दूसरी जगह चले जावेंगे । ईश्वर सत् सेवा का भाव बख्शे । हर वक्त हमको हृदय में देखें । ईश्वर सत् विश्वास देवे ।

२. "सत प्राणयता का निश्चय दृढ़ करने का आदेश"-

इस भयानक नास्तिकवाद के ज़माने में जबकि आम मानुषों ने जोवन कर्त्तव्य केवल शारीरिक भोग ही समझ रखा है, और अति भोग वासना में अरुढ़ हुऐ हुऐ अधिक भोग पदार्थ प्राप्त करने के यत्न में दिन रात परेशान रहते हैं । न ही शरीर की विनाश निश्चय आती है न अति भोगों की प्राप्ति दुःख रूप प्रतीत होती है, और न ही सत् कर्त्तव्य जीवन का अनुभव होता है महज पशु समान ही जीवन यात्रा को व्यतीत करके अति

खेद सहित काल के मुख में जा रहे हैं। ऐसे अधिक तमोगुणी के फैलाओ के ज़माने में जिस को सत् परायनता का निश्चा दृढ़ हो रहा है, वह दुर्लभ कर्मचारी पुरुष है। सो प्रेमी जी, मानुष जन्म का उत्तम कर्तव्य तो यह ही है कि नाशवान् शारीरिक भोग वासना से निवर्ती प्राप्त करके अविनाशी तत्व की खोज में अधिक दृढ़ता धारण करे और पूर्ण सत् यत्न द्वारा तमाम मानसिक विकारों से पवित्रता हासिल करके अखण्ड अविनाशी तत्व निज स्वरुप के बोध को प्राप्त होवे। जो परम स्थिति और परम शान्ति है। ऐसे जीवन के सही भेद को समझ करके नित ही निर्माण भाव को धारण करके अपने आपको सत् ग्रह में दृढ़ करें यानी सत विश्वास, सत अनुराग, और सत निधयास में पूर्ण निश्चय से कारबन्द होवें। तब ही नाशवान् भोगों से वैराग को प्राप्त करके सत्नाम में निश्चलता दृढ़ होगी जो तमाम सुखों का भण्डार है। ऐसी स्थिति वाला पुरुष अपने तमाम शारीरिक सुखों के राग को त्याग करके निमित्त मात्र शारीरिक कर्मों में बिचरता हुआ सत् स्वरूप आत्मा में निःचल रहता है। वह ही परम भगत और परम ज्ञानी है। ऐसी अवस्था ही दुर्लभ है, प्रभू नित ही परम अनुराग और निर्मल सत् यत्न अपनी जीवन उन्नति का देवे !

३. प्रभू इच्छा पर समय काटना चाहिए-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला ईश्वर सत् बुद्धि देवे, आगे पत्र लिखा गया है, डाक की गड़बड़ से शायद न मिला होवे !

सब जगह के हालात खराब हैं। शान्ति होने पर ही हालात के मुताबिक (अनुसार) अपनी उन्नति का असबाब (कारण) सोचना ठीक है फिलहाल प्रभू इच्छा पर समय काटना चाहिए। शायद नारायण शान्ति कर देवेंगे ! निहायत तबाही हुई है ! ईश्वर अब भो लोगों को रास्ती की तरफ लगाये, अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। एक हफ्ता के वास्ते और इस जगह ठहर गये हैं, संगत की मजबूरी की वजह से ! और हर जगह अशान्ति हो अशान्ति है। अगले हफ्ता में चनारी जावेंगे। अपने हालात से मुतला (सूचित) करते रहा करें। घबराने की जरूरत नहीं, ईश्वर पर भरोसा रखें। बच्चों की माता जी को आशीर्वाद कहनी। रावलपिन्डी के प्रेमी सत्संग में दर्शन देते हैं इधर भी हालात कुछ अच्छे नहीं हैं ! ईश्वर ही रखिया करे। यह काल चक्र का ज़माना है, ईश्वर की कृपा से ही शान्ति होवे ! (श्रीनगर)

४. हर जगह प्रभू रखिया करने वाले हैं-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिले, ईश्वर सत् शान्ति देवे तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी, वाजय (ज्ञात) होवे कि हर जगह प्रभू रखिया करने वाला है। भागने से कुछ हासिल नहीं होता, मासवाये तकलीफ के, इस वास्ते सत विश्वास से अपनी अपनी जगह दृढ़ रहना चाहिये। ईश्वर अपनी कृपा से शायद आइन्दा शान्ति करेंगे। इस भयानक समय में राजा प्रजा सब दुख पा रहे हैं प्रभू ही शान्ति का देने वाले हैं। समय प्रभू कृपा से अच्छा आवेगा। सब हालात दुरुस्त (ठीक) हो जायेंगे।

दुनियाँ में ऐसे इन्कलाब (क्रान्ति) के समय अकसर आते रहते हैं। एक प्रभू का भरोसा रखना चाहिये। हर वक्त प्रभू सत् विश्वास देवें । दुबारा तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी ईश्वर सत् सन्तोख (सन्तोष) देवे । (श्रीनगर)

५. परमार्थ की तरफ रागिव होने की तलकीन-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला, ईश्वर सत् बुद्धि देवे तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। इस नाशवान् संसार में हरएक जीव अपनी जीवन यात्रा को पूर्ण करने के वास्ते आया है इस वास्ते लाज़मी (आवश्यक) है कि स्वार्थ की कैद से मुबरा (छूटकर) होकर परमार्थ की तरफ अपने आपको रागिब (आकर्षित) किया जावे, जिससे लोक और परलोक दोनों सुघर जावे ! अभ्यास किया करें, जिससे बुद्धि निर्मल होवे और सत्संग का प्रोग्राम (कार्यक्रम) बनाये रख। समां बड़ा भयानक है, ईश्वर ही रखिया की शक्ति और बुद्धि देव । अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। (अनन्त नाग)

६. रक्षक बुद्धि प्राप्ति के लिये आशीर्वाद-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला, ईश्वर सत् श्रद्धा देवे । तमाम प्रेमियों को एक एक करके आशीर्वाद कहनी । ईश्वर सत् धर्म विश्वास देवे । तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी । ईश्वर नित ही रखिया बुद्धि देवे । इस वक्त मुल्को तकसीम (देश के बटवारे) से अधिक अशान्ति प्रचण्ड हो रही है। प्रभू सबके अन्दर एकता प्रेम देवे । वापिसी कुशल पत्रका लिखनी । आज सुनने में आया

है कि तुम्हारा इलाका (प्रदेश) हिन्दुस्तान में चला गया है ईश्वर इच्छा से जनता के वास्ते वेहतर हो गया है। पाकिस्तानी इलाके के हालात अभी निहायत (अत्यन्त) खतरनाक हैं शायद आइन्दा कुछ हिन्दुओं के वास्ते वेहतर ही हो जावे। प्रेमी जी, सम्मेलन का अभी कोई पता नहीं क्योंकि हिन्दू सिक्ख जनता उस इलाके की उजड़ चुकी है। सिर्फ गंगोठियां स्थान ही महफूज़ (सुरक्षित) है अब तमाम हालात के अनुकुल ही फैसला होवेगा। आखिर भादों तक हालात की इन्तज़ारी (प्रतीक्षा) है। आगे जो आज्ञा ईश्वर की अगले हफ्ते में चनारी जावेंगे | तमाम प्रेमियों को दुबारा आशीर्वाद कहनी, अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें।

७. सही फर्ज अनुकूल जीवन व्यतीत करने की तकलीन-

आशीर्वाद पहुँचे पत्र मिला ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर नित ही पवित्र आचरण देवे। लोक सेवा का भाव बख्शे ! और एक ईश्वर दिश्वास प्राप्त होवे इस सराये फानी (नाशवान संसार) में सही फर्ज की जांच करके अपना जीवन व्यतीत करें हर वक्त हमको हृदय में देखें। प्रभू सत् अनुराग देवे।

(चौबुर्जी लाहोर)

८. अमली जीवन बनाने की तलकीन-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला, ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम

संगत को एक-एक कर के आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी निगाह दूर की पैदा करें, तब पता लगेगा कि समता की तालीम (शिक्षा) रूहानी आज़ादी (अध्यात्मिक स्वतंत्रता) और असली खुशी का सरूप है और आज कल मादे की आज़ादी जो वास्तव में तबाही का हाल है, उसका अधिक प्रचार हो रहा है। किसी वक्त यह सूरत बदल कर समता के स्वरुप में आ जावेगी। इस वास्ते तुम अपना जीवन बाअमल बनाकर अपने असूल पर कारबन्द रहें। जो कुछ होता है वह प्रभू हुक्म (आज्ञा से ही होता है। समय पर अक्सर कई गुरमुखों की कुरबानियाँ (बलिदान) देश को जीवन देती हैं। ईश्वर सत् बुद्धि देवे तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। सतसंग में अगर हाज़री कम है। तो भी कोई हर्ज नहीं ? तुम अपना असूल (नियम) मुकम्मिल (पूर्ण) रखें। ईश्वर की कृपा दृढ़ निश्चय से बाअमल होने से जरूरी होती है। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। कुछ समय तक एक एकान्त जगह मुकीम (ठहरे) हैं इस जगह का का नाम समयाला है। यह वैजनाथ (जिला कांगड़ा) से छः मील के फासले पर है। साढ़े पाँच हजार फुट की बुलन्दी (ऊंचाई) है। तमाम प्रेमी अपनी-अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। ईश्वर सत् विश्वास देवे। और देश के वास्ते एक आलातरीन (बहुत बढ़िया) जीवन बनाने में हर वक्त प्रभू परायणता धारण करें। ईश्वर गुरु वचन का विश्वास देवे।

(समयाला)

८. जिन्दगी का कमाल एक प्रभू परायण होने से प्राप्त होता है-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला, ईश्वर सत् बुद्धि देवे । तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् अनुराग देवे, प्रेमी जी वाजय (ज्ञात) होवे कि ज़िन्दगी का कमाल एक प्रभू परायण होने से प्राप्त होता है। संसार में कई प्रकार की मानसिक लहरें उत्पन्न होती हैं मगर समय पर सब लय हो जाती हैं। इस वास्ते एक ईश्वरीय नियम की जो लहर है और हर ज़माने में हर एक जीव के वास्ते कल्याणकारी है उस पर दृढ़ निश्चय से कारबन्द होना अपनी कल्याण और देश की कल्याण भी है, इस वास्ते ज़रूरी अभ्यास किया करे और सतसंग का प्रोग्राम भी दृढ़ रखें। पत्रिका लिखते रहा करे, तब पवित्र जिन्दगी तुम्हारी देखना चाहते हैं। जमाने की हरकत दिन व दिन गिरावट की ओर जा रही है, इस वास्ते अपने आपको समता के असूलों द्वारा बचाओ और दूसरों के मुहाफिज़ (रक्षक) बनो ईश्वर गुरुवचन का विश्वास देवें। अपनी वापसी राय लिखनी कि सालाना (वार्षिक) सम्मेलन जो गंगोठियाँ होता है वह होना चाहिये क्या तुम्हारी हाज़री होवेगी। तमाम संगत का भाव पूछ कर जल्दी पता देना क्योंकि और जगह के प्रेमी इस के मुतालिक (विषय) पूछ रहे हैं। अपनी संगत का पता देना जरूरी, ईश्वर सत् अनुराग और सत् परायणता देवें।

(समयाला २१-७-४६)

१०. दुनियाँ में सुख और शान्ति अपने सदाचार से ही है-

आज्ञाकारी सती सेवक…….. जी।

आशीर्वाद पहुंचे, पत्र मिला, अहवाल (हाल) मालुम हुआ ईश्वर आज्ञा से आज १३ मई को बाहर जा रहे हैं वास्ते तप के इस वास्ते अगर पत्र लिखना होवे तो मुन्शी सेवाराम कोहाला के नाम लिखना हम जिस जगह भी हुए वह पहुँचा देगा। फिर अगर इस इलाके से बाहर गये तो फिर जो पोस्ट होवेगा लिखा जावेगा। और सब तरह से आनन्द है। ईश्वर तुम को सत् और शन्ति वख्शे। अपने श्रेष्ठ आचार में मुस्तकिल (टिके) रहें। दुनियाँ में सुख और शान्ति अपने सदाचार से ही है। सदाचार ही दुनियाँ में बड़ा बल और तेज है। तुम हमारे बचन को मन तन करके मानो ईश्वर तुम को सदा ही आनन्द देवेगा। तुम हर वक्त हमारे हृदय में रहते हो। जहाँ तक हो सके मुकद्दमा का हर एक पहलू देख लेवें ! अगर राजीनामा होवे तो बेहतर है खैर जैसा मुनासिव समझें। शायद दो तीन माह बाहर लग जावें फिर तुम को फरागत (फुर्सत) का वक्त विचार के लिखा जावेगा कि दर्शन देना, वशर्ते कि गैरहाज़री में कोई खास (विशेष) नुक्स (हानि) न वाकय होवे। और अपनी कुशलता का पत्र गाहे बगाहे (कभी-कभी) लिख देना और किसी चीज की खास कोई ज़रूरत नहीं, सब आनन्द है सिर्फ तुम्हारे श्रद्धा भाव की ज़रूरत है। अपने नियम में दृढ़ रहें, अभ्यास से ही मन शान्ति पकड़ता है। जो वक्त जाता है वह फिर हाथ नहीं

आता। इस वास्ते वक्त की कदर करे। सुबह शाम जरूर अपने नियम में स्थित होवें और कोई ताजा अहवाल हो तो लिखना।

स्वास स्वास सिमरन करो सच्चिदानन्द मुरार।

पावें परम आनन्द को बिनसे जम बिकराल॥

सिमरन पूरा जोग है सिमरन पूरा ज्ञान।

सिमरन के परताप से हरे गर्व गुमान॥

जिनाँ राम चितारया सोही पुरख अजीत।

भाव भगत वलधार के त्यागे करम पलीत॥

सब जीवों से हेत रख मन तन से कर सेव।

मारग यह ही ज्ञान का बरनन करें गुरुदेव॥

धन जोबन न स्थिर रहे उठ मारग साचा भाल।

"मंगत" पावें परम पद मारें जम बिकराल॥

११. दुःख महात्माओं को स्वतन्त्र करता है ! -

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र तुमको लिखा गया था भण्डारे की बाबत जो लिखा है कोई फिकर न करें, सब तुम्हारा ही खर्च है। हमसे तुम जुदा (प्रथक) नहीं हो, कुछ दिनों से इबादत (प्राथना) के बाद भण्डारे के मुतालिक (वारे) थोड़ा काम रहता है इस वास्ते जवाब में देरी हुई है। ईश्वर तुमको हर तरह से राहत बखरों और अपनी ज़िन्दगी के उद्धार की खातिर शक्ति देवें ! दुःख महात्माओं को स्वतन्त्र करता है। सुख से आत्म शक्ति नाश हो जाती है। दुःख में दो चीजें हर वक्त

याद रखनी चाहियें। ईश्वर विश्वास दूसरा गुरु उपदेश इससे बड़े-बड़े कष्टों को महात्माजन सहार कर दुनियाँ को जिन्दगी बख्शते हैं। हमारा सत्य आशीर्बाद तुमको आनन्द देवेगा और जो हालात होवे उससे मुतला (सूचित) करे। जब कभी तुम कुरंभ की यात्रा को आवें तो मुतला कर देना। ख्याल है कि भण्डारे के बाद एक दो माह तक किसी तनहा (एकान्त) जगह में इबादत में रहें ! सर्दी अब शुरू हो गई है फिर तुमको प्रोग्राम लिखा जावेगा सब हाल अहवाल से आगाह (सूचित) करें।

सत नाम सिमरन करो समां जात दिन रैन।
जग में अपना न कोई जो मन देवे चैन॥
धन जोबन इसथिर नहीं जावे धूड़ समान।
किसको देख के फूलिया तू मूरख अनजान॥
सत सरूप विसार कर अति भयो सन्ताप।
राग द्वेष की अगिन में जले चित्त दिन रात॥
सत सेवा सत बन्दगी सत नाम का जाप।
जन्म जन्म के दुख मिटे सतगुरु के प्रताप॥
सुरत समाई नाम में सब विखयन को त्याग।
करम जाल संशय गया ब्रह्म लिखया नर ताप॥
आशा तृष्णा न मिटे चित अवगुन भरपूर।
कौन मिटावे जाल को तिरंगुन माया मूर॥
सत विश्वास हिरदे घरे पिये खिमा का नीर।
गुरु प्रसादी परसिया पार गरामी छीर॥

नित सिमरो हरिनाम को आज्ञा मानो नित।
करम जाल संसय गया नि:चल भई विरत ॥
सन्तन का उपदेश यह दृढ़ कर जापो नाम।
"मंगत" उधरा जीव ये सुरत भई निष्काम ॥

१२. धीरता से दुख कर्म भी सुख स्वरूप हो जाते हैं-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला, अहवाल (समाचार) मालूम हुआ ईश्वर तुमको राहत अबदी (परमसुख) देवें, अपनी कुशलता से पता देते रहा करें ! इस जगह अब सर्दी शुरू हो गई है। झगड़े का नतीजा - जिधर रास्ती है उधर शान्ति है। जितनी तकलीफ महात्मा पर होती है उतना ही उनका अहसास (अनुभव) जबरदस्त होता है। प्रारब्ध कर्म अवश्यक भोगने पड़ते हैं। धीरता से दुःख कर्म भी सुख स्वरूप हो जाते हैं। दीगर अंजीर के भेजने की तुम तकलीफ न करें। क्योंकि इस वक्त झगड़ा पड़ा हुआ है। हम तुम्हारे सत् विश्वास पर अति प्रसन्न हैं। ईश्वर तुमको अखण्ड भगत वख्शश करें। हम किसी खास (विशेष) पदार्थ के आदी नहीं है। समयानुसार जो रूखा सूखा होवे वही अमृत है। इस वास्ते तुम्हारी सत् भावना की जरूरत है और किसी चीज़ की जरूरत नहीं जब आनन्द का वक्त आया, तब जैसी तुम्हारी श्रद्धा होवे ऐसा करना। अगर तुम्हारी बहुत श्रद्धा होवे तो एक सेर के करीब रवाना कर देवें। यह ही काफी है। खवाहे डाकखाना की मारफत खवाहे रेल्वे स्टेशन मान- क्याला की मारफत आदमी कोई चला जावेगा। मगर इस बात

को ज़रूर मद्देनजर (ध्यान में) रखें कि चीज़ सिर्फ दर्शन भेंट के मुताबिक मामूली होवे। मामूली सेर भर चीज़ डाकखाने वाले तोल लेते होंगे। जैसे आसानी होवे ऐसा करना। फिलहाल (वर्तमान में) बेहतर यही है कि तुम खास तकलीफ उठाकर कोई तकलीफ न करें, क्योंकि जो सेवा तुम्हारी दरकार (मिलती) होती है, समयानुसार ईश्वर आज्ञा से तुम को लिखी जाती है। इन चीज़ों के भेजने की ज़रूरत नहीं है। अगर ज़रूरत पड़े तो इधर भी काबली अंजीर मिल सकती है। समय का चक्कर मद्देनज़र रखकर इधर चीजों का भेजमा ज़रा बन्द रखें। तुम्हारी सत् भावना से हमारा आशीर्वाद तुम्हारा कल्याण कारक होवे। और कोई ताज़ा अहवाल होवे तो लिखें ईश्वर सत और आनन्द वख्शें-

नाम सिमर सत् नाम सिमर सन्तन किया विचार।
भव जल मारग कठिन है गुरु बचन करे उद्धार॥
गुरु के बचन प्रतीत कर खोजो पद निरवान।
जां मारग को परस के होवे काल की हानि॥
श्वास सुरत सत् शब्द में नित ही करे सुधार।
मन मुखता सकलो मिटी गुरू के शब्द विचार|
जप, तप, संजम साधना सबसे उत्तम नाम।
पल-पल मन चितारिये सुरत पावे बिसराम॥
सकल करम फल छाडिये हरि की इच्छा माहीं।
कारन करता. जान के रहो चरण लौ लाई॥

सहज भाव हरि नाम में सुरती लियो परोऐ।
दुर्लभ जग में जीवना हरी भगत में जीवे जोऐ॥
समां जात है छिन घड़ी उठ चेतियो निरंकार।
" मंगत" मन से मन मिटा साच भगत विचार॥

१३. शरीर मद त्याग कर प्रभू परायन होना ही मानुष जीवन का फल है—

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला, ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। एक-एक करके प्रेमी जी, प्रभू विश्वास को धारण करके नित ही अपने जीवन को पवित्र करते रहें हर वक्त हम को हृदय में देखें ! सब जीवन धर्म से ही सुखदायी होता है इस वास्ते बड़ी से बड़ी कोशिश करके प्रभू विश्वास धारण करें। अपने हर दो बुजुर्गों को आशीर्वाद कहनी अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। १५ दिन तक शायद गंगोठियाँ ठहरेंगे फिर जिधर का हुकम। तमाम संगत को दुबारा आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी शूरवीर होकर अपने पापों का मुकाबला करें ईश्वर को ही सत् सरूप जाने। तमाम शरीर इस का ही प्रकाश देखें। शरीर मद्द त्याग कर प्रभू परायनं होना ही मानुष जीवन का फल है। ईश्वर सत् आनन्द देवे।

१४. अमली जीवन बनाने की तलकीन-

आशीर्वाद पहुँचे पत्र मिला ईश्वर सत् बुद्धि देवे। जिससे अपने जीवन को नेक अमल बनाकर तेरा और धर्म को प्रकाश करे। तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी ईश्वर

सत् सेवा और प्रेम बरुशे। तमाम प्रेमियों को वाजय होवे कि अमली जीवन बनाकर समता के सरूप को प्रगट करें। जिससे सब जनता के अन्दर सही जज्बात (प्रेरणा) पैदा हों। हर दो प्रेमियों की शादी की मुबारिक संगत को होवे और उनके बुजुर्गों को होवे ईश्वर सत् धर्म प्रकाश करे प्रेमो जी नित ही हृदय में हमको देखें। हम ईश्वर आज्ञा से एक जंगल में तप की खातिर आए हैं। और डेढ़ माह तक शायद इस जगह ठहरेगें। अपनी कुशल पत्रिका चिनारी के पते पर लिखते रहा करें ईश्वर बल बुद्धि देवे। प्रेमी साई दास को आशीर्वाद पहुँचे। तमाम संगत को दुवारा आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् धर्म विश्वास देवे।

१५. सत् पुरुषों के आदर्श धारण करने की तलकीन-

आशीर्वाद पहुँचे पत्र मिला ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। प्रेमी साई दास, मुळशीराम और तमाम कुन्बे को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर नित ही सत् धर्म विश्वास देवे। और पवित्र जीवन को बनाने का यत्न करते रहें जिस से सर्व काल मानसिक शान्ति प्राप्त होती रहे। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करे प्रेमीजी हर वक्त सत् पुरुषों के आदर्श को धारण करना चाहिये। इससे ही बुद्धि बलवान होती है। और पाप कर्मों से छूट हासिल करती है। अभ्यास ज़रूर किया करें और सत्संग का भी ख्याल रखें। हर वक्त हमको हृदय में देखें। अपनी कुशल पत्रिका लिखते रहा करें। तमाम कुन्वे को आशीर्वाद कहनी।

१६. (अ) पहले अपनी रहनुमाई करनी फिर दूसरों को कल्याण में यत्न करना-

श्री महाराज जी फ़रमाते हैं कि संसार की गर्दिश (चाल) कोसही विचार करके हर वक्त अपने आपको निर्मल शान्ति के मार्ग पर दृढ़ करना चाहिये और इस नाशवान शरीर की यात्रा में निहायत उच्च कर्तव्य को पालन करके अपने जीवन को प्रकाशमयी बनाना चाहिये यही मानुष जन्म का परम लाभ है। ईश्वर नित्य ही सत् परायणता में दृढ़ विश्वास देवे। जीवन की निर्मल सार यही है। कि समता के सही अनुयायी बनकर अपने आप की पहले रहनुमाई करनी फिर दूसरों की कल्याण में यत्न करना। यह ही उच्च कर्तव्य है ईश्वर ऐसा ही दृढ़ पुरुषार्थ देवे।

(ब) पहले अपनी रहनुमाई फिर दूसरों की कल्याण चाहनी-

श्री गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फ़रमाते हैं। आप स्वीकार करें और घर में सब को आशीर्वाद फरमावें। आपके प्रेम पत्र द्वारा दर्शन हुये थे प्रभु की दया दृष्टि से श्री महाराज जी की सेहत अब करीवन (लगभग) बहुत ठीक हो चुकी है। सिर्फ कमजोरी अभी थोड़ी है। दीन दयाल कृपा करेंगे। आपने जो शुभ प्रण धारण किया है, इसमें प्रभू जी अधिक सहायक होवें। असली जीवन भी यह ही है कि पूरे यत्न से हम को अपना सुधार करना चाहिये। श्री महाराज जी फरमाते है। कि संसार की गरदिश और सही विचार करके हर वक्त अपने आपको निर्मल शान्ति के मार्ग पर दृढ़ करना चाहिये, और

इस नाशवान शरीर की यात्रा में निहायत उच्च कर्तव्य को पालन करके अपने जीवन को प्रकाशमयी बनाना चाहिये। यह मानुष जन्म का परम लाभ है। ईश्वर नित ही सत् परायणता में दृढ़ विश्वास देवें जी। जीवन की निर्मल सार यह है कि समता के सही अनुयायी बनकर अपने आप की पहले रहनुमाई करनी फिर दूसरों के कल्याण में यत्न करना यह ही परम कर्तव्य हैं ईश्वर ऐसा ही दृढ़ पुरुषार्थ देवें ! प्रेम पूर्वक श्री सत् गुरुमुख वाक्यों का विचार करके लाभ उठावें। श्री महाराज जी दुवारा आशीर्वाद फ़रमाते है। स्वीकार करें जी। प्रभु जी नित सहायक और रखियक इस जीवन यात्रा में होवें। ओ३म् ब्रह्म सत्यम्।

१७. सत् परायणता मानसिक शान्ति के देने वाला यथार्थ साधन है-

प्रेम पूर्वक ब्रह्म सत्यम् स्वीकार करें। श्री सत् गुरुदेव जी महाराज आशोर्वाद फरमाते हैं आप सहित परिवार के स्वीकार करें जी। सेवा में श्री मुख वाक्य अमृत लिखे जा रहे है। प्रेम 1 पूर्वक बारम्बार स्वाध्याय करके सत् विचार दृढ़ करें जी। श्री महाराज जी फ़रमाते हैं कि संसार के अस्चरज तुरंग जीवन यात्रा में पलक-पलक विखे नाना प्रकार के भासते हैं और बुद्धि इसमें दृढ़ निश्चित हुई हुई अखण्ड शान्ति की तलाश करती है मगर हरएक वस्तु तवदील होने के कारन बजाये शान्ति के

अशान्ति ही के देने वाली होती है। ऐसा समझना ही परम विवेक है । ऐसा द्वन्द रूपी असगाह सागर संसार से निरबन्धन होने से ही हो सकता है यानी तमाम संसार की गरदिश को केवल प्रभू आधार पर ही देखते हुए अपने आप को सत् परायण दृढ़ करना ही मानसिक शान्ति के देने वाला यथ र्थ साधन है । और तमाम सत् पुरुषों का जीवन आदर्श है। ऐसा निश्चय धारण करके प्रमो अपने आप को कल्याण करते रहें । ईश्वर सुमति देवे श्री महाराज जो दोबारा आशावद फरमाते हैं । स्वा- कार करें । श्रीमान भाई सुखदेव राज जी दीगर सब प्रामयो को आशीर्वाद फरमाना । अपनी कुशलता और हालत से पता देवें । ईश्वर नित रक्षक होवें ।

फिलहाल सत् विश्वास से ही समां काटना चाहिये । आगे जो प्रभू आज्ञा बाकी सब को आशीर्वाद ।

१८. परमार्थ पर गामज़न (अग्रसर) होने की तकलीन-

स्वार्थ और परमार्थ दो रास्ते हैं । एक बन्धन कारी है और एक कल्याणकारी है ।

अगर स्वार्थ में ज्यादा (अधिक) समां खर्च करे खवाहे (चाहे) अपनी मरजी से खवाहे (चाहे) किसी की मजबूरी से तो इसका इलाज क्या हो सकता है ? सिवाय अपनी बद किस्मती के । यह तो तमाम संसार की उलझनों से बड़ी शूर वीरता से कुछ आजादी हासिल करके परमार्थ की तरफ कदम बढ़ाया जा

सकता है। ऐसे दलीलों से समां व्यतीत करके अन्त को पछताना ही पड़ता है अपने हालात को खुद समझें, वक्त निकालकर परमार्थ की तरफ जल्दी-जल्दी कदम उठाना चाहिये ताकि जीवन यात्रा में कुछ कल्याण प्राप्त हो सके। ईश्वर सत् अनुराग देवे।

१६. इस नाशवान् शरीर को सत् कर्तव्य में दृढ़ करने की तलकीन-

प्रेम पूर्वक ब्रह्म सत्यम् स्वीकार करें जो, सुखदेव जी और सब परिवार को आशीर्वाद फरमाव। आपके प्रेमपत्र द्वारा दर्शन हुऐ म्वा में अर्ज यह है कि प्रभु की दयालता से अब श्री महाराज जी की शारीरिक सेहत ठीक हो रही है। आबो हवा (जलवायु) की तबदीली से ही हो जाता है। प्रभु जी नित ही हम सब दासों पर दयालता करें जी श्री महाराज जी की कृपा दृष्टिनित हो बनी रहे। श्री महाराज जी की कृपा दृष्टि से हज रों अन्धमती जीव सत् सिख्या (शिक्षा) द्वारा कृतार्थ हो रहे हैं। इनकी सत सिखा को तन मन से अपना कर हमारी मूढ़ता दूर हो सकती है। श्री मुख वाक अमृत सेवा में लिखे जा रहे हैं। प्रम पूर्वक विचार करके लाभ उठावें। श्री महाराज जी फरमाते हैं कि शरीर रूपी संसारायात्रा में केवल सत् परायणता से ही भयानक विकारों की अग्नि से ठण्डक प्राप्त हो सकती है। इस वास्ते यथार्थ बुद्धि को धारण करके इस नाशवान् शरीर

को सत् कर्तव्य में दृढ़ करना चाहिये यानी अधिक स्वार्थ निश्चय को त्याग कर परमार्थ वादी होकर नाशवान् शारीरिक सुखों में मर्यादा धारण करके अपने आप को नित ही निष्काम सेवा और सत् सिमरन में नि:चल (निश्चल) करना चाहिए। यह ही साधन मानसिक दोषों को नाश करके आत्म साखात- कार (साक्षातकार) शान्ति के देने वाला है। तमाम प्रेमो इस निर्मल विचार द्वारा अपने निश्चय को पवित्र करें और सत् पुरुषार्थ धारण करके इस जीवन का सही लाभ प्राप्त करें ।" ईश्वर सत् अनुराग दृढ़ करें। श्री महाराज जो दोबारा आशीर्वाद फरमाते हैं स्वीकार करें। भाई साहब सुखदेव जी को ब्रह्म सत्यम् दास की अर्ज करना । प्रभु जी नित सहायक होवें ।

२०. संत परायणता में दृढ़ता धारण करने का आदेश-

श्री सत् गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं आप स्वीकार करें जी और घर में सब परिवार को आशीर्वाद फरमावें । आपके प्रेम से तहरीर कर्दा (लिखा हुआ) पत्र द्वारा दर्शन हुए। आपने जो सशय लिखा है उसके जवाब में श्री मुख वाक सेवा में लिखे जा रहे है। प्रेम पूर्वक बारम्बार विचार करके कृतार्थ होवें । श्री महाराज जी फरम ते हैं :-

'कि अहंकार की अधिक दृढ़ता से आम मनुष्य अपना जीवन कत्तव्य केवल भोगमयी बनाकर अति भयानक स्वार्थ की अग्नि में जल रहे हैं और तमाम दुनियाँ में जो परेशानी छाई हुई है

यह महज अहंकार की अधिकता का ही कारण है। इस वास्ते इस अधिक तपिश से बचने का उपाय केवल सत् परायणता की दृढ़ता ही है यानी अपना जीवन प्रकाश जो परम तत्व परमेश्वर है उसका आधार और निर्मल विश्वास धारण करके इस नाशवान् शरीर के मद को त्याग कर केवल अपने जीवन को सत् कर्त्तव्याचारी बनाना और सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग, सत् सिमरन आदि सत् नियमों को पूर्ण निश्चय से पालन करने का सत् यत्न धारण करना ! ऐसे शुद्ध प्रयत्न से ही बुद्धि निर्मल होकर तमाम मलीन वासनाओं पर विजय पाकर सत् शान्ति को प्राप्त हो सकती है। सब प्रेमी इस निर्मल विचार को विचार करके अपनी जीवन उन्नति के मार्ग में दृढ़ होने का यत्न करें। तब ही अधिक स्वार्थ को अग्नि से ठन्डक प्राप्त करके अपना जीवन केवल सत् परायणता में दृढ़ करते हुऐ सही उन्नति परम शान्ति को प्राप्त कर सकेंगे। ईश्वर सत् अनुराग देवे।"

श्री महाराज जी दुबारा आशीर्वाद फरमाते हैं स्वीकार करें। गाहे बगाहे (कभी-कभी) कुशल पत्र द्वारा दर्शन देते रहा करें। श्री महाराज जी को दया दृष्टि नित अंग संग जानें ईश्वर अधिक सत् श्रद्धा और निर्मल भक्ति की दृढ़ता बख्शें। ईश्वर नित सहायक होवें।

२१. प्रभु विश्वासी होने और प्रणधारी बनने की तल्कीन-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिले, ईश्वर सत् विश्वास देवे । तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी । प्रेमी जी जमाने के इन्कलाब से अकसर हालात बिगड़ जाते हैं। इस वास्ते प्रभु विश्वास को दृढ़ रखना चाहिए और अपने आपको प्रणधारी बनाना चाहिए। ईश्वर रखिया करने वाले हैं। हर वक्त प्रभु सत् पहचान की बुद्धि देवें चूंकि अशान्ति का समां है इसलिये ज्यादह विचरना बन्द किया हुआ है । इस वास्ते तुम्हारे गांव के दर्शन नहीं हो सकते । अन करीब (शीघ्र) हो जगाधरी की तरफ जाने वाले हैं। फिर आगे जो प्रभु आज्ञा । अभी सेन्टर (केन्द्र) स्थान का कोई बन्दोबस्त नहीं हुआ । यह संगत का काम है । मगर संगत ही मारी-मारी फिर रही है। जो प्रभु की आज्ञा होगो पत्रिका द्वारा सत् उपदेश का लाभ उठा लिया करें। जगाधरी पहुंच कर पत्रिका लिखी जावेगी । ईश्वर सत् उन्नति के मार्ग में दृढ़ करे, तमाम प्रेमियों को दुबारा आशीर्वाद कहनी हर वक्त हमको हृदय में देखें ।

२२. ईश्वर परायणता की तल्कीन-

आशीर्वाद पहुंचे, ईश्वर आज्ञा में निश्चय रखना चाहिए। यह तमाम दुनिया का चक्कर तबदीली में है । इस वास्ते कभी राहत (सुख) कभी रंज (दुख) हासिल होते रहते हैं । गुणी पुरुषों को हर हालत में ईश्वर की आज्ञा में निश्चय होना

चाहिए तमाम कुनबे को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर शान्ति बख्शें ..और सत् धर्म में निश्चय प्राप्त होवे। हर वक्त ईश्वर परायणता • हासिल करें। इससे चित्त को शान्ति मिलती है। ईश्वर आनन्द देवे।

२३. सत् भावों को दृढ़ता से अपनाने से जीवन यात्रा सफल होती है-

सत् आज्ञा श्री सत् गुरूदेव जी महाराज | श्री सत् गुरूदेव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं। आप सब प्रेमी परिवार सहित स्वीकार करें। आपके प्रेम पत्र द्वारा दर्शन हुऐ, श्री महाराज जी की दया दृष्टि से आपकी शुभ कुशलता चाहता हूँ। दीन दयाल नित ही हम सबको निर्मल कर्तव्य पालन करने की शक्ति बख्शें ताकि नित सत् भावों को दृढ़ करते हुऐ जीवन यात्रा को सफल बना सकें। प्रभु सत् धर्म विश्वास में अधिक दृढ़ता बख्शें।

श्री महाराज जी की दया दृष्टि नित अंग संग जानें। सेवा में अज यह है कि श्री महाराज जी पहली सितम्बर को देहरादून तशरीफ ले जा रहे हैं। १५ रोज वहाँ क्याम फरमा कर (ठहरकर) फिर एक दूसरी जगह चूढ़पुर में पधारेगें, २१ या २२ सितम्बर को जगाधरी स्थान पर पधारेगें।

आप सब प्रेमीयों को दुबारा श्री महाराज जी आशीर्वाद फर माते हैं। स्वीकार करें। दीनदयाल नित हो सत मारग में सहायक होवें। दास की तरफ से संगत को दुबारा ब्रह्म सत्यम् फरमावें।

२४. संसार में ठोकरें लगने से संसार को असार हालत हढ़ होती है-

आपके पत्र द्वारा आपकी मानसिक अशान्ति पता लगी। इतना बेचैन नहीं होना चाहिए। अकसर संमार में रहते हुऐ ठोकरें लगती रहती हैं जो कि सत् मार्ग में दृढ़ करवाती हैं। और संसार की असार हालत दृढ़ होती है। हर वक्त सत् विचारों को ही विचार कर मन को एकाग्रता की तरफ लाया करें। ईश्वर आपको बहुत बहुत गुरु चरणों प्रीति वख्शें। अधिक संगत सेवा द्वारा मानसिक शान्ति प्राप्त कर सकें।

२५. सत् पुरुषार्थ को धारणा से जीवन कल्याणता की प्राप्ति-

श्री सत् गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं, आप स्वीकार करें जी। और सब संगत के प्रेमियों को आशीर्वाद फरमायें। आपके सतसंग के समाचार पत्रों द्वारा दर्शन हुए। ईश्वर हम सबको सत्य पालन करने की शक्ति देवें जी। सत्य द्वारा ही सत्कर्मों की, सत्विचार, सत् निश्चय की सूझ प्राप्त हो सकती है। सत् पुरुषों की अधिक दयालता हम तुच्छ बुद्धि जीवों पर हो रही है। इस भयानक काल में सत् विश्वास की दृढ़ता दृढ़ करवा रहे हैं। इस अति उपकार का क्या इवजाना (बदला) हम अन्ध मति जीव अदा कर सकते हैं जब तक हमारा अमली जीवन नहीं हो सकता न अपना सुधार कर सकते हैं। न और जीवों की सेवा करके लाभ उठा सकते हैं। उपकारी

जीवन बनाने के वास्ते सत्य पुरुषार्थ को धारण करके ही जीवन में कामयाबी को प्राप्त हो सकेंगें। ईश्वर नित ही हमको सुमति दें। श्री महाराज जी की दया दृष्टि नित अंग-संग जानें। आप सबको दुबारा श्री महाराज जी आशीर्वाद फ़रमाते है स्वीकार करें। ईश्वर नित सहायक होवें और निर्मल सूझ देवें।

२६. निर्मल रहनी के वास्ते यत्न धारण करने का आदेश-

श्री सत् गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फ़रमाते हैं आप स्वीकार करें जी। और श्रीमान पूज्यनीय भाई रामलाल जी, मलिक भवानी दास जी, अनन्त राम जी, देवी दित्तामल जो, चौधरी अमीर चन्द जी, सरदार सन्तसिंह जी, दीना नाथ जी, परषोत्तम लाल जी दीगर सब माताओं बहनों को आशीर्वाद फरमावें श्री महाराज जी फरमाते हैं आपके हफ्ता वारी सत्संग समाचार पत्र द्वारा आगाही हुई। प्रभू जी नित हो हम सबको सत् मार्ग में दृढ़ होने की निर्मल बुद्धि देवें। सत्संग में पधारने से ही सत् और असत् का बोध होता है। सत् पुरुषों के महावाक्यों द्वारा ही निर्मल कहनी और करनी वगैरा सत् नियम धारण हो सकते हैं। निर्मल रहनी के वास्ते हम सब को अधिक यत्न करना चाहिए। ताकि जीवन में असली जीवन को प्राप्त हो सकें। श्री महाराज जी की दया दृष्टि हम सब पर हो रही है। ईश्वर हम सब को सुमति देवें और सत् विश्वास की दृढ़ता वशे। श्री महाराज जी दुबारा आप सब संगत को

आशीर्वाद फरमाते हैं स्वीकार करें। दास की तरफ से हाथ जोड़ कर सब संगत को ब्रह्म सत्यम् प्रेम पूर्वक फ़रमाना जी। ईश्वर | इस भयानक काल में हम सबको अपने चरणों का आसरा बख्शें।

२७. सत् नियमों को तन मन से अपनाने से मानसिक तृप्ति प्राप्त होती हैं-

श्री सत् गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं आप स्वीकार करें। घर में बख्शी जी और सबको आशीर्वाद फरमावे जी। आपके प्रेम पत्र द्वारा दर्शन हुए थे। श्रीमान् डाक्टर जी की प्रेम पत्रिका द्वारा आपकी सेहतयाबी का हाल मालूम हुआ। बड़ी खुशी हुई। श्री महाराज की दया दृष्टि से शुभ कुशलता नित ही चाहता हूँ। दीन दयाल ति हो कृपालता करें। तब ही हम अन्धमती जीव सत् भावों में दृढ़ हो सकते हैं। सत् भाव ही कल्याण स्वरूप हैं। सत् नियमों को जब भी तन मन से अपनाने का यत्न करेंगे, मानसिक तृप्ति प्राप्त होवेगी। श्री महाराज जी की आशीर्वाद नित अंग संग जानें। दुबारा आपको श्री महाराज जी अशीर्वाद फ़रमाते हैं। स्वीकार करें। सतसंग में सब संगत को आशीर्वाद फरमावें। ईश्वर नित सहायक होवें।

२८. परमार्थ के अलावा दुनियावी प्रेम भाव भी मिलकर बैठने से होता है। कोशिश भी अधिक लाज़मी है-

सत् आज्ञा श्री सत् गुरुदेव जी महाराज जी। श्री सत्गुरुदेव

जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं, आप स्वीकार करें और घर में सब परिवार को आशीर्वाद फरमायें। आपके प्रेम पत्र द्वारा हालात से आगाही हुई। दीन दयाल जी हम सबको श्री गुरु मुख वाकों में दृढ़ विश्वास बख्शें जी। जिन पवित्र वचनों को धारण करने से ही जीवन यात्रा सफल होती है ईश्वर इनमें अधिक प्रीति देवें जी। भाई जी एकत्र होकर प्रेमियों को लाभ उठाना चाहिए परमार्थ के अलावा दुनियावी प्रेम भाव भी मिलकर बैठने से अधिक होता है कोशिश लाजमी है। आगे जो ईश्वर आज्ञा है। प्रभू जी की कृपा दृष्टि से श्री महाराज जी को सेहत ठीक हो रही है। हम सब पर सदा कृपालता बनी रहे ताकि अमृत वरखा होती रहे। जिसमें सब जीवों का कल्याण है हम सब हर वक्त हर घड़ी सोचते रहते हैं कि अभी सुख मिलेगा, इस बात से चैन आवेगा, वह बात तसल्ली देवेगी। लेकिन आखिरकार अशान्ति के सिवाय कुछ दिखाई नहीं देता। हमारी कमजोरियाँ हमको परेशान ही रखती हैं। सत् पुरुषों के महावाकों द्वारा और उन पर अमल करके ही शान्ति प्राप्त हो सकती है। ईश्वर हम सबको सुमति देवे ताकि इस जीवन यात्रा में ही जीवन सुफल हो। श्री महाराज जी दुबारा आपको आशीर्वाद फरमाते हैं स्वीकार करें। दीगर सत्संग में श्रीमान् परमार्थी जी चौधरी अमीर चन्द जी, शानीलाल जी, सरदार सन्तसिंह जी, दीनानाथ जी, अन्नतराम जी, देवी दित्तामल जी, लखमी चन्द जी व दीगर सब प्रेमियों हाज़िर होने वालों को आशीर्वाद फरमाना जी।

२६. अपनी भलाई का विचार करना परमार्थी जीवों का परम धर्म है—

श्री सत् गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं आप स्वीकार करें। घर में सब परिवार को आशीर्वाद फरमावें। आपके प्रेम पत्रों द्वारा दर्शन हुए। सब हालात से आगाही हुई। अब श्री महाराज जी की आज्ञा से अब डाक कम तहरीर की जाती है। इस वास्ते जवाब देने में देरी हो गई। भाई साहब जी सतसंग में आना-जाना प्रेम से ही हो सकता है। आपका जाना भी तीन माह के बाद हुआ तो दूसरों का भी यह ही हाल है सब कारोबार में मुस्तगरक (लगे हैं) हैं। अपनी भलाई का विचार करना परमार्थी जीवों का परम धर्म है न कि स्वार्थी जीवों का। अपनी तरफ से जो सेवा बन आवे करनी चाहिए किसी पर कोई अहसान नहीं है। ईश्वर हम सबको सुमति देने वाले हैं जिससे अपने नेक व बद को विचार कर सकते हैं। सतसंग में सब प्रेमियों को आशीर्वाद फरमाना जी। श्री महाराज जी फरमाते हैं। इधर अभी हर तरह से शान्ति है। आगे जो ईश्वर आज्ञा। श्री महाराज जी दुबारा आशीर्वाद फरमाते हैं। स्वीकार करें जी।

३०. जीवन धारा में मुनासबत को धारण करने का आदेश-

श्री सत गुरुदेव जी महाराज जी आशीर्वाद फ़रमाते हैं। आप स्वीकार करें और श्रीमान भाई साहब पमार्थी जी, मलिक

भवानी दास जी, सरदार संतसिंह जी, देवी दित्तामल जी, परषोत्तम लाल जी व दीगर सब माताओं बहनों को आशीर्वाद फरमायें। आपके सतसंग समाचार द्वारा आगाही हुई। उम्मीद है पहला पत्र भी आपको मिल गया होगा। ईश्वर हम सब संगत के प्रेमियों को अधिक प्रेम प्रीति सब जीवों के साथ बख्श। ताकि सत् सेवा के साधन द्वारा अपनी सफलता प्राप्त कर सकें। सत प्रण धारण करने द्वारा ही कल्याण होगा जिससे कुटिल भाव दूर होते हैं। सत असत के भावों को समझने के वास्ते प्रभू जी निर्मल बुद्धि देवें जी। श्री मुख वाकों को प्रेम पूर्वक विचार करके सत सोझी प्राप्त हो सकती है। श्री महाराज जी फ़रमाते हैं कि सत् परायणता को छोड़कर केवल असत परायण होना यानी पूर्ण निश्चय से भोगमयी जीवन की ही स्थिति धारण करनी, उसका नतीजा यह हो होता है कि अधिक वासना के जाल को फैलाकर नाना प्रकार के सुख भोग प्राप्त करके भी मानसिक शान्ति प्राप्त नहीं होती जैसा कि आजकल के समय का चक्कर चल रहा है न राजा को शान्ति है न प्रजा को। बल्कि दिन व दिन अपने अधिक लालच के फैलाव में आकर तकरीवन (लगभग) हर एक मानुष एक दूसरे का बाधक हो रहा है। ऐसे भयानक समय को विचार करके गुणी पुरुषों का फर्ज है कि अपने मानसिक भाव को सत परायणता में पूर्ण दृढ़ करने का यत्न करें यानी अपने बड़े हुऐ लालब को त्याग करके जीवन धारा की मुनासवत को धारण करें !

मन वचन और कर्म द्वारा सब जीवों की कल्याण का निश्चय दृढ़ करें। तब ही सत भावना की दृढ़ता से मानसिक शान्ति प्राप्त हो सकती है। जो कि हर एक जीव की अन्दरुनी चाहना है और ऐसा यत्न ही मानुष जीवन का परम कर्तव्य है।

इस अन्धकार के समय में जबकि चारों तरफ अशान्ति हो अशान्ति है सत् पुरुषों का सत् सिखया (शिक्षा) द्वारा ही धीरज और सन्तोष की प्राप्ति सब जीवों को हो सकती है। अगर विचार करके सत् नियम धारण किये जावें। श्री महाराज जी दोबारा आप सब संगत को आशीर्वाद फरमाते हैं। स्वीकार करें जी। ईश्वर नित सहायक होवें जी।

३१. जीवन को कल्याणकारी बनाने की तल्कीन-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिले ईश्वर सत श्रद्धा देवें। तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। हर वक्त अपने जीवन को प्रेममयी बनावें और उच्च से उच्च कारज करने में दृढ़ रहें। ईश्वर नित ही कल्याण कारी भावना बख्शें। तमाम बच्चों को आशीर्वाद कहनी ! भन्जूराम को आशीर्वाद कहनी और सब प्रेमियों को दुबारा आशीर्वाद कहनी। सतसंग, सत सेवा और सत सिमरन में अधिक दृढ़ता धारण करें। प्रेम से सब काम प्रफुल्लित होता है ईश्वर सत बुद्धि देवें।

३२. ईश्वर विश्वास से संकट का समय व्यतीत करें-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला। ईश्वर सत शान्ति देवे। ईश्वर

विश्वास से संकट का समय व्यतीत करें। प्रभू आज्ञा से नतीजा संकट का अच्छा ही होता है। दोरोज़ से श्रीनगर आये हैं। जब भी पेट्रोल खुलेगा तब ही जम्मू की तरफ रवाना हो जायेंगे। आगे जो आज्ञा ईश्वर को। अपने हालात से पता देना। तमाम प्रेमियों को ईश्वर सत शान्ति देवे। हर वक्त हमको हृदय में देखें। ईश्वर सत शान्ति देवे। (श्रीनगर)

३३. गुणी पुरुषों का जीवन-

तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी एक-एक करके। हर वक्त प्रभू परायण होकर संकट का मुकाबिला करें। प्रभु सत शान्ति देवेंगे। प्रेमी मूलराजजों को आशीर्वाद लिखनी। हर वक्त इस नाशवान् संसार की यात्रा में अपने आपको सत परायण बनावें। दुःख सुख प्रभु की इच्छा में देखते हुये धीरजवान (धैर्यवान) रहें यह हो जीवन गुणी पुरुषों का होता है। अभ्यास और सतसंग में अधिक प्रेम रखें। अपना कर्तव्य हो सर्व कल्याण के देने वाला होता है। दुनियाँ का चक्कर अकसर कई प्रकार की तवदोलियाँ (परिवर्तन) दिखलाता है। मगर गुणी पुरुष सब हालात प्रभु आज्ञा में समर्पण करते हुए असंग रहते हैं। यह निश्चय ही सत शान्ति के देने वाला है। सब समय के हालात एक जैसे नहीं रहते हैं। कुछ न कुछ तबदीली बनी रहती है। इसी का नाम दुनियाँ है। ईश्वर सत विश्वास देवे। तमाम प्रेमियों को दुबारा आशीर्वाद कहनी। हर वक्त हमको हृदय मैं देख। अपने आपको निहायत श्रद्धावान् बना कर नाम में

दृढ़ होवें। जिन्दगी की खोज ही असली मोज है। ईश्वर गुरु वचन का विश्वास देवे। ईश्वर नित ही रखियक (रक्षक) होवे और गुरु आशीर्वाद अंग संग जानें। ईश्वर सब जनता में धोरज और धर्म देवे। वचन विचार करें।

बन्धन हरे निज पद लेवे, जो गुरु की सीख विचारे।
परम सखा गुन ज्ञान का दाता, ऐको सत गुरु नित बलिहारे॥
मन की भरमन सब नाश हुई, ज्यू सिखया सार कमाई।
नाम आधार नित जीवन पाया, घट अवगत जोत दरसाई॥
परम ठौर तत आत्म सूझा, सब दुरमति छाया नासी।
"मंगत" कृपा परम पुरुष से, सब भरमन मिटी चौरासी॥

३४. प्रभू के अटल विश्वासी होने की तल्कीन-

ईश्वर सत् परायणता बरुशे। तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर समता बुद्धि देवे। प्रेमी जी हर वक्त प्रभु के अटल विश्वासी होकर इस संसार की यात्रा को अबूर (पार) पावे। यह संसार परम दुख का स्वरूप है। जो जाहिर में सुख दिखला रहा है। मासवाय तत्व स्वरूप के वोध के कभी भी निमल शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती है। इस वास्ते सही पुरुषार्थ द्वारा समता के मार्ग में अपने आप को निश्चित करें। इसीम परम कल्याण है। तमाम प्रेमियों को एक- एक क के दुबारा आशावदि कहना। ईश्वर सत् विश्वास देवें। प्रेमी जो जो कुछ सार उपदेश तुम सुना है वह ही गृह्य ज्ञान

है। हर वक्त इसको हृदय में अपनावें। और जीवन यात्रा को सफल करें। ईश्वर सत् विश्वास देवें। ईश्वर इच्छा से अन- करीव ही तप के वास्ते किसी एकान्त जगह चले जावेंगे ताकि तमाम जनता में सत्य शान्ति प्रकाश होवे। ईश्वर निर्मल त्याग और प्रेम भाव बख्शें।

३५. जमाने की गर्दिश सबक आमोज़ होती है-

ईश्वर सत् बुद्धि देवे। तमाम संगत काहनुवान को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर इस भयानक समय में धीरज और धर्म विश्वास देवें। प्रेमी जो पाकिस्तानी इलाके में हिन्दुओं की तबाई हो रही है। काफी से ज्यादा कत्ल हो रहे है और कुछ रिलीफ केम्पों में मौजूद हैं। आगे निकास का जब जरिया मिले तब ही हिन्दुस्तान की तरफ चले जायेंगे। यानि बिलकुल नाम मात्र तक हिन्दु पाकिस्तान में नहीं रह सकेगा। उधर भी ऐसा सुनने में आया है कि मुसलमानों ने हिजरत करके पाकिस्तान में आना कबूल कर लिया है। ईश्वर इच्छा अजब रंग लायी है। रावलपिण्डी के के तमाम हिन्दु रिलीफ केम्पों में हैं। और स्पेशल ट्रेन के जरिए हिन्दुस्तान की तरफ जा रहे हैं। अमोलक राम वगैरा जेहलम रिलीफ केम्प में हैं आगे जाने की इन्तजार में है। सब माल व सामान उनका लूटा गया है, समता का तमाम लिट्रेचर (साहित्य) भी खत्म हो चुका है। लाहौर के प्रेमियों का कोई

पता नहीं है। ईश्वर की ही सहायता चाहिए। चूँकि रियासत से कोई भी हिन्दु पाकिस्तानी इलाके में नहीं जा सकता है। अगर कोई जाता है तो मारा जाता है। इस वजह से वापसी श्रीनगर व जम्मू के रास्ते ही हिन्दुस्तानी पंजाब की तरफ आवेंगे। बाद में शायद देहली व हिन्दुस्तान की तरफ चले जावेंगे। तमाम हिन्दुओं की जायदादों पर कब्जा हो चुका है। वैसे ही गंगोठियां का हालात जानें। दो माह से उधर से कोई पत्रका नहीं आई है। शायद वह लोग केम्पों में चले गये हैं। या जैसे प्रभु आज्ञा। प्रेमी जी सेन्टर स्थान के बारे में तुमनें अपने जज्बात पेश किये हैं। अभी कुछ विचार इसके मुतालिक नहीं हो सकता है। संसार के इस दौर में तमाम प्रेमी दरवदर हो गये हैं। जब कभी सम आया तो देखा जावेगा। यह संगत का काम है। फकीरों को कोई इन मामलों से मतलब नहीं है। कुछ समाँ शारीरिक यात्रा खत्म हो चुकी है और कुछ हो जावेगी। ऐसा ही काल चक्र स्वरूप ये दुनियाँ है। न कोई स्थिर रहेगा, न कोई रहा है। जब कभी संगत की मजबूरी हुई तो देखा जावेगी। अभी तो सब नजाम (प्रबन्ध) दरहम बरहम (अस्त-व्यस्त हो चुका है। ईश्वर इच्छा से जल्दी ही रियासत से फारिग होकर उधर पंजाब की तरफ बज़रिये कठुवा आवेंगे। अगर किसी अनुकूल जगह उधर कुछ समय ठहरे तो आकर दर्शन दे जाना। इत्तला दी जावेगी। यानी माह कार्तिक तक उस इलाके में प्रभु आशा से आना होवेगा। इस जगह १२

असूज को कल यज्ञ हैं फिर जल्दी ही श्रीनगर जायेंगे फिर उधर से जल्दी जम्मू को आवेंगे। आगे जैसी प्रभु आज्ञा। शायद तमाम हिन्दुस्तान की यात्रा के वास्ते प्रोग्राम बन जावे और जल्दी ही आगे देहली वगैरा की तरफ चले जावेंगे। इस वास्ते पत्रका द्वारा सत् विचार का लाभ उठाते रहा करें। प्रेमी राम जी दास कहाँ है ? उसका भाई किधर है ? आशीर्वाद कहनी। अगर उसको फुरसत हुई तो जम्मू आने पर दर्शन दे सकता है। उसकी पत्रका आने पर प्रोग्राम लिखा जावेगा। प्रेमियों को दुवारा आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् श्रद्धा और सत् सेवा का भाव बख्शें। हमेशा जमाने की गर्दिश काफी सबक देने वाली होती है। सबको ईश्वर चित्त आवें।

नोट- सिर्फ इशारा किया गया था। सेन्ट्रल स्थान के मुतालिक अभी कोई फैसला नहीं हो सकता है

३६. परम शान्ति देने वाला बोध-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला, ईश्वर सत बुद्धि देवे। प्रेमी जी, इस संसार में हर एक जीव अपनी बुद्धि अनुसार विचर रहा है। कोई संसार में फैलाव फैलाकर असली खुशी चाहता है। कोई खास शुद्ध विचार वाला ही त्याग के मार्ग को समझकर असली निर्वाण शान्ति को प्राप्त होता है। इस वास्ते इस जिन्दगी के भेद को सही समझना ही कठिन है। फिर अमल करना उससे भी कठिन है। जब सही मायनों में आत्म विश्वास को जो प्राप्त

होता है तब ही परम शान्ति को समझ सकता है। हर वक्त सत्य की खोज करनी और दुनियाँ की तबदीली को दृढ़ निश्चय से जानना ही परम शान्ति के देने वाला बोध है। ईश्वर ऐसा निर्मल विश्वास देवे ताकि अपनी जिंदगी को सही समझ सकें और बना सकें। अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। हर वक्त गुरु बचन विश्वास दृढ़ करें इस में परम कल्याण है।

३७. मानसिक कमजोरियाँ मन को ईश्वर भक्ति में लगाने से दूर होती हैं-

पत्र मिला, ईश्वर सत विश्वास देवे। माताजी को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी, जिस तरह प्रभु आज्ञा हो रही है उसी तरह अपने आप को दृढ़ करें। ज्यादा से ज्यादा ईश्वर भक्ति में अपने मन को लगाये रखें। तब ही मानसिक कमजोरियाँ रफा (दूर) होंगी। ईश्वर ऐसा समय ले आवे तुम्हारी श्रद्धा अनुकूल तुम को सेवा का मौका (अवसर) मिले। इस जगह जो तुम पहले ही आ गये थे और वह जगह कुछ अनुकूल न थी। इसलिये तुम को वापिस हो जाना पड़ा। साथ हो तुम्हारे जाने के दूसरे दिन ही तुम्हारी माता की बड़ी तंगी की पत्रका आई। लिखने वाले ने अजब भाव से लिखी गुरु को बताया गया। खेर जी प्रभु इच्छा। तुम उनके चरणों में पहुँच गये हो। अच्छी तरह से सेवा किया करें। जैसा चक्कर चलता है उसके मुताबिक ही हालात बनाने पड़ते है मगर अन्तर से दृढ़ प्रभु परायण होना चाहिये। आगे वह दीनदयाल खुद रखियक है। एक खि

लाल को लिखी गई थी मगर जवाब नहीं आया। अपनी वापसी कुशल पत्रका लिखते रहा करें और समता मार्ग के रोशन चिराग बनें। ग्र'थ जिल्दबन्दी होकर आ गया है और दुरस्ती भी हो गई है। ईश्वर अब ग्रंथ की छपवाई की शक्ति प्रेमियों को देवे ताकि जनता के सामने कल्याण कारी सागर आ जावे और जमाने की अग्नि से बचाव होवे। सच्चे धर्म की कुरबानी (बलिदान) के वास्ते जीवन बनावें। प्रभु नित सहायक होवें।

३८. जीवन को आत्ममयी बनाने की शिक्षा-

पत्र मिला, ईश्वर सत श्रद्धा देवें। प्रेमी सुख दयाल व दीगर सब संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् धर्म विश्वास देवं। चूंकि हालात जुमाना नादुरुस्त (ठीक नहीं) हैं। इस वास्ते ज्यादा अरसा सेवा में किसी प्रेमी को नहीं दिया जाता है। कोई ऐसी जगह और समां अनुकूल जब देखा तो तुमको दो तीन माह तक सेवा में समय दिया जावेगा। बाकी अब इधर तुम्हारा आना कुछ लाभ दायक नहीं है। उधर तुम्हारी माता की बेजारी और दूसरा सफर का खर्च होगा। इस वास्ते उसी जगह अपने जीवन को आत्ममयी बनावें। जब समय आया तो शायद गंगोठियाँ में ही हाजिर होकर सतसंग से लाभ उठाना। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। अगर तुम खुद स्वतन्त्र वाफरागत हो तो हर जगह थोड़ा-थोड़ा सम ले सकते हो और ऐसा जीवन उद्धार कर सकते हो। मगर अभी इस काबिल नहीं। हो इस वास्ते जितना अनुकूल समय तुम्हारे वास्ते १० या २०

दिन का होता है वह भी कभी मिल ही जाता है। और आइन्दा भी मिल जावेगा। इस वास्ते जिस जगह भी हो एक नाम का निदिध्यासन करें और प्रभु इच्छा में अपने आप को अपर्ण करें। तव अहंकार की मैल इससे दूर होकर आत्म शान्ति देवेगी और अखण्ड नाद में स्थिति हासिल होवेगी। ईश्वर सत् पुरुषार्थ देवे। तमाम हालात के मुताबिक अभी इधर आने की कोशिश न करनी। जब मौका हुआ तो पता दिया जावेगा।

३६. समता योग आश्रम जगाधरी एक बड़ा तीर्थ स्थान है—

श्री महाराज जी फरमाते हैं पत्र मिला, हालात मालूम हुऐ। प्रेमी जी जगाधरी के प्रोग्राम के मुतालिक और सतसंग सम्मेलन के मुतालिक जो विचार हैं प्रभु आज्ञा से अभी कुछ फैसला नहीं हो सकता मालुम होता है। गो तुमने अपनी सत श्रद्धा अधिक जाहिर की है मगर सम्मेलन के मुतालिक तुमको बिल्कुल नावाकफी है कि ऐसे महाकारज में कितनी कुरबानी दरकार हो सकती है। और प्रभु तुम पर कितनी कृपा दृष्टि करते हैं। साधारण हालात में जगाधरी आना तो किसी को भी कोई खास तखलीफ का बायस नहीं हो सकता है आगे तो अक्सर कुछ समय तुम्हारे बाग में ठहरे ही रहे हैं। अब हालात जो आश्रम सम्मेलन वगैरा का आरम्भ कर रहे हैं इसमें ठोस कुरवानी वाला प्रेमी नज़र नहीं आता है। और न ही जगाधरी में हाजिर होकर आम सतसंग सम्मेलन का प्रबन्ध कर सकते हैं। अब

चूंकि आश्रम की स्थिति हो चुकी है इस वास्ते हमारी हाज़िरी खास प्रभु प्रेरणा से ही हो सकती है। प्रेमी लोग खुद ही एक महदूद सतसंग कायम कर लेवें। इसमें किसी को कोई खास बोझ भी न होगा। और अहिस्ता-आहिस्ता सब हालात आइन्दा ठीक हो जावेगें तुम्हारी कुरबानी से ही यह जगह कायम हुई। है। प्रभु जी अधिक श्रद्धा देवें। और संगत के साथ प्रेम संजुगत होकर आइन्दा ऐसे स्थान की उन्नति करें। यह एक खास कर्त्तव्य तुम और तुम्हारे खानदान को रोशन करने वाला होगा यह निश्चय कर लेवें। तुम्हारे विशाल भाग से ऐसा कर्त्तव्य करने का तुमको प्रभु इच्छा से मौका मिल गया है और घर में ही तुमको संगत सेवा का अवसर प्राप्त हुआ है। यह तुम्हारा एक तीर्थ स्थान हमेशा के वास्ते बन गया है प्रभु जी सत् श्रद्धा देवें। प्रेमी जी वैसे किसी वक्त आजाद रूप में अगर प्रभु आज्ञा हुई तो शायद जगाधरी में कुछ दिनों के वास्ते आना हो जावे। मगर सम्मेलन और आम सतसंग की पाबन्दी में उधर आना प्रभु आज्ञा से कठिन ही मालूम हो रहा है। तुनको निराश नहीं होना चाहिए। सत् पुरुषों का दर्शन जिस जगह भी व स्थित हो वहाँ कर सकते हैं। प्रेमी जी संगत का काम है। वह संगत ने खुद ही करना है। सत पुरुष उसकी जिम्मे वारी नहीं उठा सकते हैं। और सत पुरुषों को जो प्रभु आज्ञा हुई वह विचार प्रेमियों के आगे पेश कर दिये हैं। आगे इस पर कोई अमल करे या न करें इनको

कोई मजबूरी नहीं है अब जीवन यात्रा का केवल समाँ ही व्यतीत करना है। जिस किसी जगह व्यतीत हो जावे अभी तो खास शारीरिक अवस्था भी ठीक नहीं है। इस वास्ते किसी एकान्त जगह ही आइन्दा शुरु सर्दियों में जाना होवेगा। आगे जो प्रभु आज्ञा। ईश्वर सत श्रद्धा देवें। ईश्वर नित सहायक होवें।

४०. फकीरी या गृहस्त आश्रम में दाखिल होना अपने दिल की ताकत पर मुनहसर है-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला ईश्वर सत श्रद्धा देवें। संगत को आशीर्वाद कहनी। हर वक्त प्रभु चरणों की प्रीति प्राप्त होवे। प्रेमी जी, फकीरी या गृहस्त आश्रम में दाखिल होना अपने दिल की ताकत पर मुनहसर है। चूँकि आज कल के फकीर गृहस्तियों से बढ़ कर विकारी हैं इस वास्ते ऐसी हालत से बेहतर है कि गृहस्ती होकर सत धर्म का पालन करे। अगर चित में प्रभु चरण की प्रीत होवे तो गृहस्त आश्रम में जल्दी कामयावी हो सकती है। यह तुम खुद विचार कर लेवें। अपनी जिन्दगी को को एक नमूना बनावें ना कि नाकारा होकर अपने आप को तबाह कर लेवें ईश्वर निर्मल बुद्धि देवे। तमाम प्रेमियों को दुवारा आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत चिन्तन देवे।

४१. सत कर्तव्य पालन की तल्कीन-

ईश्वर सत बुद्धि देवे प्रेमी जी हर वक्त अपने आहार,

व्यवहार और संगत की पवित्रता रखें। इससे जीवन उन्नति करता है। और अभ्यास भी ज़रूरी किया करें। ईश्वर सत विश्वास देवे | असली खुशी आत्म परायण होने से है। यानी अपनी खुदी को अबूर करके हर वक्त निर्माण भाव से सर्व हितकरी होकर जीवन को व्यतीत करना। हर वक्त सत श्रद्धा से अपनी शरीरिक अन्तिम दिशा को विचार करते हुये नित्य सत कर्तव्य का पालन करना चाहिये। बाहोश होकर संसार के सही नतीजे को समझते हुये समता के असूलों को दृढ़ करें। दीन व दुनियाँ के वास्ते अपनी जिन्दगी रोशनी वाली बनावें। ईश्वर सत अनुराग देवे। तमाम सदाचारी गुरु मुखों को आशीर्वाद कहनी हर वक्त हमको हृदय में देखें।

४२. समता के असूलों से पतित और गुरु दरबार से जी चुराने पर चेतावनी-

आशीर्वाद पहुँचे। अच्छी तरह इन विचारों पर गौर करें।

(१) आकवत को भूल कर किस जादूगरी में जा रहे हैं।

(२) नाशवान् शरीर के मोहवश होकर के जिन्दगी की तहकीकात में क्यों कायर बन रहे हैं।

(३) सच्चे मित्र और सच्चे मुहाफिज गुरु के बचनों का उल्लघन करके किस कुसंग में अपनी रूहानी नाश की खरीद कर रहे हैं।

(४) किस गलत निश्चय को दिल में दृढ़ कर लिया है कि साथ

में अपनी इच्छाओं को मित्र और प्रभु आज्ञा पर निश्चय यह दोनों हालतें नामुमकिन (असम्भव) है । जब प्रभु आज्ञा पर निश्चय आया तो अपनी तमाम कामनाऐं खत्म हुई । जब अपने अन्दर कामनऐं मौजूद हैं तो प्रभु आज्ञा का निश्चय महज नास्तिकपन और दम्भ है इस हालत से जागृत होने की कोशिश करें।

५) अपनी गलतियों के ज़ेर असर (प्रभावित) होकर गुरु दरबार से जी मत चुरावें । आखिर सब को कल्याण गुरु कृपा और सत श्रद्धा से ही हुई है और होगी। अपने आप में बाहोश होकर कल्याण के सही रास्ते पर चलने की कोशिश करें क्योंकि शरीर यात्रा नाश की तरफ दौड़ रही है ।

एक खास प्रेमी होने के कारण यह थोड़ी सी चेतावनी तुमको दी गई है। कि शायद तुम्हारे देव-संस्कार जागृत होकर के तुम्हारे जीवन के सही रखियक बन सकें और गुरु- वाक्य को अपनाते हुऐ सही जिन्दगी को हासिल कर सकें। ईश्वर सत बुद्धि देवे ।

४३. अपना सत् विश्वास ही कल्याण की कुंजी है-

पत्र मिला, ईश्वर सत विश्वास देवे। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी, तमाम संगत को आशीर्वाद पहुंचे। ईश्वर नित ही सत धर्म में दृढ़ता देवें। प्रेमीजी देहली का प्रोग्राम अभी

मुश्किल है और न ही कुछ जमाने के हालात मुताबिक ज्यादा सत्संग प्रचार में समां दिया जाता है इस वास्ते ज्यादा एकान्त तप ध्यान में ही समय गुजारना कुछ जमाने के हालात मुताबिक गुणकारी है। जो कुछ सत विचार जिन्दगी के बनाने वाले हैं। वह सब पुस्तकों की सूरत में आ चुके हैं और ज्यादा क्या सत्संग का प्रोग्राम हो सकता है। अब तो सिर्फ जो कोई जिज्ञासु प्रेमी होवे। वह इन विचारों द्वारा अपनी उन्नति करे और फकीरों के पास तो सिर्फ श्रद्धा के मुताबिक आशीर्वाद ही है। सो जो गुणी होगा वह अपने सत विश्वास से जरूरी कल्याण को प्राप्त होवेगा। पत्रका द्वारा दर्शन दे दिया करें। ईश्वर आज्ञा से शायद इस जगह से नीचे उतरकर किसी एकान्त में ही चले जावें अभी खास प्रोग्राम का फैसला नहीं हुआ है। निस्फ (आधे) सितम्बर तक प्रभु इच्छानुसार विचार होवेगा। आगे जो आज्ञा दीन दयाल की। ईश्वर परायणता में दृढ़ विश्वास धारण करें इस जीवन का असली मकसद (ध्येय) यह ही है। शारीरिक अवस्था जो गुज़री सो गुज़र गई। अब आगे की दुरस्ती करें प्रभु नित ही सत अनुराग देवे ताकि जीवन यात्रा में सत शान्ति प्राप्त कर सकें।

४४. मानसिक दोषों से निवृति-

श्री महाराज जी फ़रमाते हैं कि इतने समय नजदीक रहते हुये फिर तुम बचपन वाले विचार लिखते हैं। प्रेमी जी,

गर्ज और फर्ज के मसले (विषय) को समझें। और फर्ज अदायगी में (कर्तव्य परायणता) शूर वीरता धारण करें। यह खाकी जिस्म देश और जनता की सेवा के वास्ते समझें और अभ्यास में समय निर्मल प्रेम से दिया करें। तब मानसिक दोष विनाश को प्राप्त होगें ईश्वर सत अनुराग देवे। देहरादून के प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी और जो सेवा का कारज शुरु किया हुआ है। वह अच्छी तरह से सरअन्जाम (पूर्ण) होता जा रहा होगा। सत्संग के हालात से मुतला (सूचित) करते रहा करें। ग्रन्थ के मुतालिक (बारे में) भी छपवाने का बन्दोबस्त (प्रबन्ध) कर लिया होगा। ईश्वर सत अनुराग देवे।

४५. निर्मोह होने की तल्कीन-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत धर्म प्रतीत देवे। जैसी भन्जूराम की मर्जी होवे वैसा ही करें वह खुद जुम्मेवार हैं तुम को किस वास्ते चिन्ता लगी हुई है। जरा अपने आप को निर्मोह बनावें। तुम कोई सब के सुखदाता नहीं हैं। ईश्वर आज्ञा में दृढ़ रहा करें और फर्ज को सरअन्जाम दिया करें। ज्यादा मोह में न गिरफ्तार हुआ करें। हर एक जीव अपने कर्म चक्कर भोगता है। ईश्वर सत अनुराग देवे अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। ईश्वर सत शान्ति देवे। तमाम संगत को दुबारा आशीर्वाद कहनी।

४६. वास्तविक शान्ति का निश्चय !-

आज्ञाकारी सती सेवक, आशीर्वाद पहुंचे, पत्र मिला, ईश्वर सत सन्तोष देवे । तमाम खवंश (सम्बन्धियों) को आशीर्वाद कहनी । हर वक्त जीवन की यात्रा को सत मार्ग में दृढ़ करें। संसार का चक्कर इसी तरह चलता रहता है इस वास्ते सत परायण होकर असंग भाव में सत कर्तव्य को करते जावें । जो कुछ हुआ है या होगा सब प्रभु इच्छा में देखें यह ही निश्चय असली शान्ति का है ईश्वर दृढ़ विश्वास देवे अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें।

४७. सत व्रत का पालन-

आशीर्वाद पहुंचे ! पत्र मिले, ईश्वर सत बुद्धि देवे, तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी । ईश्वर सत विश्वास देवे । हर वक्त सत् नाम को पान करने का यत्न करें और तमाम करम प्रभु आज्ञा में देखें ऐसे सत व्रत को पालन करते-करते मानसिक दोष दूर हो जाते हैं और सत शान्ति अखण्ड शब्द अन्तर्गत में अनुभव होता है । हर वक्त ऐसी ही धारणा चाहिये । जिन्दगी को सही मार्ग में दृढ़ करना ही शूरवीरता है ईश्वर सत अनुराग देवे । हर वक्त हमको हृदय में देखें । ईश्वर नित ही सत जीवन प्रतीत देवे, अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें।

४८. निरबन्ध जीवन की तल्कीन (शिक्षा)-

आशीर्वाद पहुंचे, पत्र मिला, ईश्वर सत धर्म विश्वास देवे,

तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सर्व में एकता प्रेम देवे। देहली के प्रोग्राम के बारे में ईश्वर इच्छा अभी नहीं थी। इसमें किसी की कोई गलती नहीं है। ना ही इधर से कोई नाराजगी है। तुम बिल्कुल बेफिक्र रहें और सत नाम परायणता में दृढ़ता धारण करें। तमाम संगत को दुबारा आशीर्वाद कहनी। हर वक्त सत विश्वास, सत सिमरण और सत सेवा सहित अपने जीवन को निर्बन्ध करें ! ईश्वर सत् स्वरूप में नि:हचलता देवे। समता के लिट्रेचर (साहित्य) का स्वाध्याय किया करें और अपने विचारों को विशाल बनावें। ज्यादा से ज्यादा समता की रोशनी हासिल करें जोकि इस वक्त अधिक लाजमी है। तमाम प्रेमियों में अति पवित्र भावना प्राप्त होवे। अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। ईश्वर सत गुरुबचन विश्वास देवे।

४६. सही जीवन उन्नति का आदेश-

आशीर्वाद पहुंचे पत्र मिला, ईश्वर सत बुद्धि देवे, तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत उद्धार की शक्ति देवे। प्रभु आज्ञा को दृढ़ निश्चय से अपनायें और खुशी व गमी के तवाजन को बराबर जानें। तब ही जिन्दगी के असली भेद को पायेंगे। दीगर जो प्रश्न लिखे हैं उनका तहरीर (लिखित) द्वारा उत्तर नहीं मिल सकता। यह बच्चों का खेल नहीं है। जब कभी हाज़िर दर्शन करें। तब मुनासिव हालात का विचार कर लेना।

तुम अपनी अवस्था के मुताबिक मुतालया किया करें। जिन- जिन असूलों से मानसिक शान्ति प्राप्त होती है उनको धारणा में लावें। और अपनी उन्नति करें। यह जो सिद्ध अवस्था के शब्द हैं अभी तुम्हारे समझने में नहीं आ सकेंगे। इस वास्ते समाँ ज्यादा ईश्वर भक्ति और सेवा के असूलों को ग्रहण करने में खर्च करें जिससे सही उन्नति प्राप्त होवे। बार-बार स्वाध्याय में वाणी का गौर करें और फिर अमली जीवन बनायें। तब हो असली सार प्राप्त होवेगी। वाणी का मुतालय इस वक्त तुमको वह ही गुणकारी है जिसमें वैराग, भक्ति, सेवा, सत् विश्वास, और उच्च आचरण का प्रसंग आया होवे। जिससे तुम खुद समझ कर अपने आपके बोधक हो सकें। निहायत प्रयत्न करते हुए अपनी ख्वाहिशों का दमन करें और प्रभु विश्वासी होकर प्रभु इच्छा को मन में दृढ़ करें। तब ही इस भयानक अन्धकार कर्म जाल से मुखलसी हासिल करके सत आनन्द आत्मा को अनुभव कर सकोगे। ईश्वर नित ही गुरु-वचन विश्वास और सत परायणता बख्शे, ताकि अपनी सही उन्नति कर सकें। तमाम प्रेमियों को दुबारा आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत अनुराग देवे।

५०. संसार यात्रा का मकसद (ध्येय)-

आशीर्वाद पहुंचे, पत्र मिला, आगे प्रेमी जी पत्र लिखा गया है तुम अपनो सत श्रद्धा द्वारा हर वक्त हमको हृदय में रखें। नित हो जीवन आला पवित्र बनावें। यह संसार बड़ा कठिन

है। अन्तर हृदय से प्रभु परायण होकर अपना जीवन निहायत शुद्ध स्वरूप वाला बनावें। इस दुनिया में आना जीव का वास्तव में सत स्वरूप अविनाशी परमेश्वर का अनुभव करने का मक सद है मगर शारीरिक विकारों में भूलकर हर एक जीव दुःखी हो रहा है। अब प्रेमी जी अपनी जिन्दगी के सही कर्तव्य को पालन करने का पुरुषार्थ करें। यानी मानसिक शान्ति की प्राप्ति करें। नित्य ही मन में नाम स्मरण का भाव बनाये रखें तमाम विकारों से अपने आपको पवित्र करें और नित ही सत पुरुषों के जीवन आदर्श को विचार करते हुये अपनी कल्याण करें। यह ही गुरू का आशीर्वाद है. प्रभु सहायक होवें। अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। अधिक तुम्हारी जिन्दगी प्रेममयी, धर्म- मयी और कल्याण स्वरूप वाली चाहते हैं। प्रभु नित ही तुमको सत आचरण प्रबलता देवें ! हर वक्त हमको हृदय में देखें ! समता का तमाम लिट्रेचर मुतालय करें। इससे ज्यादा दृढ़ता प्राप्त होवेगी। अभ्यास का तो जीवन ही बनावें। तब ही असली खुशी जो त्रिकाल पूर्ण है हासिल कर सकोगे। ईश्वर गुरू भक्ति और सत् अनुराग देवें। ऐसी जिन्दगी बनाओ जो सर्वानन्द स्वरूप होवे। प्रभु सत् परतीत देवें।

५१. मानुष जिन्दगी का रोशन पहलू-

आशीर्वाद पहुंचे, पत्र मिला, ईश्वर सत् शान्ति देवे। जिन्दगी के अन्जाम को देखकर हर वक्त स्वरूप बोध का यत्न करें। अपनी तमाम मजबूरियों पर प्रभु विश्वास के बल से

अबूर पावें। इस जिन्दगी का मकसद ये ही है। जितने भी लवाजमाते जिन्दगी हैं वह असली शान्ति की प्राप्ति में बड़ी रुकावट हैं। इस वास्ते सादगी आदि नियमों को अपनायें और अपने आपको प्रभु भक्ति में सावधान करें। ये ही मानुष जिन्दगी का रोशन पहलू है और जीव के निरबन्धन होने का यत्न है। ईश्वर सत अनुराग देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। हर वक्त गुरु विश्वास प्राप्त होवे।

५२. गुरुमुख का धर्म-

आशीर्वाद पहुंचे, तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी निहायत साबत कदम और मुकम्मिल प्रेम से परमार्थ मार्ग में चलना हो सकता है। अपनी जिन्दगी को खाक से भी अदना (मिट्टी से भी हीन) जान कर सत परायण होने का यत्न करें। यह हो सत पुरुषों का तज जिन्दगी होता आया है। ईश्वर बल बुद्धि देवे। तमाम प्रेमियों को दुवारा आशीर्वाद कहनी। जुमाने की बिगड़ी हुई फितरत से मुकाविला करके अपने आपको वाअमल बनावें। यह ही कोशिश राहते अबदी के देने वाली है। ईश्वर सत विश्वास देवे। अपने शौक को जीवन की बेस- बाती में गर्क करके निर्भय जीवन हासिल करना ही किसी गुरुमुख का धर्म है। ईश्वर अधिक प्रण देवे।

५३. जीवन की निर्मल सार-

श्री महाराज जी फ़रमाते हैं कि संसार की गरदिश को सही

विचार करके हर वक्त अपने आपको निर्मल शान्ति के मार्ग पर दृढ़ करना चाहिये और इस नाशवान् शरीर की यात्रा में निहायत उच्च कर्त्तव्य को पालन करके अपने जीवन को प्रकाश-यी बनाना चाहिये। यह ही मानुष जन्म का परम लाभ है। ईश्वर नित ही सत परायणता में दृढ़ विश्वास देवे। जीवन की निर्मल सार ये ही है कि समता के सही अनुयायी बनकर अपने आपकी पहले रहनुमाई करनी फिर दूसरे के कल्याण में यत्न करना, यह ही परम कर्त्तव्य है। ईश्वर ऐसा ही दृढ़ पुरुषार्थ देवे।

५४. जीवन सफलता का राज (भेद)

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला, ईश्वर सत अनुराग देवें। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर नित मानसिक रक्षक भाव की दृढ़ता बख्शें। प्र ेमी जी इस मिथ्या संसार की यात्रा को नित ही सत परायणता के निश्चय से अबूर करें और असंग बुद्धि को प्राप्त करें। तब ही जीवन सफल हो सकता है। अनन भाव से एक नाम का विश्वासी और अभ्यासी होना ही ऐसे परम कल्याण-बोध के देने वाला है। ईश्वर तुमको सत नाम की दृढ़ स्मिरत प्राप्त करने का अधिक पुरुषार्थ बख्शें। छपाई का काम तुम्हारी सरपरस्ती में निर्मल रीति से चलता होगा। ईश्वर कृपा से तुमको कारण सरअन्जाम देने की शक्ति प्राप्त होवे। ईश्वर नित आनन्द देवे।

५५. सत परायणता का आदेश-

आशीर्वाद पहुँचे ईश्वर सत बुद्धि देवे। जिन्दगी को हर वक्त गैर तसल्ली बख्श समझते हुए सत परायण होने का यत्न करें। प्रभु नित सहायक होवें तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी।

५६. बटवारे के समय निश्चय दृढ़ रखने की तलकीन !

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला ईश्वर सतबुद्धि देवे, तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर इस भयानक समय में सत शान्ति देवें। प्रमीजी रुपये वगैरह के मुतल्लिक हमको कुछ इल्म (ज्ञान) नहीं है। यह संगत का अपना विचार है जैसा मुनासिब समझें वैसा ही करें, यह विचार जरूरी होना चाहिये कि ऐसे मौके में इधर-उधर दौड़ने से अक्सर तकलीफ ही होती है। जब फैसला कतई पाकिस्तानी हालात सुन लिया तब जिधर - जिधर किसीका आबोदाना (अन्न जल)। जो ईश्वर इच्छा। अपना निश्चय दृढ़ होवे तो सब जगह मालिक की सहायता होती है। अपना कर्म हो कल्याण के देने वाला है। तमाम संगत को दुबारा आर्शीवाद कहनी। प्रभु शान्ति देवे। जब तक पूरा पाकि- स्तानी हालात मालूम न होवें तब तक इधर से उजाड़ करना नादानी है। प्रभु शायद कुछ कृपा करेंगे हो। यह तकलीफ का समय काटो और हालात जमाना देखें। जैसा मौका दरपेश

आया वैसा कदम उठाना। ईश्वर सत शान्ति देवे। गंगोठियाँ से पुष्पानाथ की चिट्ठी आई है कि वह भी त्यार हैं। उसको लिख दिया गया है कि जिस जगह किसी को आश्रय होवे बेशक चला जावे। हम तो किसी को गंगोठियाँ के वास्ते मजबूर नहीं करते। दीगर जब सब लोग उजड़ गये तो उधर किस चीज की कीमत, साथ ही सामान भी लूट लें तो अच्छा होगा। इस वक्त लूट मची हुई है। मालिक का खेल, हर वक्त प्रभु का भरोसा रखें जिस जगह किसी ने दाना पानो खाना है वह ज़रूरी खायेगा किसी के बस की बात नहीं है। प्रभु माया का चक्कर ही ऐसा है ईश्वर सत अनुराग देवे

५७. दुःख को बरदाश्त करने का आदेश-

आर्शीवाद पहुँचे, पत्र मिला। ईश्वर सत विश्वास देवें। तमाम प्रेमो जो उस जगह मौजूद हों, आर्शीवाद कहनी। सब को वाजय होवे कि इस भयानक समय में जो चारों तरफ आग प्रचण्ड हो रही है उस एक प्रभु का ही भरोसा रखें। पहले भी उस की कृपा से जीवन व्यतीत हुआ और आगे भी वह कल्याण का सबब बनावेंगें। अपना विश्वास पूर्ण होना चाहिए। देखो प्रभु आज्ञा से कुछ राजनीति की इसलाह (सुधार) हो जावे तो तमाम मुल्क में शान्ति हो जावेगी। फिर उन्नति का भी कोई न कोई सवव बन जाता है। उस दीनदयाल की कृपा सजगत रहना चाहिये। जिसने उजाड़ा है वह ही आबाद भी करेगा।

मानुष की कोई शक्ति नहीं है। वह ही परम पिता सबको शांति देने वाला है और नेकी बदी की रहनुमाई करने वाला है। इस वास्ते उसकी दयालता से सब कुछ बेहतर हो सकता है। जुमाने के चक्कर से बड़े-बड़े घोरजवान घबरा जाते हैं। फिर भी बस किसी का नहीं चलता है। समय खुदबखुद ही जब प्रभु इच्छा से पलटा खाता है तो सुख के भी सब सामान पैदा हो जाते है। तमाम प्रेमियों को धर्मवान् होना चाहिये बड़े-बड़े क्लेश दुनियाँ में महापुरुषों को भी उठाने पड़े हैं तो और जीवों की क्या दशा हो सकती। सिर्फ प्रभु की तरफ से किसी का इम्तहान (परीक्षा) होवे ही नहीं। नहीं तो दुनियाँ एक बड़ा अजाब और घोर नर्क है। फ़कीर लोगों को क्या राय हो सकती है। ऐसे चक्कर में मासवाए धीरज और धर्म के मुसीबत के दिन काटने बहुत मुश्किल होते हैं। हर वक्त प्रभु का भरोसा रखें। और राज- नीतिक चाल को देखें। प्रभु शायद अपनी कृपा से कृपा ही कर देवें। वैसे जीवों के अमल और कर्म तो शायद इस काविल न ही होवें जो शान्ति को दुबारा प्रगट कर सकें। ईश्वर भरोसा रखें। तमाम लोगों के साथ यह विपदा बती है। पहिले भी प्रभु आज्ञा से सब कुछ दुनियाँ का चक्कर देखा और आगे भी उसकी आज्ञानुसार ही देखेंगे। इस वास्ते दृढ़ विश्वास होना चाहिये। तमाम प्रमयों को दुबारा आशीर्वाद वहनी। सव हायात फकीरों को रोशन है। मगर चाला (वंश) कुछ नहीं है। प्रभु की ही कृपा होनी चाहिए। जब जीवन में पहले ही प्रभु

की लीला को विचार करके जो अपने आपको मुसाफिर समझ कर जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उनका सच्चा उपदेश यही है कि दुःख को बर्दाश्त करें और संसारी सुखों का मोह त्याग करें। अपना जीवन प्रभु परायण बनावें और मरने से पहले मौत को कबूल करके असली जिन्दगी को हासिल कर लेवें। यह ही मानुष जन्म का धर्म है। इसके उलट जो सुख की रचना यह जीव रचता है वह अकसर नाश हो जाती है। तो फिर पछताना पड़ता है। इस वास्ते पहले ही दुःख और सुख को प्रभु की आज्ञा समझ कर नित्य ही निष्काम की धारणा कर्म को धारण करना चाहिये जिससे जीवन निर्भय हो जावे और परम पद प्राप्त होवे ईश्वर परमार्थ बुद्धि देवे और सत सन्तोष प्राप्त होवे अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। ईश्वर संकट नाश करें अपनी कृपा दृष्टि से।

५८. बटवारे के समय ईश्वर का भरोसा ही कल्याण के देने वाला है।

आर्शीवाद पहुंचे, पत्र मिला, ईश्वर सत बुद्धि देवे। प्रेमीजी, जैसा मुनासिब समझें करें। अब हालात कोई ऐतबार के काबिल नहीं हैं। निहायत ही जनता परेशान है। गंगोठियाँ के सामान के मुताल्लिक अब क्या कर सकते हो। न कोई खरीदने वाला और नही उठाकर इधर-उधर लाने वाला जैसे प्रभु की आज्ञा। उसका इन्तज़ाम अब मुश्किल है आप मुनासिब विचार कर

लेवें। लखमीदास और तोलाराम को जरूरी है कि खबर होवे और बिरादरी के साथ चले जावें। उन एक और दो का उस इलाके में ठहरना निहायत मुश्किल है। आगे उनका अपना विचार | तुम अपना विचार और हिन्दू जनता जो रावलपिन्डो में मौजूद है उसके अनुकूल करें यह शहर है, शायद कुछ बेहतरी हो ही जावे। मगर जरूरी है कि अगर लोग शहर छोड़कर जायें तो तुम भी चले जावें अगर शहर के लोग न जावें तो फिर मुनासिब विचार कर लेवें। लोगों की जायदादों का क्या होगा। डाक्टर भगतराम खन्ना छुरेबाजी से मारा गया है ऐसा लाहौर से एक प्रेमी ने लिखा है। बाकी निहायत ही तबाही हुई है अब हालात के मुताबिक जैसा मुनासिब समझो करो। ईश्वर जनता की सहायता करे वापसी कुशल पत्रका लिखनी। लखमीदास को इत्तलाह दे देवें अगर तुम सामान लंगर फरोक्त (बेच) कर सकते हो तो कर देव नहीं तो कप्तान साहब के हवाले कर देवें। नहीं तो ईश्वर इच्छा कोई परवाह नहीं है। जिधर संगत गई उधर सामान भी गया। जवाब जरूरी देना कि लख्मीदास वगैरह चले गये हैं या कि नहीं। उनको ज़रूरी मुत्तला करें और सामान किसी के हवाले करा देवें बाद में देखा जावेगा अब सब हालात का जायजा देख लेवें। फिर जिधर दानापानी। जिधर जायें पत्रका लिखनी। जमा वाले रुपये को तबदील करा लेवें। नन्दलाल तो इधर है जैसे मुनासिव होवे करें। तुम्हारी वापसी पत्रका पर फिर शायद जम्मू के रास्ते ही उधर हिन्दुस्तानी पंजाब

की तरफ चले जावें। जब संगत ही इधर न रही तो हम किघर आवेंगे। जरूरी जवाब देवें और लखमीदास वगैरह का पता देना। बच्चों को आर्शीवाद पहुँचे। प्रेमी जी ईश्वर का भरोसा रखें सब जगह ही वह कल्याण के देने वाला है अपने सब हालात से आगाह करें। ज़रूरी हालात के मुताविक कदम उठावें।

५६. राजनीतिक घटनाओं में ईश्वर ही रक्षक है।

आशीर्वाद पहुंचे, ईश्वर इच्छा से जम्मू आये हैं और रावलपिंडी का इलाका तमाम देहात उजड़ चुका है। ईश्वर की इच्छा। और लोगों के हालात सख्त खरावो खस्ता हो गये हैं। आगे नारायण सहायता करें शायद इस इम्तहान का नतीजा कुछ बेहतर ही होवे मगर अभी तो उधर इलाके को हिन्दु सिख जनता बरबाद हो चुकी है। ईश्वर अपनी कृपा से जीवों पर सहायता करे और इस राक्षसी चक्कर से छुटकारा दिलवाए। पत्रका द्वारा उधर का हालात जैसा पाया गया है वह तहरीर करने से बाहर है। प्रभु ही शान्ति प्रकाश करें, राजनीतिक चाल खबर नहीं क्या सूरत पैदा करेगी। ईश्वर रखिया करे। आपके इलाके के हालात शान्ति पूर्वक होंगे। ईश्वर सत श्रद्धा व सत सेवा का भाव बख्शे और नाम स्मरण में दृढ़ अनुराग प्राप्त होवे जोकि शान्ति के देने वाला है ईश्वर सत धर्म विश्वास देवे।

६०. प्रभु का निश्चय शान्ति प्राप्ति का साधन है-

आशीर्वाद पहुँचे, तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी

मंजू राम को आशीर्वाद पहुंचे, ईश्वर कृपा करें और सतधर्म विश्वास देवें। तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी ज़रूरतें बढ़ाने से अकसर दुःख होता है इस वास्ते हर वक्त सादगी को अपनाएँ। अपना ज्यादा समय ईश्वर परायणता में सर्फ करें। यह दुनियाँ का बहाव अधिक कठिन है। सत असूलों से ही अपनी रखिया (रक्षा) करें। प्रभु ने कृपा की है जो सच्चा हुक्म समता तुम को पहुँच गया है। उसको अब अपनाएँ ईश्वर बल बुद्धि देवे तमाम दुनियाँ का फैलाव दुख रूप जानें इससे गुंर जानबदार होने की कोशिश करें यानी प्रभु स्मरण का निश्चय पैदा करें। यह खुलासी देने वाला रास्ता है हर वक्त सही विश्वास करके चलो और अपने जीवन में शान्ति प्राप्त करो ईश्वर सहायक हों।

६१. सत विश्वास के बल से मानसिक दोषों को निवृत्ति-

इस कठिन जीवन यात्रा में अधिक सत विश्वास के बल से ही अपने तमाम मानसिक दोषों से पवित्रता हासिल हो सकती है। इस वास्ते सत अनुराग और निर्मल वैराग्य की दृढ़ता से अपने आप को सतनाम में दृढ़ करें तब ही निज स्वरूप की अनुभव गति को प्राप्त कर सकेंगे जो परम पवित्र नित स्वरूप स्थिति है। ईश्वर नित ही निर्मल बोध की दृढ़ता बख्शें।

६२. समर्पण बुद्धि से निर्मल संकल्प और निर्मल यत्न प्रगट होता है-

सुपुर्दगी यानी समर्पणता और यत्न का यह बल है कि समर्पणता के बल से केवल यथार्थ यत्न ही हृदय से उत्पन्न होता है। जोकि जीवन उन्नति का सहायक है और मलीन वासनाओं का अभाव हो जाता है । समर्पण बुद्धि के बगैर जो भी यत्न किया जाता है वह बन्धन दर बन्धन और वास्तविक अशान्ति के देने वाला होता है यानी समर्पण बुद्धि से निर्मल संकल्प और निर्मल यत्न प्रगट होता है जोकि परम सुख का स्वरूप है। समर्पण बुद्धि की दृढ़ता शुद्ध प्रयत्न को प्रकाशने वाली है और नित स्वरूप आत्मा के आनन्द में स्थिति के देने वाली है। सत पुरुषों का प्रथम सार साधन समर्पण बुद्धि को दृढ़ता ही है ।

६३. निर्भय जीवन प्राप्ति की आशीर्वाद -

ईश्वर बल बुद्धि देवे, प्रेमी शानीलाल को आशीर्वाद कहनी हर वक्त मार्ग धर्म पर दृढ होकर अपनी जीवन की उच्चता को प्राप्त होना चाहिए, ईश्वर नित्य ही निर्भय जीवन बख्शें । हर वक्त प्रभू विश्वास प्राप्त होवे ।

६४. उपकारी जीवन ही गुरु भक्ति है—

आज्ञाकारी संगत रावलपिंडी :-

ईश्वर सत् श्रदा देवे । ईश्वर आज्ञा से काला में स्थित हैं ।

अभी कोई मौज़ (अनुकूल) जगह नहीं मिली। देखिये नारायण की क्या आज्ञा होती है। प्रेमी जी हर वक्त हमको हृदय में समझें। प्रभु आज्ञा से डेढ़ माह से जो अलील हालत (नाजुक) में रावलपिंडी ठहरे हैं और प्रेमियों ने अपनी सत श्रद्धा से हर एक किसम की सेवा की है प्रभु इस की सफलता देवे और निर्मान भाव बख्शें। वह ही बड़ा खुश नसीब होता है जिस को जीवन में कुछ सेवा का मौका मिलता है। प्रेमी जी हर वक्त अपने चित्त में निर्मल उपकार धारण करें। इसी में कल्याण है। तमाम प्रेमियों को वाजह (सूचित) होवे कि अपनी सच्ची कुर बानी से समता के मार्ग पर चलकर असली शान्ति हासिल करें। जो मानुष जीवन का सार है। तुम्हारा पवित्र जीवन और कुर बानी का जज्बा हर वक्त चाहते हैं। ईश्वर समर्थ देवे। अपनी कुशल पत्रका द्वारे आशीर्वाद तलब (हासिल) करते रहें। बड़ी ज़रूरत है इस वक्त उपकारी जीवन की। तुम प्रेमियों को अपनी ज़िन्दगी सुफल करनी चाहिए। हर वक्त यह भाव चित्त में दृढ़ करें। गुरु हुक्म को अपनाना ही असली गुरु भक्ति है और असली गुरु भक्ति को प्राप्त कर के ही ईश्वर प्राप्ति होती है। सतसंग का प्रोग्राम दृढ़ करें। अभी प्रेमियों के अन्दर असली धर्म के जज्वात कम हैं इस वास्ते अगर तुम अपनी कल्याण चाहो तो पूरन निश्चय से समता के असूलों पर कारबन्द हो जाओ फिर देखो क्या खुशी चित्त को प्राप्त होती है। तुमको वाजह होवे कि जितना लिट्टे चर तुम्हारे को हासिल हुआ है इसको सही तरीका

से मुताल्या करके अमल में लावें और दूसरों के वास्ते आदर्श सरूप बनें। अभी तुम्हारे बड़े इम्तिहान होने हैं। इस वास्ते हर वक्त मार्ग धर्म में दृढ़ता हासिल करें। प्रभु सत विश्वास देवे। सत्संग की कमजोरी को दूर करें और अपने जीवन को नित ही पवित्र करें। तमाम प्रेमियों को एक-एक करके आशी- र्बाद कहनी। ईश्वर सत अनुराग देवे।

६५. जीवन आदर्श-

जीवन में सत आदर्श को धारण करना ही परम उच्चता है। जीवन का सत आदर्श धारण प्राप्त करना ही परम उच्चता है। इस वास्ते अधिक दृढ़ विश्वास से सत तत्त अवि- नाशी सरूप का निद्धयासन धारण करते हुए शारीरिक ममता का नाश करना ही परम तप है यानी हर वक्त एक परम तत्व की दृढ़ प्रायणता में तमाम शरीरक कर्मों के फल की आसक्ति का समर्पण करना और लगातार अखण्ड वृति से नाम चिन्तन करना चाहिए। ऐसा निर्मल सहज सुभाओ और अभ्यास के बल से बुद्धि अहंभाव का त्याग करके निज सरूप में समता को को प्राप्त होती है। यह ही सत जतन जीवन का महाकारज है। ईश्वर नित ही सत अनुराग का बल देवे और गुरु बचन का दृढ़ विश्वास प्राप्त होवे।

६६. आदर्श जीवन बनाने की तलकीन-

आशीर्वाद पहुंचे, पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे तमाम

संगत को आशीर्वाद कहनी। तमाम जनता कसबा निवासी को आशीर्वाद कहनी। प्रेमीजी, सत्संग का हालात, पाया। ईश्वर तुम नौजवानों के अन्दर सच्ची गुरु भक्ति और देश भक्ति देवे। तुम्हारे निर्मल दिली जज्बात से जरूरी कामयाबी होगी और तुम प्रेमियों के पवित्र इखलाक की रोशनी दूर तक फैलेगी। प्रेमोजी यह गनीमत मौका तुमको मिला है जोकि ईश्वर का हुक्म सुनाने वाले तुमको जल्दी मिल गये हैं। अब अपनी ज़िन्दगी एक पूरन आदर्श वाली बनावें। जिससे और लोगों का भी भला होवे। हर वक्त नेक बनने की कोशिश करें। और छोटों को नेक हृदायत देते रहना। ईश्वर करेगा यह निर्मल उत्साह बहुत जल्दी कामयाब होवेगा। अच्छी तरह से तमाम लिट्रेचर जो तमाम असूलों का मम्बा है खुद विचार करें और तमाम संगत को प्रचार करें। इसी तरह से संस्कार बदल जाते हैं और अन्ध- कार से चांदना हो जाता है। प्रेमी जो, ऐसी सिरिट धर्म की तमाम प्रमीयों में होवे कि तुम्हारे अमली जीवन से तमाम इलाके के लोग मुत्तासर हो जावें और समता के अनुकूल अपना जीवन बनावें। ईश्वर अधिक श्रद्धा देवे।

६७. सतगुणों को धारण करने की तलकीन-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला, ईश्वर सत्संग प्रीति बख्शे। तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद पहुंचे और यह प्रार्थना करनी कि हर वक्त ईश्वर विश्वास धारण करें। अपने

अन्दर निष्काम देश भक्ति और गुरु भक्ति को धारण करें। हर वक्त समता धर्म की तहकीकात करें अपने असली धर्म के गौहर (मोती) को प्रज्वलित करें। सादगी, सेवा, सत्य, सत्संग, सत सिमरन आदि महा गुनों को अपनायें। यही हुक्म ईश्वर का है। प्रेमीजी तुमने अपने आपको धर्म मार्ग में कुरबानी सरूप में पेश करो। हर वक्त प्रागंदा ख्यालात और बुरे एमाल (कर्मों) का त्याग करें। गुरुमुख जीवन यानी ईश्वर की आज्ञा में सब कुछ देखें। समय निकाल कर ईश्वर सिमरण किया करें। मूर्खताई में आकर जीव ईश्वर हस्ती से मुनकर तो हो जाता है। मगर अपनी ख्यालात की कैद में आकर नेक व बद कर्म करके दुनियाँ से बेज़ार ही जाता है। जो ईश्वर पर विश्वास नहीं रखता वही चण्डाल का स्वरूप है। यानी अपनी हिमकत अमली से क्या-क्या खुद गर्ज़ी का जाल फैलाता है। आखिर इसी जाल में फँसकर तड़प-तड़प कर मर जाता है। इन बातों को हरगिज न भुलायें-

(१) ईश्वर विश्वास।

(२) निष्काम सेवा।

(३) सत्संग का प्रेम।

(४) फजूल खर्ची का त्याग।

(५) हर तरीका से मुन्नशी चीजों से परहेज करना।

(६) अपनी मौत की याद।

(७) हर घड़ी हर लमहा दूसरे की भलाई चाहनी।

ऐसे नेक गुणों के धारण करने से मन में शान्ति और प्रेम

प्रगट होता है और जीव परम आनन्द को प्राप्त होता है। ईश्वर सबको सत बुद्धि देवे और सत्संग प्रीति बख्शे।

६८. निर्मान और सतभावों की तलकीन-

प्रेमीजी, ईश्वर आज्ञा से अहमदाबाद से सात मील के फासला पर एक एकान्त जगह में ठहरे हैं। प्रेमी लोग आते-जाते हैं। चूँकि शरीर बहुत बर्दाश्त के काबिल नहीं और न ही इस अन्धकार के ज़माने में धर्म में लोगों की रुचि है प्रभु हुकम ऐसा ही है। नारायण जब कल्याण करेंगे तब सबको भावना भी अच्छी हो जावेगी। अभी पाप कर्मों में खलकत (जन्ता) जल रही है। और दुख पा रही है। ईश्वर ही रक्षा करें और धर्म प्रकाश करें। ईश्वर सर्व कल्याण का सरूप है। इस वास्ते उसका भरोसा धारण करके उन्नति करें। नारायण विश्वास देवें। सच्चाई से सब कारज सरइनजाम पाता है। इस वास्ते जो कुछ भी करो निर्मान भाव और सत भाव से करो। ईश्वर सत अनु- राग देवें और भावना पूरन करें।

६६. सही जीवन कल्याण मार्ग-

जब तक इस जीवन के सही भेद को न जाना जावे तब तक सहो कल्याण के मार्ग को समझना या इस पर चलना अधिक दुशवार है। अज्ञानमयी जीवन या भोगमयी जीवन को तो सिर्फ ऐसी ही स्थिति जन्म से लेकर शरीर के विनाश होने तक बनी ही रहती है कि बड़े से बड़े ऐश्वर्य भोग प्राप्त करों और

नित हो जीवन बना रहे ऐसे भोग विकारों को चेष्टा जैसी भी जिसके अन्दर अधिक दृढ़ होतो है मसलन अधिक लोभ या अधिक मोह या अधिक क्रोध या अधिक अहंकार या अधिक काम प्रबल रूप में एक ना एक ओगन हर एक के अन्दर मौजूद रहता है और इसी औगन की कैद में बुद्धि अपना संसार कायम करती है यानी अधिक लोभ मौजूद हो तो धन माल को संचित करने में अधिक चतुर होता है। अधिक मोह हो तो वह मानुष अधिक परिवार की वृद्धि में लवलीन रहता है। अधिक क्रोध जिस के अन्दर हो तो वह नाना प्रकार की तजवीज़ें दूसरों की हानि की सोचता है । बहुत फरेबी और जल्लाद तबीबत (हिंसक वृति) का होता है | अधिक अहंकार मौजूद हो तो वह मानुष अपनी सरदारी कायम करने की खातिर अधिक यत्न करता है । ऐसे ही अधिक काम चेप्टा जिस के अन्दर बलवान होती है तो वह मानुष अधिक भ्रष्टाचारी और स्त्रियों का मुरीद होता है ऐसे ही पशु भी इन विकारों की अगनि में जलते रहते हैं । यह ही मादावाद या प्रकृितवाद का जीवन चक्कर है। ऐसे ही भोग मई जीवन को धारण करके जो यह कहे कि मैं दूसरों की कल्याण करूँगा वह महज एक पशु ही है। क्योंकि उसने कल्याण तो अपनी पहिले की नहीं है और मानसिक विकारों के ज़ेर असर होकर अपनी आदात को पूरा करना चाहता है । उस से दूसरों की कल्याण होनी महज ऐक ढोंग है जैसा कि आज कल के कई प्रकार के लीडर बन कर अपनी दर पर्दा आदात को

पूरा करने की खातिर दूसरों को सबज बाग दिखाकर अनये कर रहे हैं। यही जीवन असुर-मई है। इस किसम के विकार, मई जीवन में कभी भी संसार में शान्ति नहीं हो सकती है। यह तो अपने-अपने कपट को एक दूसरे पर ठोंसने का यत्न करते हुये अपने आन्तरिक दोषों में अधिक जल रहे हैं। शान्ति कहाँ है और किस तरह हो सकती है ? अच्छी तरह से विचार करें। इस भयानक खेदमई जीवन के उल्ट आस्तिक वाद और सत्-वाद का मार्ग है। जिस तरफ यत्न करने से प्रथम अपनी कल्याण होती है फिर दूसरों की भी। उसी कल्यान का सरूप यह है कि जो बढ़ते हुए विकार अन्तर बाहिर जला रहे हैं उनमें संतोष प्राप्त होता है और बुद्धि बलवान होकर अपने अन्तर निष्काम त्याग को हासिल करती है जो सरब कल्याण का सरूप है। ऐसे विकारमई जीवन से जाग्रित होकर के आत्ममई जीवन की दृढ़ता धारण करनी चाहिए। ज्यों ज्यों बुद्धि देह मद को त्याग करके आत्म सत्ता के परायण होती है त्यों त्यों आन्तरिक सब दोष नाश को प्राप्त होते हैं तब बुद्धि निर्दोष और निर्वास हो करके अपने नित सरूप में स्थिर होती है। फिर निष्काम रूप में सर्व जगत की कल्याण करने वाली होती है यह ही देव मार्ग शान्ति के प्रकाशने वाला है। पहिले अपनी कमजोरियों और कामनाओं से पवित्र होना चाहिए। तब दूसरे की कमजोरियां और कामनायें पूरन करने में वह धीर पुरुष बलवान हो सकता है। यह थोड़ा-सा विचार लिखा जाता है अच्छो तरह से समझ

कर के अपने आप को सही उन्नत करने का यत्न इखरियार करें। यानी भोगवाद और नास्तिकवाद से पवित्र होकर के सत वाद और आत्मवाद के परायण होवें जो सरव कल्याण सरूप है। अच्छी तरह से पुस्तकों का मुताल्या करें। तुम्हारे जैसे नौजवानों का जीवन बुनयादी देश व धर्म उन्नति के वास्ते होना चाहिए जोकि आइन्दा और हाजरा के अन्धेरे में एक रोशनी का काम देवे। ईश्वर सत बुद्धि अनुराग देवे।

७०. बाअसूल जीवन की तलकोन --

ईश्वर सदाचारी जीवन बख्शें। प्रेमी जी हर वक्त अपने जीवन को बुलन्द करने की कोशिश करते रहें। ईश्वर के दृढ़ विश्वासी होकर अपने जीवन को नित पर-उपकारी बनावें। और समता की रोशनी को फैलायें। जिस से सब जीव सुख पावें। तमाम प्रेमियों का फर्ज है कि अपना जीवन वाअसूल बना कर दूसरों को एकत्र होने की प्रेरणा किया करें और सत्संग का नियम बहुत आला बनावें। जिस से दूसरों को भी सबक आवे और धर्म की उन्नति होवे। अगर तुम अपने राह- नुमा के वचन को आनन्द दायक समझ चुके हो। तो प्रेमो जी फिर आगे ही आगे होते जावेगें। और अपने जीवन को लामिसाल बनावें। तुम प्रेमियों की कुरबानी से ही धर्म जाग्रित होगा। हर वक्त हमको हाज़िर समझें। समता की रोशनी हर एक के दिल में कायम करें। जिधर भी जावें समता की तलकीन करते

रहा करें। इस वक्त बड़ा अन्धकार फैला हुआ है। हर वक्त सत पुरुषार्थ धारण करें। ईश्वर अधिक गुरु बचन का विश्वास देवे। बाल सत्संग के बारे में उन बच्चों की अच्छी तरह निग- रानी करनी। कुछ वक्त के बाद वह ही समता के प्रकाश करने वाले होंगे। तमाम प्रेमियों को एक एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर एक जीवन सब का कर देवे ताकि एक लक्ष कायम कर देवें। ईश्वर सत बुद्धि देवे।

७१. उच्चय जीवन बनाने को तलकीन

प्रेमी जी अपने जीवन को अब देव मार्ग में निशचित करने का पूरा पूरा यत्न करें। जो समाँ गुज़र चुका है उसमें जैसा भी जीवन का तजुरबा किया है उस पर गहरी गौर करते हुऐ, और जीवन यात्रा का सही मकसद (उद्देश्य) समझते हुए अपने आप को जाग्रित करें और गुरु वचन को पूर्ण निश्चय से हृदय में जगह देवें। ऐसी भावना में ही सर्व कल्याण है। मानुष जन्म की उच्चता यही है कि सत पुरुषों के आदर्श को धारण करके अपने आप को सत परायणता में दृढ़ किया जावे। जो तमाम दोषों से पवित्रता के देने वाली है। प्रेमी जी गुरु आज्ञा को पालन करते हुऐ अपने आप को सत विश्वासी और सत निद्ध- ध्यासी बनावें और सत नियमों को अपने जीवन में श्रिगारित करें तब सहज ही निर्भय शान्ति अविनाशीपद को प्राप्त कर सकेंगे। हर समय गुरु बचन को हृदय में निश्चित करें। सादगी

के पूर्ण अनुयाई बनें। तमाम फजूल हरकात से प्रहेज रखें। समता सत्संग को उन्नत करें। अपने कारोबार में पूर्ण सत्य धारण करें। तमाम प्राणी मात्र से प्रेम रखें। अभ्यास में पूरा पूरा समाँ दिया करें। प्रभु कृपा के हर वक्त प्रार्थी होवें। ऐसी निर्मानता और सरलता की भावना को धारन करते हुऐ अपने जीवन को पूर्ण पवित्र करें। यह ही साधना सत पुरुषों का मार्ग है। ईश्वर दृढ़ विश्वास देवे।

७२. निर्मल कर्त्तव्य की तलकीन-

ईश्वर इस समय में धर्म का विश्वास देवे और शुभ कर्म करने की कोशिश हासिल होवे। अपने कर्म हो दुख व सुख के मौजब (कारण) होते हैं। गुनी पुरुष हर वक्त मौत और ईश्वर के खौफ (भय) से निर्मल करम करता है। और नित ही शान्ति में रहता है। मूर्ख ज़माने के चक्कर से ही अगर सबक ले कर अपना कर्त्तव्य निर्मल करे तो भी बड़ी कामयाबी हासिल की है। सो इस वास्ते जमाने की दुखित हालत हर एक को सबक देवे और जवाँमर्दी, एकता, प्रेम, उदारता, प्रभु विश्वास सहित इस जनाने की गर्दिश को अबूर पाना ही सहल साधन है इस वास्ते अपने भाव को निर्मल करें फिर सब शान्ति ही शान्ति है।

७३. पीड़ित प्रेमी को धैर्य का उपदेश-

ईश्वर सत विश्वास देवे । तमाम प्रेमियों को जो उस जगह मौजूद हों आशीर्वाद कहनी । सबको वज़ह होवे कि इस भयानक समय में जो चारों तरफ आग प्रचण्ड हो रही है एक उसी प्रभु का हो भरोसा रखें। आगे भी उसकी कृपा से जीवन व्यतीत हुआ और आगे भी वही कल्याण का सबब बनावेंगे । अपना विश्वास पूरन होना चाहिए देखो प्रभु आज्ञा से कुछ राजनीति की इसलाह हो जावे तो तमाम मुलक में शान्ति हो जावेगी फिर उन्नति का कोई न कोई सबब (कारण) बन जाता है। उस दीन दयाल की कृपा संजुगत रहना चाहिए उसने उज्जाड़ा है। वही आबाद करेगा । मानुष की कोई शक्ति नहीं है वह ही परम पिता सबको शान्ति देने वाला है और नेकी बदी में राहनुमाई करने वाला है इस वास्ते उस की हो दयालता से सब कुछ बेह- तर हो सकता है जमाने में चक्कर से बड़े बड़े धीरज वान घबरा जाते हैं फिर भी बस किसी का नहीं चलता । सम खुद बखुद ही जब प्रभु इच्छया से पलटा खा जाता है तो सुख के भी सब सामान पैदा हो जाते हैं। तमाम प्रेमियों को धीरज वान होना चाहिए। बड़े बड़े क्लेश दुनिया में महा पुरुषों को भी उठाने आये हैं और जीवों की क्या दिशा हो सकती है। सिर्फ प्रभु को तरफ से किसी का इम्तहान होवे ही नहीं । नहीं तो दुनिया एक बड़ा अजाव (दुख) और घोर नरक है। फकीर

लोगों की क्या राये हो सकती है। ऐसे चक्कर में मासवाये धोरज और धर्म के मुसीबत के दिन काटने बहुत मुश्किल होते हैं। हर वक्त प्रभु का भरोसा रखें और राजनीतिक चाल को देखें। प्रभु शायद अपनी कृपा से कृपा कर ही देवें वैसे जीवों के अमल और कर्म तो शायद इस काविल ना होवें जो शान्ति को दोबारा प्रगट कर सकें। ईश्वर पर भरोसा रखें तमाम लोगों के साथ यह विपता बनी है आगे भी प्रभु आज्ञा से सब कुछ दुनियाँ का चक्कर देखा और आगे भी उस की आज्ञा अनुसार देखेंगे। इस वास्ते दृढ़ विश्वास होना चाहिए। तमाम प्रेमियों को दोबारा आशीर्वाद कहनी। सब हालात फकीरों को रोशन हैं। मगर चारा कुछ नहीं है। प्रभु की कृपा होनी चाहिए। जीवन में पहिले ही प्रभु लीला का विचार करके जो अपने आप को मुसाफिर समझ कर जोवन व्यतीत कर रहे हैं उनका सच्चा उपदेश यही है कि दुख को वरदाश्त (सहन) करें और संसारी सुखों का मोह त्याग करें। अपना जीवन प्रभु परायण बनावें और मरने से पहले मौत को कबूल करके असली जिन्दगी को हासिल कर लेवें। यह ही मानुष जन्म का धर्म हैं उस के उलट जो सुख की रचना जीव रचता है वह अकसर नाश हो जाती है। फिर पछताना पड़ता है। इस वास्ते पहिले ही दुख व सुख प्रभु आज्ञा में समझ नित ही निष्काम कर्म की धारणा को धारण करना चाहिए जिस से जीवन निर्भय हो जावे और परम पद प्राप्त होवे। ईश्वर परमार्थ बुद्धि देवे और सन्तोष प्राप्त होवे।

७४. निर्मल कर्त्तव्य पालन की तलकीन-

प्रेमीजी, इस संसार सागर में कई प्रकार के तुरंग उठते रहते हैं, बुद्धिमान पुरुष का निर्मल कत्तव्य यही है कि सत् परायण होकर अपने जीवन को सत कारज में प्रवृत करता रहे और सही मुनासबत यानी सत नियम और सत संयम में पूर्ण दृढ़ता धारण करे। ऐसे पवित्र निश्चय से सत शान्ति प्राप्त होती है । प्रेमीजी वैसे तो ज़िन्दगी हर हालत में गुज़र ही जाती है खाहे कल्यानकारी मार्ग में चलकर गुज़ार देवें ! खाहे अपनी तबाही आप पैदा करे। मगर सुफल जीवन वह ही माना गया है जिसका आखिरित शान्तमयी होवे सो वाजह होवे कि एक सत सरूप परमेश्वर का विश्वासी और अभ्यासी होकर अपने जीवन कर्त्तव्य को पालन करना चाहिये । इसमें सरव कल्यान है । अपने सुख को नित ही पर दुःख में त्याग करना चाहिये श्रेष्ट से श्रेष्ट आचरण को धारण करने की अधिक दृढ़ता होनी चाहिये । प्रभु विश्वास अधिक होना चाहिये जिससे सुख-दुःख में संतोष प्राप्त होवे । प्रेमीजी यह जीव तृष्णा रूपी अन्धकार में ही गायब हो गया है। बगैर निर्मल सतयत्न के यानी एक सत तत्त अविनाशी के सिमरन ध्यान के इस घोर अन्धकार से छुटकारो न मिल सका। इस वास्ते इस जीवन यात्रा को निर्मल बोध करके विचार करना और सत पुरुषों की सत सिखया द्वारा अपने आपको नित ही सत परायण बनाना ही परम निर्मल पुरुषार्थ और गुरु बचन का निद्धयासन

है ऐसे अनुराग से ही यह जीव माया के असगाह सागर से बबूर पाकर सरब आत्म सरूप आनन्द में लीन हो जाता है। इस मानुष जन्म की निर्मल कोति इस धाम की प्राप्ति है ईश्वर सत बुद्धि अनुराग देवे। जिससे अपना जीवन सत परायण बनाकर अपने खानदान जाति व देश के वास्ते परम गुणकारी वन सकेँ। हर वक्त गुरु आशीर्वाद को अंग-संग जानें। प्रेमीजी समता की सालीम को अनुभव करके असली मानुष जीवन के गौहरों को प्राप्त करें। अभ्यास और स्वाध्याय में भी समाँ लगाया करें। और सत्संग का प्रोग्राम भी बनाये रखें। इससे दूसरे सज्जनों का भी कल्याण हो सकता है और इस अनुभवी वाणी का भी उच्चारण करना सरव प्रकार की पवित्रता के देने वाला है। ईश्वर सत विश्वास देवें। गुरुवचन में सत अनुराग होवे।

७५. गुज़रे हालात से आगामी जीवन को सुधारने की तलकीन-

ईश्वर नित्य ही समता मार्ग में निश्चय देवे और मुसीबत को सहन करने की शक्ति देवे। हर वक्त सच्चाई और प्रम से विचरो जिन्दगी का मयार देखो। आखरित को दृष्टि में रख करके सत्य परायण होवो। पिछली लापरवाही को छोड़कर बाईग्दा सत्य विश्वासी बनो। नयी जिन्दगी के आगाज (आरम्भ) को पवित्र भावना से आरम्भ करो। कोई चीज इम्तहान के वक्त साथ देने वाली नहीं है। मासवाये अपने कर्म के। समता के अमूलों को हृदय करके अपनाओ। सच्ची श्रद्धा करके गुरु दरबार

से सहायता चाहो। यहाँ बनावट काम नहीं करेगी। आईन्दा जमाने में सत्य आचरण वाले ही खास शोभा पावेंगे। किसी चीज़ की बनावट अकसर दुख देने वाली होगी। प्रभु कृपा की हर वक्त मन में अराधना करो, अभ्यास ज़रूरी किया करो। पिछले वाक्यात को एक इम्तहान जानो और आईन्दा के वास्ते जीवन उन्नति और दुख से सुरखरूई (छुटकारा) हासिल करने की खातिर सही समतावादी बनो। ईश्वर गुरु बचन का विश्वास देवे।

७६. कल्याणकारी निर्मल जीवन का सार साधन-

यह जीवन का संग्राम अधिक कठिन है। यह जानते हुए भी अपनी कल्याण के यत्न में कायरता धारण करके सम निरार्थिक हर एक गुणी खो देता है। और अन्त को अधिक पश्चाताप करता है। मगर उस वक्त कुछ बन नहीं सकता है। इस वास्ते अपने जीवन उन्नति के भाव को अधिक प्रतीत करते हुए निहायत स्वतन्त्र बुद्धि धारण करके कल्याण के मार्ग में पूर्ण निश्चय से दृढ़ होना चाहिये। ताकि तमाम यत्न प्रयत्न कल्याण के निमित्त ही धारण करके इस शरीर की विनाश से पहले-पहले निर्भय शान्ति में निश्चलता प्राप्त हो जावे। ऐसा परम पवित्र निश्चय ही तमाम संत पुरुषों का हुआ है। सो प्रमी जी केवल विचारों की धारा में अपने आपको गमगीन करना कोई यथार्थ उन्नति के देने वाला निश्चय नहीं है। इससे सम

अकार्थ व्यतीत हो जाता है। आखिर वैसे का वैसा ही मूढ़ पना अन्तर में बना रहता है। ऐसी मज़बूरी के निश्चय से जाग्रत हो करके परमानन्द सत्य स्वरूप के अनुभव करने का यथार्थ यत्न इखत्यार करना चाहिये जिससे महा लाभ प्राप्त होवे।

इस संसार की यात्रा शरीर के अन्त होने से पहले-पहले संपूर्ण हो जाये। क्योंकि मन इन्द्रियों की चेष्टायें अधिक संकट रूप हैं। और किसी वक्त भी हो सकता है कि सत्य विचारों को नष्ट करके विपरीत भावनाओं को प्रगट कर देवें। और तमाम जीवन यात्रा की सफलता नष्ट हो जावे। इस वास्ते अधिक से अधिक सत्य यत्न द्वारा सत्य मार्ग में अपने आपको दृढ़ करके यथार्थ अध्यात्म उन्नति का साधन इख्त्यार (अपनाना) करना चाहिये जिससे मानसिक दोषों की निवृत्ति होनी शुरू हो जावे। और पवित्र विश्वास की दृढ़ता प्राप्त होवे। ऐसे सत्य यत्न स तमाम मानसिक खेद नाश को प्राप्त हो जाते है। और परम सिद्धि को गुणी अनुभव कर लेता है। मन इन्द्रियों को चेष्टाओं से असंग होना ही परम सिद्धि है। सो ऐसी अवस्था यथार्थ दृढ़ विश्वास और यथार्थ मार्ग सत साधन के प्राप्त होने से ही होती है। महज़ विचारों से इस मानसिक संग्राम से विजय हासिल करनी अति कठिन है। अगर कोई गुणी अपनी सही उन्नति करना चाहे तो उसके वास्ते लाज़मी है कि किसी कामिल सत् पुरुष की शरणागत होकर के यथार्थ यत्म धारण करे। जो परम सफलता के देने वाला होवे। यह ही सार नीति सत पुरुषों

की है। जब तक अपने अन्तर में सत् स्वरूप अविनाशी का बोध न होवे। तव तक मानसिक संसार का अभाव नहीं होता है और न ही परम तृप्ति प्राप्त होती है। जब बुद्धि तमाम मन इन्द्रियों की चेष्टाओं से असंग होकर के एक परमानन्द स्वरूप में अन्तर विखे निश्चल होती है। तब निर्भय सुख को अनुभव करती है। जो अकथ और अगोचर है। यह ही स्थिति परम बोध, परम सूझ परम ठौर, और परम विज्ञान स्वरूप है। जिसको अनुभव करके वासना रूपी अगन से बुद्धि पूर्ण शान्ति को प्राप्त हो जाती है। वास्तव में इसी परम शान्ति की सबको चाहना है। और यह ही निर्भय सुख निज स्वरूप है। अधिक सत् यत्न द्वारा ऐसी परम स्थिति को प्राप्त होना ही महा कारज है। और सत् पुरुषों का यथार्थ आदर्श है। इस वास्ते इस कल्याणकारी मार्ग में अपने आपको निहचल करें। इस सत् यत्न से ही जीवन का महा लाभ परमानन्द शान्ति प्राप्त होती है। अच्छी तरह से विचार कर लेवें। ईश्वर सत् बुद्धि सत् अनुराग देवे।

७७. लागज़ प्रेम और फर्ज शनासी को दृढ़ता का महत्व –

तुम्हारे विचार द्वारा जो कुछ मालूम हुआ है। उसके मुता- बिक कुछ जवाब तो नहीं बन सकता है। इतना जरूरी है। कि अगर तुम ऐसा एहसास अपने मन्द भाग्य का करते हो तो ये भी प्रभु की दयालता है। शायद किसी वक्त पूर्ण पवित्र निश्चय की दृढ़ता को प्राप्त कर सकें। प्रेमीजी प्रेम की हड़ता

फर्ज़ शनासी की दृढ़ता या अधिक लाभ की दृढ़ता जब निश्चय में दृढ़ होती है। तब कोई भी हालात प्रतिकूल या मजबूरी वाला रुकावट का सबब नहीं बन सकता है। ज़रूरी ही इस कत्तव्य को पालन करने का मानुष यत्न करता है। सो इन हालात के अनुसार तुमने गुरु की महिमा या संतों की महिमा को विशेष रूप से समझा नहीं है। इसमें भी कोई असचर्ज नहीं है। क्योंकि मायाधारी और सन्तों का सम्बन्ध सिर्फ कच्चा ही होता है। क्योंकि दोनों हालतें फर्क वाली हैं। हां ऐसे लोग खास मायाधारी हुए हैं जिनका विशेष प्रेम सन्तों के साथ और गुरु के दरबार में हुआ है। सो उनमें रामचन्द्र का प्रेम गुरु वशिष्ट के साथ, कृष्ण का प्रेम गुरु दुर्वासा के साथ, मौर्यध्वज का प्रेम सन्तों में, ऐसे और भी कई हुए हैं। मगर वह मायाधारी भी परम सन्त माने गये हैं। तुम इस बात का फिक्र मत करें कि जिस स्वार्थ की अवस्था में तुम खड़े है उस अवस्था में सन्तों का संग या गुरु वचन की पालना अति मुश्किल है। तुम ऐसे भागशाली कैसे हो सकते हैं कि ऐसे ऐश्वर्य का अंजाम समझ करके सत् अर्थ परमार्थ में भी कुछ निश्चय दृढ़ करें। ये ईश्वर की खास कृपालता होवे तो हो सकता है। सो प्रेमोजी तुम खाहे अति अश्रद्धकपन और कठोरपन को धारण कर भी लेवें तो गुरु दरबार से तुम्हारी निर्मल कल्याण का भाव बना ही रहेगा यानी अगर तुम अपने प्रतिज्ञावचन और कर्त्तव्य को बिलकुल भूल जायें तो भी सन्तों के दरवार से सत् शीतलता की ठण्डक तुमको प्राप्त होती रहेगी।

७८. मानसिक भाव को निर्मल रखना ही असली शुरवीरता है-

तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी, ईश्वर नित्य ही सत् धर्म अनुराग देवे ! प्रेमीजी, रूहानी आज़ादी की तहकीकात करें। वही समता का स्वरूप है। दुनिया में कई रंग के आन्दो- लन आते रहते हैं। मगर गुणी पुरुष अपनी जीवन यात्रा को प्रभु परायणता हासिल करके मुकम्मल करने का यत्न करते हैं। और आईन्दा के वास्ते एक आदर्श स्वरूप हो जाते हैं। प्रेमीजी अपने मानसिक भाव को निर्मल रखना ही असली शूरवीरता है | अभ्यास जरूरी किया करें। इससे बुद्धि बलवान् होती हैं। और पापों से मुखल्लसी हासिल करती है। तमाम प्रेमियों को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। शुरू जुलाई तक किसी दूसरी जगह प्रोग्रम मुकम्मल होवेगा अभी पता नहीं है कि किधर प्रभु का हुक्म होता है। सत्संग का प्रोग्राम बनाये रखें इससे अकसर प्रेम और एकता पैदा होती है। ज़माने की गरदिश खुद बखुद सबको सबक दे रही है। और देवेंगी। ये याद रखना चाहिये कि आखिर सत धर्म की ही विजय है। हर वक्त हमको हृदय में देखें। अपनी कुशल पत्नका लिखते रहा करें। ईश्वर सत बुद्धि देवे।

७६. प्रभु स्मरण की अन्तःकरण में निश्चल करने की तलकीन-

प्रेमी जी ! जो समय जीवन का बकाया (शेष) है। इसको सत स्मरण द्वारा नित्य ही निर्मल करते रहना। ये संसार

अधिक कठिन है। इस में केवल प्रभु परायणता ही सर्व शान्ति के देने वाली है। इस जीवन में सत की तलाश और सत में स्थिति हासिल करनी ही परम सिद्धि है। ईश्वर नित्य ही सत विश्वास देवें। और अन्तरिक भावना को पवित्र करें। जिस से सर्व शान्ति प्राप्त होवे। प्रेमी जी प्रभु इच्छा को धारण करके जो अमूल्य पदार्थ प्रभु स्मरण प्राप्त हुआ है। उसको अन्तःकरण में निश्चल करते रहना। ईश्वर सर्व मनोरथ पूरण करें। ईश्वर नित्य ही सहायक होवें।

८०. श्रेष्ठ श्रद्धा और समर्पण बुद्धि-

संसारी उलझनों से अक्सर मन अभ्यास से उक्ता जाता है। इस वास्ते सत यत्न को धारण कर रखना चाहिए। और अधिक से अधिक कोशिश करके प्रभु आज्ञा में अपने आप को निःहचल करना चाहिये। जब तक समर्पण बुद्धि दृढ़ न होवे तब तक मानसिक दोषों से पवित्रता प्राप्त नहीं होती है। और जब तक पवित्रता से अभ्यास न वन पड़े तब तक निहःचल शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती है इस वास्ते प्रभु आज्ञा में तमाम कर्मों का समर्पण करने का भाव दृढ़ करना चाहिये। और वासना के वेग को प्रभु प्रेम की धारणा से नाश कर के नित्य ही सत नाम के स्मिरण में दृढ़ करना चहिए। ऐसी श्रेष्ठ श्रद्धा ही सत पद के देने वाली है। ईश्वर निर्मल सुमत्ति देवें।

८१. अन्तिम वासना और संग दोष का असर-

जैसे-जैसे अच्छे या बुरे कर्म मनुष्य करता है। अन्त के समय की वासना के मुताबिक (अनुसार) उसको दोबारा शरीर मिलता है। अगर अन्त के समय तमो गुण प्रधान होवे। तो मानुष का जीव जड़ जूनी को धारण करता है। अगर रजो गुण प्रधान होवे, तो पशु जूनी को प्राप्त होता है। अगर सतो 'गुण प्रधान होवे तो मानुष के शरीर को धारण करता है। ऐसे ही दूसरी जूनियों के भी जीवों की दूसरे शरीरों की तबदीली होती है। यानी अन्तिम वासना के अनुसार तो आईन्दा का शरीर धारण करता है। और उस शरीर में बाकी के जो कर्म पिछले शरीरों में किये हुये हैं। वहाँ भोगता है। और संग दोप से नये भी आरम्भ करता है। यही सिलसिला अनेक जूनियों में भमरता है । जब तक कर्म वासना के भयानक जाल से छुट- कारा नहीं मिलता है, अपनी वासना के अनुसार ही नये से नये शरीर को धारण करता हुआ दुख सुख द्वन्द्व में नित्य ही खेद- बान रहता है । यह ही जी जीवन यात्रा वास्तव में परम संकट • रूप है । मानुष जन्म में आकर के इस कर्म वासना के द्वन्द्व रूपी जाल को सत स्वरूप के बोध के विवेक से नाश कर के नित् स्वरूप में स्थिति हासिल करना ही परम उच्च कर्त्तव्य है । कोई महा गुणी ही इस दुस्तर माया से निरबन्ध होकर के सत स्वरूप में निह चलता हासिल करता है। उसका जीवन अति

दुर्लभ है। और परम कीर्ति योग है। अपनी निर्मल अध्यात्म उन्नति करना सब मानुषों के वास्ते जुरूरी है। क्योंकि मानुष जन्म बड़ा दुर्लभ है। इसमें छुटकारा हासिल हो सकता है। ईश्वर सुमत्ति देवे।

८२: देहमद का परित्याग और आत्म तत्व में लीनता-

प्रेमी जी, जो प्रोग्राम तुम ने लिखा है ईश्वर तुम को इस पर दृढ़ निश्चित करें। और सफलता देवें। इन खास विचारों को हर वक्त धारण करते रहें। ये दुनियाँ वास्तव में एक गहरा अज़ाब (संकट) है जो कि अन्त के समय ही प्रतीत होता है। मानुष जन्म की उच्चता यही है, कि शरीरक मद का परित्याग कर के एक नाम परायण अपने आप को बनाना, ज्यों-ज्यों नाम परायणता दृढ़ होती जावेगी। त्यों-त्यों अन्तःकरण में सत शान्ति प्रतीत होगी। यह ही सत साधना परम कल्याण निर्भय पद के देने वाली है। ऐसा निश्चय होना चाहिए। तमाम शरीरक कर्म शुद्ध स्वरूप में करते हुये प्रभु आज्ञा में समर्पण करते जावें यानी होना या न होना प्रभु आज्ञा में ही दृढ़ करना चाहिए। ऐसे निश्चय से तमाम कर्म की आसक्ति नाश हो जाती है। और बुद्धि निकर्म तत्व आत्मा में निश्चल हो जाती है। प्रेमी जी, खास भारत की प्राचीन सभ्यता यह ही है कि देह मद से निर्मल होकर एक आत्म तत्व में निश्चलता प्राप्त करनी। इस योग आरूढ़ अवस्था में बड़े-बड़े ऋषि मुनि और अवतार होकर बिचरे हैं अब इस अन्धकार के समय में इस देह मद की

गिरफ्तारी की कोई इन्तहा (अन्त) नहीं है। जिस कारण तमाम जीव अनयुक्त क्रिया को धारण करके मर्यादा से पतित होकर परम दुखी हो रहे हैं। अब चूंकि आप सज्जनों को अपनी कल्याण का सुभाग्य प्राप्त हुआ है, इस वास्ते परम दृढ़ निश्चय से सत सिमरण में दृढ़ होवें और गुरु आज्ञा का निर्मल रीति से पालन करें। तब ही प्रभु कृपा के सही पात्र होकर अपने तमाम अन्तःकरण के दोषों से निवृत्ति हासिल कर सकेगें। ईश्वर सत अनुराग देवें।

८३. ईश्वर परायणता और नाम सिमरण में प्रीति-

ईश्वर नित्य ही सत् विश्वास देवें। हर वक्त नाम सिमरण में अपनी तब्जो (ध्यान) कायम करते रहें। इस धारणा से शान्ति प्राप्त होती है। यानी शान्ति भी अन्दर है। और अशान्ति भी अन्दर से प्रगट होती है। इस वास्ते ईश्वर परा- यणता के नियम को हड़ करना और नाम सिमरण में अधिक प्रेम रखना ही सब तापों के नाश करने वाला है। जिस तरह प्रभ की सर्व कृपा आप पर है। उसी तरह आप भी सर्व कृपालु होकर एक प्रभु नाम के परायण होवें। जिस से मानुष जन्म सफल हो जावे। हर वक्त हम को हृदय में देखें और कुशल पत्रका लिखते रहा करें। जिन्दगी की सही तहकीकात (खोज) ही मानुष जन्म का मिशन है। प्रभु कृपा से जो मौका आपको मिला है। उस का फल प्राप्त करना है। यानी सही पुरुषार्थ करके ज्यादा

समां उस दीन दयाल के सिमरण ध्यान में लगाते रहें। जिस से और भी आनन्द प्राप्त हो जावे। ईश्वर गुरु बचन का विश्वास देवे।

८४. प्रभु विश्वास सहित सत पुरुषार्थ में दृढ़ता धारण करना-

जमाने की गरदिश अक्सर जल्दी-जल्दी सही कामयावी होने नहीं देती है। सो विश्वास रखें, ये भी समां तबदील हो जावेगा। प्रभु विश्वास सहित सत पुरुषार्थ दृढ़ करते जावें। प्रभु अपनी कृपा से जरूरी सहायता करेंगे। ईश्वर सत धर्म देवे। दुनिया में अक्सर बड़ी मुसीबतें झेल कर के ही असली जोवन का पता लगता है। सो प्रभु दीन दयाल सत परायण बुद्धि देवें और संकट का समां सत शान्ति धर्म के स्वरूप में तबदील करें। अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। प्रभु रख्यक होवे और सत उद्धम बों। हर वक्त धीरज रखना चाहिए।

८५. प्रभु विश्वास से कारजों में सफलता -

ईश्वर सत विश्वास देवे। प्रेमी जी प्रभु आज्ञा से जो जीवन | निर्वाह का कारण आरम्भ किया है। उसमें प्रभु सफलता देवें। और तुम्हारे अपने सत विश्वास से जरूरी प्रभु कृपा करेंगे, ऐसा विश्वास रखना चाहिए। वह दोन दयाल सर्व प्रतिपालक है। और हरएक जीव का रख्यक है। उस के भरोसे जो काम किया

जावे जरूरी सफलता प्राप्त होती है। ईश्वर तुमको सत धर्म विश्वास देवें। और तमाम संकट नाश करे। हर वक्त अपनी सत श्रद्धा से गुरु आशीर्वाद अंग संग जानें। ईश्वर जीवन निर्वाह कारज में सहायक होवें और निर्मल विश्वास देवें। और जवांमर्दी (शूरवीरता) से तकलीफ का मुकाबला करें। प्रभु जरूरी कामयाबी देवेंगे। हर वक्त सत अनुराग प्राप्त होवे।

८६. आचार विचार का दुरुस्त करना परम धर्म है—

आशीर्वाद पहुँचे, पत्रका मिली, तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। बहस मुबाहसे करने अच्छे नहीं। तुम अपने सुधार का विचार करें। आखिरी जवाब यही है। कि हम सब को मानते हैं। अपने आचार विचार का दुरुस्त करना परम धर्म समझते हैं। जो बुर्जुगों की आड़ लेकर पाप करते हैं। वह कभी भी समता के धर्म को पालन नहीं कर सकते। इस वास्ते तुम अपनी बेहतरी करें। खाहे दो आदमी हों सत संग ज़रूरी किया करो। इसी से बरकत होवेगी।

८७. मनुष्य की आयु-

प्रेमी जी ! आयु कर्म के अनुसार है। कर्मों से शरीर बनता है और कर्मों के बिगड़ने से नाश हो जाता है। शरीर कर्म रूप ही है। आयु कोई मुकररा नहीं है ! और न ही हो सकती है। सिर्फ अन्दाजन १२५ वर्ष इस ज़माने की आयु है।

उम्र का घटना और बढ़ना कर्मों के अनुसार है । शरीर मिसल मशीन के हैं। अगर वा हिफाजत काम लिया जावे तो ज्यादा वक्त चल सकती है और बेहूदा तरीका से इस्तेमाल की जावे तो जल्दी बिगड़ जाती है। इस वास्ते नेक कर्म आयु को बढ़ाने वाले हैं और बुरे कर्म आयु को घटाने वाले हैं। बाकी ऐसे वैसे रोग कर्म संस्कारों से लग जाते हैं। जो आयु को छिन्न कर देते हैं। आखिरी निर्णय यही है कि शरीर की पैदाइश, स्थिति और नाश कर्म संस्कारों पर है। ईश्वर को कोई मदा- खलत इसमें नहीं है । जितना बाहिफाज़त एमाल होकर जिन्दगी वसर करोगे उतना ही ज्यादा अरसा जीवन रहेगा। जितना पाप कर्म के जाल में लपेट खाओगे उतना ही जल्दी शरीर नाश हो जावेगा यह अच्छी तरह से विचार कर लेवें । ईश्वर सतसंग प्रीति बख्शें और अपने जीवन को नमूना बनावें । प्रेमी जी शूर- बीर होकर अपनी जिन्दगी को दूसरों के वास्ते सुखदायी बनाओ । ईश्वर समर्थ देवें ।

८८. कर्त्तव्य पथ की याद-

प्रेमी जी ! हमको अपने हृदय में ही समझें। जो सत उपदेश तुमने श्रवण किये हैं । उनको अमली जीवन में प्रगट करें। समता की रोशनी को फैलाने की कोशिश करें। जिससे ममता का अन्धकार नाश हो जावे बड़ी कुरबानी की मन्जिल है मगर

आखिर समर (फल) हमेशा की खुशी है । यह संसार एक तिलस्सम (जादू) है। जब तक एक मरकज़ का अकीदा (विश्वास) धारण न किया जावे तब तक ख्वाहिशात, लजात और महसूसात की गिरफ्तारी मौजूद रहती है जो इस जीव को गहरा अजाब (संकट) है इस अश्वर्ज अन्धकार से छूटने के वास्ते जो रास्ता तुमने स्वीकार किया है, वही आसान से आसान है। यानी दिन व दिन आत्मक उन्नति करनी और लोक सेवा को धारण करना, पर उपकार को धारण करने से खुदगर्जी जो गहरा अजाब है नाश हो जाता है। प्रेम जो असलो जीवन और खुशी है हासिल होता है। दुनिया एक कोशिश की जगह है हर वक्त सत पुरुषार्थ धारण करके असली खुशी को हासिल करें। जो तुम्हारा असली स्वरूप है । तमाम कायनात एक आत्म शक्ति के इर्द-गिर्द (आसपास) चक्कर लगा रही है । इस वास्ते इस चक्कर से खुलासी पाने की खातिर मरकज की तलाश करें। जो अभ्यास तुम को हासिल हुआ है इसको अमल में लायें। दीगर तमाम कस्वा के प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी । ईश्वर सब को समता बुद्धि देवें । तमाम शहर के निवासियों को ये प्रार्थना करनी कि सतसंग में एकत्र होकर जरूरी देश और धर्म की रक्षा का विचार करें। ईश्वर का हुक्म जो इस कालब से आ रहा है, वही सेवा में अर्ज़ की जा रही है इसको धारण करके अपने जीवन को सफल कर लेंवें । दीगर तमाम बुजुगों को आशीर्वाद कहनी और ये प्रार्थना करनी

कि हर एक प्रेमी अपने जीवन का सुधार करें। सत सेवा धारण करे हमारी ये ही भीख है। इसी से प्रसन्नता है और आईन्दा हाजिर कालिब दर्शन ईश्वर आज्ञा पर मुनहसर है। खबर नहीं एक पलक की। समता हिन्दु धर्म की जड़ है। इस को पूरा-पूरा पानी देवें। तब फिर सूखा हुआ दरखत समर (फल) लायेगा ईश्वर सबको समता बुद्धि देवे। दुबारा आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर सत सेवा देवे।

८६. परउपकारी जीवन और निश्चय जनक सतो गुणी भावनायें-

प्रेमी जी ! इस संसार में असली जीवन परउपकार ही है। इस से मन को शान्ति प्राप्त होती है। हर वक्त आपस में एकत्र होकर सत विचार से लाभ उठाया करें। ईश्वर चित्त में शान्ति और अपने चरणों की प्रीति देवें। अपने निश्चय से कामयाबी है। इसमें कोई हर्ज नहीं है, जिस जगह से किसी को तसल्ली होवे, गुण ग्रहण करे। आखिर फिर सचाई ही रहेगी। जैसे ईश्वर की आज्ञा हर वक्त खुश होना चाहिए। अपनी जिन्दगी को नमूना बनाना चाहिए। यही रास्ता नेक लोगों का है। ईश्वर आनन्द देवें।

६०. सत् बोध प्राप्ति ही जीवन की सार है।

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सत आनन्द देवें। प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर नित्य रखयक हों।

प्रेमीजी ! शहीदी के मार्ग पर चलना निहायत ही खुशनसीबी है, जिसको ऐसी बरकत प्राप्त होवे । इस नाशवान संसार में सत बोध प्राप्त कर लेना ही असली जीवन की सार है । प्रेमी जी अगर ऐसे उच्च संस्कार हृदय रूपी मन्दिर में प्रज्वलित हुए हैं तो उनको नित्य ही अधिक प्रकाशक करने का यत्न करना चाहिए। क्योंकि यह संसार की मिलावट अकसर अन्धेरा पैदा कर देती है । खूत्र गहरी खोज से संसार को समझ कर असली मौज की तहकीकात (खोज) करें। तब ही सही अंजाम को हासिल कर सकेंगे। प्रेमीजी ये शारीरक ममता अधिक अन्धकार है । इसको अबूर पाना किसी महागुणी का कर्त्तव्य है । सो प्रभु तुमको सत परायणता में निश्चय देवें । इस तरह स्वभाव को तबदील करते-करते एक दिन प्रेम के रंग में ज़रूरी जीवन रंगा जाता है । ईश्वर सत पुरुषार्थ देवें। अपने सत विचार से खबर करते रहा करें ।

६१. अपने जीवन को प्रकाशमयी बनाना ही मनुष्य जन्म का परम लाभ है।

आशीर्वाद पहुँचे, संसार की गरिदश को सही विचार करके हर वक्त अपने आपको निर्मल शान्ति के मार्ग में दृढ़ करना चाहिये। इस नाशवान शरीर की यात्रा में निहायत उच्च कर्त्तव्य को पालन करके अपने जीवन को प्रकाशमयी बनाना चाहिये । यह ही मनुष्य जन्म का परम लाभ है । ईश्वर नित्य

ही सत परायणता में दृढ़ विश्वास देवे। जीवन की निर्मल सार यही है कि समता के सही अनुयायी वन करके अपने आपकी पहले रहनुमाई करनी फिर दूसरों के कल्याण में यत्न करना। यही परम कर्त्तव्य है। ईश्वर ऐसा ही दृढ़ पुरुषार्थ देवें।

६२. बर्गर अमली जीवन के असली खुशी हासिल नहीं हो सकती-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम प्रेमियों को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् धर्म प्रीति देवे। प्रेमीजी अपने निश्चय को पूर्ण दृढ़ रखना चाहिये। इसी में कामयाबी है। कल इस जगह संगत ने यज्ञ किया है। प्रेमीजी ! अन्धकार बहुत है। धर्म की तरफ बिलकुल लोगों की रुचि नहीं है। प्रचार सुनकर काफी लोगों को तसल्ली आ रही है। अब बर्ग र अमली जीवन के असली खुशी हासिल नहीं हो सकती। हर वक्त कोशिश करते रहें। कुछ न कुछ भला ही होवेगा प्रेमीजी जिन्दगी को कुरवानी के रूप में पेश करते रहा करें। इसी से लोगों के दिलों में धर्म का जज्बा बढ़ेगा। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। सतसंग का प्रोग्राम बनाये रखना।

६३. पवित्र आचरण से खुदगर्जी और कामना के अन्धकार का नाश होता है।

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला, ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। तमाम

परिवार को आशीर्वाद कहनी। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् अनुराग देवे। प्रेमीजी नित्य ही सच्ची खुशी की तलाश करनी चाहिये। जो हर समय पूर्ण और गैर तबदीली है। वो एक जीवन शक्ति आत्मा ही है। जब तक मन अन्तर से दृढ़ विश्वासी उस मालके कुल का न होवे तब तक सही कदम जिन्दगी में उठाना और असली अंजाम जिन्दगी को हासिल करना अति मुश्किल है। इस वास्ते अपने आप में पहले पवित्रता धारण करनी ही सर्व उन्नति है। क्योंकि मन पवित्र होने से ही उच्च कार्य करने के लिए दृढ़ हो जाता है। उच्च कार्य वह ही होता है। जो महज प्रभु आज्ञा में निश्चित किया जावे। और अपनी गर्ज को छोड़कर बिलकुल सही फर्ज़ करके अमल में लाया जावे। ऐसी धारणा ही सर्व कल्याण का स्वरूप है। ऐसा कार्य करो जो तुम्हारी जिन्दगी और आखरित के वास्ते निर्भय खुशी के देने वाला होवे। ऐसा कार्य करो जो तमाम दुनियाँ में सुख की रोशनी प्रकाश करने वाला होवे। ऐसा यत्न करो जिससे मन की नारवा खुशियाँ खत्म हो जावें और सही तसल्ली जीवन में हो जावे। गमी को हर वक्त नज़दीक करके सही खुशी को तलाश करो। यह ही सत् पुरुषों का राज (भेद) जीवन है। हर वक्त आली हौसला होकर जिन्दगी के अंजाम की तहकीकात (खोज) करें। ये जीवन विकारों के वास्ते नहीं है। बल्कि विकारों की जड़ को उखाड़ने के वास्ते है। प्रभु बल, बुद्धि देवें। और गुरु वचन का विश्वास प्राप्त होवें। तमाम माताओं

और बच्चों को आशीर्वाद कहनी। तमाम प्रेमियों को ये पत्रका सुनानी और गाहे बगाहे पत्रका द्वारा सत् उपदेश हासिल कर लिया करें। अपना प्रोग्राम दृढ़ करते रहें। मालिक की मौज सुख के देने वाली है। ईश्वर सत् अनुराग देवे। और गुरु भक्ति प्राप्त करें। अपनी जिन्दगी एक पाकीजा रूप में पेश करें। बड़ी ज़रूरत है। इस वक्त पवित्र आचरण की दुनियाँ में खुदगर्जी और अति कामना का अन्धकार छा रहा है। इस वास्ते कोशिश करो अपने आपको पवित्र करने की। प्रभु बुद्धि बल देवें। हर वक्त हमको हृदय में रखें। सब प्रेमी सत् मार्ग पर चल कर असली खुशी को हासिल करें। प्रभु सहायक होवे। अभ्यास जरूरी किया करें।

६४. साबत कदमी से जीवन का सही मकसद प्राप्त हो सकता है।

आशीर्वाद पहुंचे। ईश्वर नित ही सत अनुभव बख्श, जिन्दगी का मुद्दायही (मतलब) है कि अपने आप में जजबाते कुर्बानी पैदा करके देश व धर्म के वास्ते रोशन चिराग बनें। हर वक्त नापयेदार खुशी को त्याग करके असली गमी को दिल में जगा देकर जीवन आनन्द की तहकीकात (खोज) करें। ये मानव जन्म दुर्लभ है। जिन्दगी का मय्यार (स्तर) बहुत बुलन्द (ऊँचा) है। सीखने से कुछ बन नहीं सकेगा, बल्कि साबत कदम होकर अपने सही मकसद को हासिल करें। ईश्वर सद्बुद्धि देवे। तमाम संगत

को दुबारा आशीर्वाद कहनी। बच्चों वाला ख्याल तरक (छोड़) कर देवें। अमल के मैदान में अपने आप को खड़ा करें | ईश्वर गुरु बचन का विश्वास देवे।

६५. सदाचारी जीवन और ईश्वर भक्ति को धारण करने की तलकीन (अनुरोध)-

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला। ईश्वर सत श्रदा देवे। इन बातों को हर वक्त याद रखना चाहिए। दुनियाँ में सदाकत (सच्चाई) पसन्द बहुत थोड़े होते हैं। आम जनता माया की गिरफ्तारी, झूठ, अन्धकार को पसन्द करती है।

(२) सदाकत (सच्चाई) पसन्द लोग अपने रास्ते को साफ करते हैं। उनको दूसरे लोगों से मतलब नहीं।

(३) जिस वक्त मुस्तकिल होकर सच्चाई के मैदान में जो कोशिश करता है, उस वक्त दूसरी जनता खुद उसके पीछे चलती है। किसी को सुधारने की खातिर अपना खुद सुधार किया जावे तब बेहतरी हो सकती है। तुम तमाम प्रेमियों को समता के असूल अपनाने की कोशिश करनी चाहिए जिससे तुम्हारी जिन्दगी बहुत आला बन जावे और दूसरे लोगों को भी सुख मिले। प्रेमी जी सत्संग का प्रोग्राम दृढ़ रखें। ईश्वर खुद बखुद तरक्की देवेंगे। सच्चाई के रास्ते में चलने में बेशक तक- लीफ तो बहुत होती है। मगर उसका समर (फल) परम सुख के देने वाला है। इस दुनियाँ में बगैर सतमारग के चलने के कभी भी असली खुशी को हासिल नहीं कर सकता। हर वक्त दूसरे

को भलाई करनी चाहिए और अपने सच्चे धर्म समता में हर वक्त कुर्बान होने की कोशिश करो। इस वक्त धर्म की जो जाहिरी हालत देखते हो। वह असली धर्म से बहुत पीछे है। यानी खुद गर्ज उपदेशकों ने असली तालोम को अलोप कर दिया है खुद भी अन्धकार में अत्याचार करने लगे और जनता के लिए भी पापकर्म का रास्ता खुला कर दिया है। ऐसे नाजुक जमाने में बहुत सी कुर्बानी से जागृति होवेगी। तुम सच्चे धर्म- पुत्र होकर जरूरी सेवा का सबूत देवें। प्रेमी जी जिस इन्सान के अन्दर असली धर्म का विश्वास नहीं और अपने देश की सेवा का भाव नहीं, वो इन्सान मत जानें बल्कि हैवान है। -अपनी खुदी में गल्तान है हर वक्त कोशिश करनी चाहिए नेक कर्मों की। सादगी, सेवा, सत्य, सत्संग और सत सिमरन, इन नियमों को हर वक्त अपनाते रहें, आत्म विश्वासी बनें, अपनी ज़िन्दगी में देशभक्ति हासिल करें। ये चाम का शरीर आखिर अकारथ हो जावेगा प्रेमी जी नित ही असली जिन्दगी को हासिल करो। अपनी आदत को काबू करके पर उपकारी बनाओ। समता की रोशनी को फैलाओ, जिससे लोगों को शांति मिले। ईश्वर विश्वास, देश सेवा, सदाचारी जीवन और ईश्वर भक्ति को हर वक्त धारण करते रहे। इन्हीं सतनियमों से मन शुद्ध होकर आत्म परायण हो जाता है और इस संसार से असली खुशी लेकर जाता है तमाम जनता को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी, ईश्वर सबको सतबुद्धि देवे और समता का जीवन बख्शे।

६६. जिम्मादार जिन्दगी का एहसास-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला, ईश्वर सतबुद्धि देवेा तुम्हारी जिन्दगी जिम्मेदारी वाली है। देश सेवा और धर्म रख्या का विचार करें। हर वक्त अपनी जिन्दगी को नमूना बनावें, हमको अपने हृदय में रखें। प्रेमीजी तुम होनहार और सदाचारी बनो और जिन्दगी के बोझ को उतारो। ज़रूरी अभ्यास किया करें। पुस्तकों का अध्ययन किया करें, सतसंग को तरक्की देवें। ईश्वर शान्ति देवे।

६७. अपने जायज़ फर्ज को समझ लेने से अशान्ति नाश हो जाती है-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सबको सतबुद्धि देवे, हर वक्त समता के प्रचार की कोशिश करें। इस वक्त दुनियाँ की शांति इसी ही तरीका से हो सकती है, ईश्वर का हुक्म ही ऐसा है। प्रेमीजी अगर हर एक इन्सान अपने जायज़ फर्ज को समझ लेवे तो फिर अशान्ति नाश हो जाती है मगर खुद गर्जी के दामन में आकर हरएक जीव धर्म से पतित हो जाता है, तब दुनियाँ में अशांति फैल जाती है। गुणी पुरुष अपने जायज़ फर्ज़ को समझ कर अपने जीवन को रास्ती (सच्चाई) की तरफ रागिब करते रहते हैं और लोगों की भी सेवा करते हैं, ऐसा ही निश्चय तुमको होना चाहिए। ईश्वर सबको सतबुद्धि देवे, प्रेमीजी ऐसा

निश्चय हर वक्त धारण करें गुरुवचन की पालन करनी। सत्संग प्रीति, परउपकार सेवन, आत्मक उन्नति की खातिर रोजाना अभ्यास। तुम्हारो श्रद्धा तुमको अधिक प्रताप देवे जिससे दुनियाँ में एक आश्चर्य जीवन को धारण करें, संसार मन की कल्पना में स्थित है, इस वास्ते जिसकी कल्पना शुद्ध है। उसको हर पहलु से सुख नसीब है। बहुत सी देश सेवा तुम प्रेमियों के सिर पर है, हर वक्त कोशिश रास्ती (सच्चाई) की करें, तमाम अपने गुरु भाइयों को तम्बीह (सूचित) करनी कि तुम लोगों ने एक मुश्किल जीवन वाले के साथ तुअलकात (सम्बन्ध) पैदा किये हैं, अब सोने का वक्त नहीं है बल्कि जागने का वक्त है। सतसंग की प्रीति पैदा करो। तुम प्रेमियों की जिन्दगी बहुत सी कुर्बानी वाली होनी चाहते हैं। ईश्वर विश्वास लोक सेवा, और मौत की याद को कभी भी न भुलाना, प्रेमी जियो तुम धर्म के रख्यक और देश सेवक बनो, तमाम प्रेमियों को वाज्या (पता) होवे कि अभी भी तुम भूले हुए हो, तुमने अपनी जिन्दगी की बागडोर एक मुसाफिर के हाथ दी है। अब मुश्किल को बरदाश्त करो, अब जिस मैदान समता की तरफ आये हो उसमें मर मिटो तब अवदे हयाती (हमेशा का जीवन) को पाओगे। ईश्वर समर्थ देवे, सतबुद्धि देवे, सत विश्वास देवे।

६८. सदाचारी और परउपकारी जीवन की जरूरत-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सत् धर्म देवे, ईश्वर

देश सेवा और सदाचारी जीवन बख्शे, ईश्वर सबको संतसंग प्रीति बख्शे। प्रेमीजी लिटू चर तो काफी है। सिर्फ इसको वाजे (प्रवार) करने की जरूरत है। बुनियादी असूल जो सचादार के हैं उनका अच्छी तरह से प्रचार करें। समता की हिदायत हर एक को करें। यह ही हुकम ईश्वर का है। समता की रोशनी को फैलायें। तमाम धर्मों का फलस्फा समता ही है। मगर आज अन्धकार के ज़माना में नुकता निगाह ही भूल गये है। बहुत कोशिश करो।

इस संसार में आने का यथार्थ लाभ उठावें। आत्मक उन्नति असली धर्म है अपना जीवन सदाचारी बनावें। परउप- कार को धारण करें। जवान और दिल में मोहब्बत को जगह देवें। इन्सान ही फरिश्ता बन सकता है, अगर कोशिश नेक होवे तो। अगर प्रेमीजो तुमने सच्चा रिफार्मर जाना है तो अपने जीवन को नमूना बनावें। इस वक्त अमली जीवन की जरूरत है। बातूनी लोगों ने आगे ही दुनियाँ को जुल्लील कर रखा है। तमाम फिरके और तमाम सद्पुरुषों का समता ही जीवन है। इसको भूलकर बड़ी से बड़ी मुसीबत की तरफ जा रहे हैं। तुम प्रेमियों ! इस चिराग को हाथ में लेकर लोगों के हृदयों को रोशन करो। खुशनसीबी इसी में हैं।

६६. असली जिन्दगी सत् की तलाश है-

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला, ईश्वर सद्बुद्धि देवे, तमाम

संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। प्रेमीजी सतसंग का ज़रूरी प्रोग्राम पूर्ण करना और लोगों को प्रेरणा करते रहना इससे कल्याण होवेगी। और हर वक्त हमको हृदय में देखें। हर वक्त धर्म मार्ग में तरक्की करें। इस जिन्दगी का लाभ यही है। प्रेमीजी, हर वक्त अपनी जिन्दगी को नमूना बनावें। समता जो असली फलसफा है। इसको खुद अपनावें। और दूसरों तक वाज़ह करें | अभ्यास ज़रूरी किया करें। असली ज़िन्दगी सत्य की तलाश है। इस वास्ते कोशिश करते चलो। मालिक सुख देवेगा। तमाम प्रेमी अपनी ज़िम्मेदारी से तब सुबक दोष हो सकते हैं। जब अपने जीवन को सही मैनों में गुरुबचन में मुस्त- गर्क करें। ईश्वर श्रद्धा और समर्थ देवें। हमेशा सत अनुराग बना रहे। तमाम संगत को दुबारा आशीर्वाद कहनी।

१००. सच्ची कुरबानी के बगैर जागृति पैदा नहीं हो सकती-

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवें। तमाम संगत को आशीर्वाद वहनी। प्रेमीजी जो विचार किसी की समझ में न आवे, उस पर ज्यादा वाद-विवाद नहीं करना चाहिए। तुम्हारे वास्ते मुख्य साधन, सादगी, सेवा, सत्य, सत्संग और सत् सिमरण ही हैं। आपस में प्रेम करें। सहन शक्ति पैदा करें। प्रेमियों की सच्ची कुरबानी के बगैर धर्म की जागृति नहीं हो सकेगी। हर वक्त समता के प्रेमियों को बर्दाश्त चाहिए। अन्दरूनी (दिल से) हमदर्दी का भाव रखना चाहिए।

जुल्म का इन्सदाद (रोकथाम) प्रेम से होता है। हर दिल अजीज (हर एक का प्यार) बनें। किसी पर नजायज़ जबर (दबाव) बिलकुल नहीं करना चाहिए। प्रेम से सब काम को सरेअंजाम (पूर्ण) देवें। ईश्वर सत् बुद्धि देवे।

१०१. ज़िन्दगी को धर्म का सिपाही बनाओ।

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला। ईश्वर सबको सत् बुद्धि देवें। हर एक छोटा बड़ा, माई भाई बच्चों को आशीर्वाद 1 प्रेमीजी समता की रोशनी को परज्वलित करना तुम्हारा परम धर्म है। समता के जो असूल हैं उनको पहले खुद धारण करें। फिर दूसरों को प्रेमपूर्वक समझावें। जिससे सबको शान्ती प्राप्त होवे। इस वक्त हालत जमाना नाज़ ुक है। धर्म का प्रचार जरूरी सत्संग द्वारा किया करें। अपनी जिन्दगी को हर पहलू से प्रेम वाली बनावें। दुःख बर्दाश्त करने वाला जीवन बनावें। दुःख से असली सुख मिलता है। जिन्दगी जो मसनूई (बनावटी) है यही कैद खाना है। हर वक्त अपने ख्याल को वशाश (प्रसन्न) बनावे | ईश्वर को आज्ञा में दृढ़ निश्चय धारण करें। देश सेवक बनें। आपने अन्दर ऐसी प्रेम की धारणा करें जिससे तुम्हारी जिन्दगी खुद और दूसरों का भला होवे। पुस्तकें विचार किया करें। ईश्वर आज्ञा से एक माह से जंगल में स्थित हैं। मालिक जीवों को शान्ति देवे। और सबमें समता धर्म का विश्वास प्रगट होवे। तमाम प्रेमी जरूरी सत्संग

द्वारा एकत्र हुआ करें। अपनी जिन्दगी को धर्म का सिपाही बनाओ। इस दुनियाँ में आने का फल यही है कि असली खुशी नसीब होवे। और असली खुशी मार्ग धर्म में है। ईश्वर सत निश्चय देवे। सबको सत प्रेम मिले।

१०२. जीवन की रक्षा-

ईश्वर सत् बुद्धि देवे। जीवन शक्ति ही नारायण का रूप है। जो जानबूझ कर जीव हलाक (मारे) किये जाते हैं। उनकी सजा मिलती है। और जो लाइलमी में नाश होते हैं। उनका कोई पाप नहीं। नीज़ दीगर जो बनास्पति है वह जिन्दगी का आधार है। इस वास्ते महान् पुरुषों ने नीति कायम की हैं कि जो खून वाली और स्वास लेने वाली चीज है, उसकी रक्षा जरूरी है। जीवन शक्ति का कभी नाश नहीं होता सिर्फ जिस कालब (शरीर) में जो अहंकार सरूप जीव है, उसको रक्षा करने का विचार है। एक लाइलमी में कोई दोष नहीं। दूसरा स्वांस वाली चीज़ की रक्षा जरूरी है। ईश्वर सत् बुद्धि देवें। जो स्वाहिश करके कर्म किया जाता है, उसका बन्धन है। जो लागज़ (निष्काम) होकर कर्म किया जाता है उसका कोई पाप नहीं। निष्काम कर्म और सकाम कर्म का विचार कर लेवें। | तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे।

सत्संग सम्बन्धी पत्र

महा मन्त्र

ओम् ब्रह्म सत्यम् निरंकार अजनमा, अदवंत पुरखा।

सर्व व्यापक कल्यान मूरत परमेश्वराये नमस्तं ॥

सत्संग सम्बन्धी पत्र

१. 'धर्म स्थान पर सत्संग सम्मेलन में हाज़िर होने का आदेश।'

सत आज्ञा श्री सत् गुरुदेव जी महाराज ! प्रेमपूर्वक चरण बन्दना स्वीकार करें। श्री सत् गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं आप स्वीकार करें और घर में सारे परिवार को आशीर्वाद फरमावें। आपकी सेवा में पहले भी श्री महाराज जी के मुख्य वाक्य तहरीर करके रवाना किये गये थे। उम्मीद है प्रेमपूर्वक विचार करके आनन्दित हुए होंगे। सेवा में प्रार्थना है कि श्री प्रभु जी की आज्ञा से और श्री महाराज जी की दया दृष्टि से सत्संग सम्मेलन जगाधरी में १३ कार्तिक मुताविक (अनुसार) २६ अक्टूबर को मुकरर्र हुआ है। श्री महाराज जी फ़रमाते हैं कि आप प्रेमी अपने फर्ज को समझते हुए अपनी कल्याण की प्राप्ति की खातिर अपने इस नये धर्म स्थान पर एक दिन पहले ज़रूरी एकत्र होकर सत्संग विचार का लाभ उठावें जी। श्री महाराज जी शुरू कार्तिक जगाधरी में तशरीफ ले जावेंगे। आप वापसी पत्र द्वारा ज़रूरी अपने प्रोग्राम से मृतला (सूचित करें। आप ज़रूरी पधारकर सत् विचार द्वारा संगत को निहाल करें और सेवा करके लाभ उठावें। आती दफा अपना विस्तरा और एक छोटा बर्तन, हाथ धोने वाला

हमराह लावें। श्री महाराज जी दोबारा आशीर्वाद फरमाते हैं। ईश्रर नित रखियक होवें जी। शहर जगाधरी में अड्डा ताँगा के नजदीक चौक बाजार है उस जगह गोकुल चन्द की दुकान से समता योग आश्रम पूछ लेना। तांगा भी वहाँ तक जा सकता है।

२. सत्संग में हाज़िर होने की ताकीद-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम प्रेमियों को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। वाजय होवे कि सम्मेलन ४ कार्तिक मुताबिक २० अक्टूबर को मुकर्रर हुआ है। २, ३ कार्तिक को सत्संग होवेगा और ४ कार्तिक को आम लगंर (सामूहिक भोजन) होवेगा। इस वास्ते सब प्रेमी सत्संग के समय में पहुँच कर लाभ उठावें यानी यकम कार्तिक को स्थान पर हाज़िर होना चाहिए। अपने प्रोग्राम से मुत्तला करना ईश्वर इच्छा से आज काला गुजरां में आये हैं। आखिर भादों तक रावलपिंडी पहुंच जायेंगे ! इस हफ्ता पत्रका कालागुजरां में लिखनी। यह सम्मेलन सत्संग की प्रेरणा से मुकर्रर हुआ है इस वास्ते सब प्रेमियों की स्वतन्त्र रूप में हाज़री होनी जरूरी है ईश्वर सत बुद्धि देवे।

३. सत्संग विचारों के श्रवण मनन से निर्मल कर्त्तव्य की धारणा दृढ़ होती है-

सत नाज्ञा श्री सत गुरुदेव जी महाराज प्रेमपूर्वक ब्रह्म

सत्यम् स्वीकार करें। श्री सत गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं। आप स्वीकार करें और श्री मान भाई साहब परमार्थी जी और दीगर सब संगत को आशीर्वाद फरमायें। आपके सत्संग समाचार द्वारा आगाही हुई। प्रभु जी हम सबको संत विचार धारण करने की दृढ़ता बख्शे जी। सत विचार द्वारा ही सत कर्म और सत यत्न की दृढ़ता हो सकती है जब तक सत यत्न हम दासों के अन्दर नहीं आवेगा तब तक निर्मल कर्त्तव्य को हम धारण नहीं कर सकते। निर्मल कर्त्तव्य की धारणा सत्संग के श्रवण मनन से ही हो सकती है। नित्य हो सत्संग में जाकर प्रेमभाव की दृढ़ता को दृढ़ करना हम सबके लिए लाज़मी है। ईश्वर सबको निर्मल सुमति बख्शें। श्रीमहाराज जी ६ जनवरी को तरनतारन की तरफ तशरीफ ले जावेंगे। आप आईन्दा इस पते पर कुशलता और हालात से मुत्तला करना। वमुकाम तरनतारन जिला अमृतसर, मारफत श्रीमान् भाईसाहव अनन्तराम जी कन्दरा वकील। श्री महाराज जी दुवारा आप सब प्रेमियों को आशीर्वाद फरमाते हैं। स्वीकार करें। ईश्वर नित रखियक होवें सब संगत को हाथ जोड़कर दास की तरफ से ब्रह्म सत्यम् फरमावें।

४. सत्संग में एकत्र होकर सत विचारों को दृढ़ता को दृढ़ करते हुए मानसिक शुद्धि प्राप्त होती है-

श्री सत गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं। आप स्वीकार करें आपके प्रेम से तहरीर करदा सत्संग समाचार द्वारा

सब हालात से आगाही हुई। श्री महाराज जी सब संगत के प्रेमियों को आशीर्वाद फ़रमाते हैं। प्रेमपूर्वक आप सब स्वीकार करें जी। ईश्वर हम सब को निर्मल सुमति देवें ताकि इसी तरह प्रेम सहित एकत्र होकर सत विचारों की दृढ़ता को दृढ़ करते हुए मानसिक शुद्धि को प्राप्त कर सकें। मानसिक शुद्धि द्वारा ही श्री गुरु मुख वाक्य अमृत को सच्चे माइनों में पान कर सकते हैं। सेवा में श्री गुरु बचनों को तहरीर किया जा रहा है। प्रेम पूर्वक विचार करके संगत को निहाल करें। श्री महाराज जी की दया दृष्टि नित्य अंग संग जाने। ईश्वर हम सब को सत श्रद्धा और सत विश्वास की दृढ़ता बख्शें। श्री महाराज जी दुवारा आप सब संगत को आशीर्वाद फ़रमाते हैं स्वीकार करें। दास की तरफ से सब प्रेमी भाई साहेबान हाज़िर संगत को हाथ जोड़कर ब्रह्म सत्यम् फरमावें। ईश्वर नित ही सहायक होवें ताकि नित ही शुभ कर्मों को करते हुए जीवन यात्रा को सफल करें।

५. सत्संग और अभ्यास में समय देने की तलकीन-

आशीर्वाद पहुँचे, ईश्वर सत शान्ति देवे, तमाम संगत को वाजय होवे कि ऐसे संकट के समय में प्रभु विश्वास और प्रभु कृपा का भरोसा रखते हुए समय व्यतीत करें। प्रभु दीन दयाल की शायद कृपा हो जावेगी। और शान्ति का समय निश्चय आ जावेगा। अपने दृढ़ विश्वास से हर वक्त प्रभु परायण रहें।

और सत असूलों को धारण करते रहें। सतसंग और अभ्यास में प्रेम से समय दिया करें। प्रभु की कृपा होवेगी हर वक्त गुरु आशीर्वाद अंग संग जानें और अपनी कुशल पत्रको लिखते रहा करें। ईश्वर समता बुद्धि देवे और कष्ट निवारण करे। हर वक्त प्रभु विश्वासी और सत सेवक भावना को धारण करते रहें। प्रभु कृपा अंग संग होवे। अपना जीवन सदाचारी और पर उपकारी बनावें। प्रभु नित ही सहायक हों, वापसी जवाब जल्दी देना ईश्वर सतश्रद्धा और प्रेम बख्शें।

६. सत्संग सम्मेलन श्रद्धालु प्रेमियों के लिये है

श्री महाराज जी फ़रमाते हैं कि जगाधरी पहुंचने की खबर प्रेमियों तक ही महदूद रखनी और कोई खास श्रद्धालू पूछे तो मुतला करें। सत्संग हफ्तावारी इतवार को हो सकेगा। इतवार को ही माताओं को सत्संग में आने की इजाजत होगी। खास प्रेमी कोई दर्शन करना चाहे तो शाम को आ सकता है। वैसे खास पाबन्दी की जरूरत है ऐसा न होवे कि बेकायदा लोगों का आना जाना शुरू हो जावे तो थोड़े दिन भी वहाँ ठहरना मुश्किल हो जावे। सब प्रेमियों को ऐसी इत्तलाह होनी चाहिए। सेवादार प्रेमी आ जा सकते हैं। बाकी संगत की हाजिरी पर सत्संग रोजाना के मुतालिक विचार होवेगा पहले डेढ़ हफ्ता मर्यादा सहित ही होना चाहिए आगे तुम सब प्रेमी खुद विचार लेवें। ज्यादा पब्लिक का आना जाना शुरू हो जावे तो सम्मे-

लन के वास्ते बाधक है अच्छी तरह से विचार कर लेवें। सब को आशीर्वाद पहुंचे।

७. वार्षिक सम्मेलन में हाज़िर होने का आदेश-

आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर सत शान्ति देवे। तमाम कुनवे को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर नित ही सत भावना देवे। ईश्वर आज्ञा से और संगत की प्रेरणा से सम्मेलन २२ अक्टूबर मुता- बिक सात कार्तिक को मुक्करर हुआ है। इस वास्ते आपको मुतला किया जाता है के चार रोज पहले दर्शन देकर सफलता हासिल करें। निहायत ही ज़रूरी है कि ऐसे मौकों पर हाज़िर होकर संगत का प्रेम बढ़ाना और अपने जन्म की कल्याण करनी। दुवारा सहवारा तहरीर किया जाता है कि ज़रूरी सम्मेलन के मोके पर दर्शन देकर सर्व कल्याण हासिल करें। प्रेमी बलराम जी को भी आशीर्वाद कहनी। और सम्मेलन के मुतालिक वाजय करना। नौजवानों को तो जुरूरी ऐसे उत्सव में हाज़िर होना चाहिए। ईश्वर आज्ञा से आजकल सराय सालह आये हैं। आज शायद छज्जियाँ के प्रेमी दर्शन देवेगें क्योंकि प्रोग्राम भेजा हुआ है। हरीपुर, उसमान, थोड़ा-थोड़ा समय देकर बाद में जल्दी ही सितम्बर तक गंगोठियां पहुँच जावेंगे। अपनी कुशल पत्रका का जवाब देना और प्रोग्राम से भी मुत्तला करनी। तमाम संगत की चाहना है। दर्शन जरूरी देना। काफी वक्त पहले ही तहरीर किया गया है इस वास्ते मुक्कररा मौके पर

जरूरी फ़रागत पाकर दर्शन सेवा से लाभ उठावें। ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तीन कार्तिक को जरूरी गंगोठियाँ पहुँच जावें। छः कार्तिक को सत्संग होवेगा। और सात कार्तिक को आम लंगर होवेगा। ईश्वर सत धर्म प्रतीत देवे।

८. सतसंग की विद्धि-

आपके प्रेम पत्र द्वारा दर्शन हुए। आपने बड़ा शुभ विचार लिखा है सत्संग शुरू करने का। समता की तालीन में तो सत्संग एक जरूरी नियम है। सिर्फ मोगा में इस काम को सरअन्जाम देने वाला कोई प्रेमी दिखाई नहीं देता था। इस वास्ते श्री महाराज जी ने उस वक्त चेतावनी आपको नहीं दी थी। अब चूँकि आपने खुद ही इस शुभ कार्य को आरम्भ करने का विचार किया है बड़ा अच्छा भाव जाहिर किया है। समता वादी सज्जन का पहला फर्ज यह है कि गुरू वाक्यों को सही रूप में अपनाने का यत्न करे। आप सत्संग हफ्ता वारी मुकम्मल रूप से शुरू करें। आप सब प्रेमियों को शामिल करने का यत्न करें। प्रभु नित ही सबको निर्मल विचारों की दृढ़ता बख्शें। जो नित ही सत मार्ग की तरफ ले जाने वाले है। गाह बगाह प्रेम पत्र द्वारा कुशलता से मुत्तला करते रहा करें। सत्संग शुरू करने का तरीका ये है कि पहले पांच दफा महा मन्त्र को सब प्रेमी मिल कर उच्चारण करें। फिर मंगला चरण जो कि ग्रन्थ समता प्रकाश हिन्दी (नया) के सफा ४१० पर है पढ़कर २ शब्द या

तीन चार शब्द ग्रन्थ में से प्रेम से उच्चारण कर के हो फिर खुला विचार करें। विचार करने के बाद आरती, समता मंगल का उच्चारण सब प्रेमी मिल कर करें। जो ग्रन्थ समता प्रकाश १२१६ सफे पर है। उम्मीद है समतावाद नित नियम गुटके आपको मिल गये होंगे । उनमें भी मंगलाचरण, आरती, समता मंगल दिये गये हैं। दुबारा आप सब प्रेमियों को श्री महाराज जी आशीर्वाद फरमाते हैं। स्वीकार करें। ईश्वर नित सहायक होवें ।

9. . सत्संग में शमूलियत से कल्याणकारी भावों की जागृति होती है-

श्री महाराज जी फ़रमाते हैं कि जो सत्सग हाज़री के प्रोग्राम को दृढ़ कर लिया है बड़ी अपने आप की उन्नत करने की भावना दृढ़ की है। इस से संगत का भी उत्साह और अधिक दृढ़ होता जावेगा । ऐसी कल्याणकारी भावना अधिक विशेष रूप में हृदय में निश्चल होवे । प्रभु नित ही सहायक होवें । तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी ईश्वर नित रख्यक होवें ।

१०. सत्संग में शमूलियत की तलकीन-

ईश्वर सतधर्म देवे, तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी । तुम अपने सत्संग में दृढ़ रहें ईश्वर खुद कामयाबी देवेंगे । हर

एक से प्रेम करें, समता का भाव दिल में धारण करें और लोगों को भी विचार सुनाया करें । ५१५० श्लोक और वाणी कलम बन्द हुई है जिससे हर एक को खुशनसीबी होवेगी। ईश्वर की आज्ञा पूर्ण हुई । हिन्दू कौम इस वक्त धर्म से पतित हो गई है। इस वास्ते जल्दी जल्दी एकता को धारण नहीं कर सकती । खैर तुम अपने जीवन का सुधार करें।

११. अपने निश्चय से कामयाब हैं।

अपने निश्चय से हो कामयाबी है, इसमें कोई हर्ज नहीं है जिस जगह से किसी को तसल्ली होवे । गुण ग्रहण करें । आखिर फिर सच्चाई ही रहेगी। जैस ईश्वर की आज्ञा । हर वक्त खुश होना चाहिए। यह ही रास्ता नेक लोगों का है । ईश्वर आनन्द देवे।

१२. सत्संग कायम करने का उपदेश:-

(१) आशीर्वाद पहुंच । पत्र मिला, ईश्वर सत धर्म विश्वास देवे। ईश्वर आज्ञा से अच्छा हो गया है जो सत संग कायम कर दिया है। इस से प्रेम बढ़ता हैं नीज़ तमाम संगत को आशी- र्वाद कहनी । प्रेमीजी एक तो जल्दी सत्संग की जगह तबदील ना करें ।

(२) सत्संग अभी तुम्हारे ही हाँ होवे तो ठीक है । तुमको तजुरबा ज्यादा है |

(३) पहले अपने तमाम प्रेमी एकत्र होकर सत् संग करें। फिर दूसरों को मुतला (खबर) करना। बच्चों वाला खेल 1 न बनाना जो बात करो मुस्तकिल (पक्के) तरीका पर करो। अभी मकान किराया वगैरा पर लेने की कोई जरूरत नहीं है। आगे जिस तरह संगत विचार करे। रावलपिंडी में सत्संग पूर्ण भाव से होवे तो जागृति ज्यादा हो सकती है । और प्रभुदयाल अच्छी कारवाई समझता है। इस वास्ते उस पर भी जिम्मेदारी डालें और इधर से भी पत्रिका लिखी जावेगी । नीज प्रेमीजी । ऐसी सत्संग की बुनियाद कायम करें। जिससे तमाम नाम जीवित हो जावे । ईश्वर सत् बुद्धि देवे। ये एक बड़ी जिम्मे- वारों और सेवा का काम है। तुम खुद प्रेम करोगे और सत्संग में समता के असूल सुनाओगे तो कई लोगों का भला हो जावेगा और एक माहवारी सतसंग आला दर्जे का रखें, जिस में गोलड़ा के प्रेमियों को खबर कर दिया करो। प्रभु दयाल को पता ही है । इस से ज्यादा प्रेम और वाकफियत बढ़ती है । इस काम को शुरू किया तो प्रेमी जी ! आला तरक्की करें । ईश्वर तुम सबको धर्म की प्रीति देवे । रावलपिंडी समत्ता समाज के प्रेमियों की वाज्या होवे, कि शहर में ऐसो धर्म की भावना को प्रगट करें जिस से समता का असर सबके अन्दर होता जाये । बच्चों वाली कारवाई न करनी। हर वक्त धर्म के मैदान में दृढ़ रहे तुम्हारा समता का लिट्रेचर (साहित्य) इतना है कि कोई मुकाबला नहीं कर सकता है। एक बात का विचार पूरण हो

चुका है। सिर्फ तुमको जागृत करना है। देखो फिर किसने लोगों के अन्दर प्रकट हो जावेगा। ईश्वर सबको अधिक प्रेम समता का देवे। और तमाम असूलों को दोहराया करें।

१३. सत्संग में सादगी की जरूरत-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सत् यदा देवे। तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सबको मार्ग धर्म में स्थिति देवे। प्रेमी जी ! किसी के सुधार की खातिर खुद कुरवानी करे, तब ही दूसरे को कुरवानी का चाव पैदा होता है। बाहिस्ता-आहिस्ता अपना सत्संग सम्मेलन बनाये रखें। इसी से प्रेम और समता बढ़ती है। ईश्वर विश्वास में परिपक्क होना चाहिए। और दिल व जान से लोक सेवा में निश्चित होना चाहिये। इसी से अन्तःकरण शुद्ध होता है। और प्रभु की महिमा चित्त में प्रगट होती है। हर वक्त नारायण आज्ञा को दृढ़ करना चाहिये। गोलक वगेरा सत्संग में बिलकुल नहीं रखनी। इसका असर अच्छा नहीं होता है। जैसा मुनासिव होवे आपस में विचार करके कर लिया करें। सादगी की जरूरत है। ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। इस न रहने वाली दुनियाँ में अपने आपको एक मुसाफिर जान कर सर्व सुखदायी जीवन धारण करना चाहिए। इसी में असली भक्ति है। ईश्वर सत अनुराग देवे।

१४. सत्संग प्रेम और अभ्यास से धर्म की जागृति-

आशीर्वाद पहुंचे। ज़माने की गरदिश अकसर दुखदायी है। मगर अपना शुभ करम सब हाल में सहायता करता है।

(१) तमाम प्रेमी अभ्यास जरूरी किया करें। और रोज़ाना घर में सत्संग भी पवित्र वाणी का किया करें।

(२) हफ्तावारी सत्संग में सब एकत्र हुआ करें। प्रभु का भरोसा रखें। वो ही शान्ति करने वाला है। तमाम देश में अग्नि प्रचण्ड हुई हुई है। ऐसे समय में जब चारों तरफ अन्याय ही अन्याय का स्वरूप प्रगट हो जावे, उस वक्त समता के असूल अपनाने ही शान्ति के देने वाले होते हैं। ईश्वर रख्या करे और शान्ति देवे। हर वक्त धर्म का विश्वास प्राप्त होवे। पाप करम का जब खात्मा होवेग। तब शान्ति होवेगी। इस वास्ते अपने आपको ईश्वर परायण बनावें। और एकता, प्रेम धारण करें। धर्म को साथी बनावें। इसी से कल्याण होवेगी। ईश्वर शुभ भाव प्रकाश करें। सब संगत के दर्शन का अभी समय नहीं है। प्रभु आज्ञा होवेगी तो हाज़िर दर्शन हो जायेंगे। वैसे ज्ञान रूप में हर वक्त हाज़िर जानें।

१५. सत्संग प्रीति और यकसूई क्लब (समस्थिति) -

ईश्वर सत धर्म देवे। सत्संग की कारवाई पढ़कर आनन्द हुआ। जो गरीबों को खातिर डिपो खोला है। ईश्वर तुमको

इससे भी अधिक श्रद्धा देवे। जरूरी समता के धर्म को प्रकाश करें। हमको हर वक्त अपने हृदय में समझें। जुरूरी सत्संग में हाज़िर हुआ करें | संस्कार अच्छे हो जावेंगे। अभ्यास करते रहा करें। मन आहिस्ता-आहिस्ता शान्ति पकड़ जावेगा। हर वक्त जीवन शक्ति का विश्वास रखें और सब कुछ उसका जल्वा (नज़ारा) देखें। ऐसी धारणा से मन में प्रेम आ जाता है। इससे यकसू (एकाग्र) होकर अपने दिल की आवाज को सुनता है। दिमाग में एक बड़ी रोशनी और खुशी का मम्बा (खजाना) है। प्रेमी जी हर वक्त नेक बनो। सेवादार बनो, ईश्वर विश्वासी बनो। और गुरु भक्ति को दृढ़ करके धारण करो। ऐसे निश्चय से मन शुद्ध होकर अपने मरकज़ (केन्द्र) में लीन हो जाता है। वापसो पत्र लिखते रहा करो।

१६. सत्संग प्रीति और लिट्रेचर (साहित्य) की हिफाजत-

ईश्वर सत्बुद्धि देवें, तमाम संगत को एक-एक करके आशी- र्वाद कहनी, ईश्वर सबको समता बुद्धि वखशे, प्रेमोजो हर वक्त असली धर्म को हृदय में धारण करें और दूसरों को भी हिदायत करें, आहिस्ता-आहिस्ता सब ठीक हो जावेगा। अगर सच्चाई का रास्ता मिल जावे तो कई चल कर सुख पायेंगे। इस वास्ते समता जो असली धर्म का स्वरूप है, उसको दृढ़ विश्वास देकर अपनाना चाहिए, इससे लोगों की बेहतरी हो जावेगी। सतसंग में पूर्ण प्रीति रखें और जनता को भी एकत्र किया करें, कुरवानी

से ही जागृति हो सकती है। अब सोने का वक्त नहीं है बल्कि हर वक्त धर्म विश्वासी होकर दूसरों को सुख देना और समता के भाव को समझाना चाहिए। सब को एकत्र होकर अपना जीवन सुखदायी बनाना चाहिए। ईश्वर आनन्द देवेंगे। सतसंग की कार्यवाई लिखा करो, समता के लिट्रेचर (साहित्य) की लाये- बेरेरी कायम करो जिससे पुस्तकें हिफाजत से रहें और पब्लिक को फायदा भी पहुँचे, मुताल्या के वास्ते हर एक को दिया करो। अगर दूसरे इलाके का कोई अधिकारी होवे तो उसको भी पुस्तकें दे देवें। जिससे धर्म की जागृति होवे। ईश्वर परम आनन्द देवे और सत् सेवा बख्शे।

१७. शुद्ध और सादा रीति से सम्मेलन की कार्यवाई-

आर्शीवाद पहुँचे, पत्र मिला। ईश्वर सत् श्रद्धा देवें, तमाम संगत को आर्शीवाद कहनी, हर वक्त प्रभु सत् मार्ग प्रतीत देवे। पता होवे कि अबके साल बैसाखी के दिनों में शायद गंगोठियां नहीं आ सकेंगे, क्योंकि इधर भी कुछ समय देना है। वाकी हमारी गैर हाजरी में बैसाखी का सतसंग निमित्त मात्र ही कर लेवें। यानी सिर्फ रावलपिण्डी के ही दो-चार प्रेमी एकत्र होकर के उस दिन सतसंग करें और आस-पास के लोग बुला लेवें, और कड़ाह-- प्रसाद बांट देना और ज्यादा भीड़ की ज़रूरत नहीं। जो प्रेमी जावे वह सतसंग शाला में ही निवास करें। पुष्पानाथ को पहले ही खबर दे देनी, वो सब लोगों को खबर दे देवेगा और तमाम

जिन्स वगैरा अन्दर पड़ी है किसी किस्म के तरदद की ज्यादा जरूरत नहीं। प्रेमीजी बड़ी कुरबानी की जरूरत है। ऐसे सिर्फ एकत्र होने से कुछ नहीं बन सकता, इस वास्ते जब तक कमजोरी है तब तक प्रण मुताबिक ही थोड़ा सम्मेलन कर लेवें, यानी अपना त्यौहार मना लेना। ज्यादा जोशो खरोश कुछ इतना असर नहीं रखता, जितना कि कोई ठोस काम न किया जावे। अभी उस जगह बहुत त्रुटियाँ हैं। यानी ब्राह्मणों का इलाका है। काफी कुरबानी के बगैर सही मानों में कामयाबी नहीं हो सकता है। आहिस्ता-आहिस्ता ही चलना कल्याणकारी हैं। ईश्वर सत अनुराग देवें। अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। तमाम | संगत को दुबारा आशीवाद कहनी।

१८. सत्संग में हाज़िरी की आवश्यकता का उपदेश-

श्री महाराज जी फरमाते हैं कि तुम्हारे विचारों को अनुभव किया गया, सो वाजय होवे के समता मार्ग में ऐसा उच्च कर्त्त व्य धारण करना हर एक प्रेमी के वास्ते ज़रूरी है कि जिस करके सही धर्म की जागृति हो। और सर्व का कल्याण होवे, जब समता में दुःख को प्राप्त करके दूसरों को सुख देना, निरादर को प्राप्त करके दूसरों को आदर देना, खेद को प्राप्त करके दूसरों से प्रेम करना। दूसरों के मानसिक दोषों का परित्याग करके अपने पवित्र आचरण से दूसरों की कल्याण चाहनी, अपनी अधिक विचारशील बुद्धि होते हुए भी दूसरे मन्द बुद्धि वालों से अधिक

नम्रता प्रेम से बरताव करना। अपने से दूसरों को नित ही श्रेष्ठ जानना और उनके गुण की धारणा करनी। अपने नित्य स्वभाव करके दूसरों से हित रखना और शन पन के मुकाबला में अधिक मित्रता से पेश आना ही निर्मल समतावादी पुरुषों का धर्म है। सो प्रेमीजी ऐसे मार्ग में निश्चित होते हुए तुमने किस भावना से सत्संग का त्यागपत्र लिखा है।

ऐ श्रेष्ठ बुद्धि वाले प्रेमी, तुम्हारे वास्ते ऐसा योग्य नहीं है कि ऐसे तुच्छ और मन्द विचारों को अन्तःकरण में जगह देवें। बल्कि बशाश वित्त हो करके सत्संग के प्रोग्राम को ऐसा दृढ़ करें जिससे राजधानी जैसी जगह में समता का स्वरूप प्रकाशक हो करके बहुत सज्जनों को लाभ होवे। प्रेमीजी जब स्वार्थ में तमाम अवस्था गुजर गई आप खुद महसूस करते हैं। तो अब परमार्थ का एक विशेष नियम जो सत्संग है। उसको निरमान और निष्काम भाव से अपनायें। इससे अपने आप का भी उद्धार है। और संगत का भी उत्साह बढ़ता है। बाकी यह विचार अपने चित्त से विलकुल निकाल देवें कि मेरी हाजुरी या विचार संगत को कुछ अच्छे नहीं लगते यह तुम्हारा अपना भर्म है। संगत के वास्ते तुम एक अधिक शिरोमणी प्रेमी है और संगत ऐसा निश्चय करती है कि तुम अपने निश्चय से सब प्रेमियों से अधिक हित करें। किसको मुतलिक कोई भ्रम धारण न करें। सब प्रेमी तो तुम्हारे जैसे शिरोमणी प्रेमियों के उत्साह के चाहतक हैं। तुमने यह भ्रम कैसे धारण कर रखा है। तुम्हारे

वास्ते ऐसा विचार बिलकुल योग्य नहीं है। बाकी जिस प्रेमी की गलतियों के बारे में लिखा है। उसका उद्धार भी संगत के प्रेम द्वारा ही हो सकता है। न कि नफरत से। सो इन विचारों को अच्छी तरह गौर करके मुताल्या (समझें) करें। तो फिर अपने श्रेष्ठ कर्त्तव्य को पालन करने का यत्न करें। गुनी पुरुषों का धर्म है कि श्रेष्ठ गुन की धारणा में अपना आप सब कुछ बलि- दान दे देवें। तब ही निर्मल धर्म प्रकाश करता है। तुम एक श्रेष्ट कुल के सपुत्र हो और श्रेष्ठ बुद्धि होते हुये, तुम्हारे वास्ते बिलकुल ऐसा योग्य नहीं है। कि सत्संग से अलहदगी इखत्यार करें। बल्कि इस प्रोग्राम को ऐसा दृढ़ बढ़ावे कि आम ममता की अग्नि में जले हुये मानुष ठण्डक को प्राप्त कर सकें। ऐसा परियत्न तमाम प्रेमियों के वास्ते अधिक जरूरी है। आगे तुम अपने स्वभाव के मुताबिक जैसा चाहें वैसा करें। इधर से जो प्रेमियों के वास्ते खास चेतावनी है। वो सिखया रूप में पेशकर दी है। आगे तुम खुद अपनी सही उन्नति और फर्ज़ को समझें। गुनी पुरुष तो अपने वास्ते संगतके जोड़ों की धूल साफ करनी भी खुशनसीबी जानते हैं। ऐसी नम्रता की धारणा ही सर्व कल्याण के देने वाली है। ईश्वर सुमत्ति देवे।

१६. सत्संग से धर्म की मर्यादा कायम है।

आशीर्वाद पहुंचे ! पत्र मिला, ईश्वर सत् धर्म देवें। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी ! प्रेमी जी तुम सत्संग को कायम

रखें। किसी की मर्जी हो अगर आवे या न आवे। बेहतरी हरएक ने अपनी करनी है। किसी पर एहसान नहीं मगर हिन्दू कौम के बखत (भाग्य) ही ऐसे हैं, कि कथनी में होशियार और अमल के मैदान में कतराते हैं। खैर तुम अपने प्रण को निभाते जावें। धर्म ही जीवन है। धर्म ही खुशी है। इस वास्ते हर वक्त धर्म का ही भरोसा रखें। ईश्वर सत् सेवा बख्शें। तमाम जनता को आशीर्वाद कहनी पत्रका लिखते रहा करें।

२०. सत्संग की स्थापना ज़िन्दगी का अमली स्वरूप है।

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर आनन्द देवे। प्रेमी जी सत्संग की बुनियाद जो डाली है। वो तुम्हारी ज़िन्दगी का अमली स्वरूप है। ईश्वर करे ज़्यादा उत्साह बड़े। सत्संग को तरक्की देखें। और खबर भी सब जगह दे दिया करें। अच्छे विचार किया करें, जिससे लोगों पर भी असर होवे। और माहवारी सत्संग में गोलड़ा से प्रेमियों को एकत्र करने की कोशिश किया करें। रावलपिण्डी एक बड़ा नगर है। इस जगह एक ऐसी कार्यवाई इखत्यार करो जिससे लोगों के अन्दर जाग्रति पैदा होवे। अपने तमाम प्रेमियों को प्रेम करके सम्मिलित करने की कोशिश करें। फिलहाल सिर्फ इकट्ठा बैठना शुरू करें फिर सादगी प्रेम को धारण करें। ईश्वर धर्म मार्ग में तरक्की देवें। हर वक्त समता की जागृति की कोशिश करें। ये तुम्हारा परम धर्म है। तमाम सगंत को आशीर्वाद कहनी, ईश्वर प्रेम देवे और सत् श्रद्धा देवे।

२१. सत्संग के लिए हदायात-

संगत आपस में प्रणाम या ब्रह्म सत्यम् कह कर बैठ जाया करें। पुस्तक को बिलकुल मथा (मस्तिक) टेकना मना है। और सिर्फ पुस्तकों को थोड़ी ऊँची जगह रखकर पाठक साधारण जगह ही बैठ कर विचार करे। और किसी किस्म की नुमायश या गद्दी लगाने की ज़रूरत नहीं है। इससे कमजोर बुद्धि वालों के अन्दर अक्सर अभिमान आ जाया करता है। इस वास्ते निर्माण भाव से ही पाठक बैठ करके पाठ या विचार किया करें। ये सब को वाजय कर देवें, कि अगर आसन लगाना होवे। तो सिर्फ पाठक के वास्ते कुशा या ऊन का आसन लगाना चाहिये। हर एक काम में सरलता और सादगी होनी अधिक जरूरी है। नुमायशों से परहेज करना चाहिये। इस से अन्तः-करण की शुद्धि प्राप्त नहीं होती है। बल्कि ईर्खा और अभि- मान पैदा होने का खतरा हो जाता है। ऊँच नीच का भेद सत्संग में नहीं होना चाहिए। बल्कि हर एक प्रेमी छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा सेवा का कार्य सरअंजाम देते हुये अपने आपको एक बदना सेवक ही जान कर सेवा करे तो ही समता के सही अनुयाई होने का वो अधिकारी हो सकता है। तबही सही धर्म की जाग्रति अपने आप में और दूसरों में हो सकती है। इस वास्ते आइन्दा आज्ञानुकूल ही सब कारज किया करें। ईश्वर सुमति देवे।

२२. सत्संग ही जीवन है।

ईश्वर सत् शान्ति देवे। हर वक्त नाम स्मरण में निश्चय होवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी और वाजय करना कि सत्संग एक जोवन है। और इस अन्धकार और मुसीबत के ज़माने में पूरण रखयक है। इस वास्ते हर एक प्रेमी जरूरी सत् संग में शामिल होकर आपस में प्रेम बढ़ावे। और धर्म की उन्नति करें। तुम्हारी सुरखरुई गुरु वचन के अपनाने से होगी। हर वक्त हमको हृदय में देखें। प्रेमी अधिक से अधिक कोशिश से अपने जीवन को निर्विकार बनावें। और ईश्वर परायणता हासिल करें।

२३. संगठन की सूरत –

ईश्वर सबको श्रद्धा देवे। वो दुनियाँ में कोई काम नहीं जिसकी कोशिश की जावे और सर-अंजाम न होवे। तुम समतावादी होकर अपनी जुर्रत (हिम्मत) को इतना बढ़ाओ कि तुम्हारे बाल -२ से ईश्वर की महिमा चमके। सिर्फ अपना आप बनाओ। हर एक प्रेमी को खबर दे दिया करो। प्रेम से प्रेरणा करें। इस तरह संगठन की सूरत बन जावेगी। ईश्वर आनन्द देवे।

२४. अपने आपको उन्नत करने की भावना-

श्री महाराज जी फरमाते हैं कि जो सत्संग की हाज़िरी के प्रोग्राम को दृढ़ कर लिया है। इससे बड़ी अपने आप की उन्नत करने की भावना दृढ़ की है। इस से संगत का भी उत्साह अधिक दृढ़ होता जावेगा। ऐसी कल्याणकारी भावना अधिक | विशेष रूप में हृदय में निश्चल होवे। प्रभु नित्य ही सहायक होवें।

धर्म सम्बन्धी पत्र

महा मन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार अजनमा, अदद्वैत पुरख।

सर्व व्यापक कल्यान मूरत परमेश्वराये नमस्तं ॥

धर्म सम्बन्धी पत्र

१. अमली सबूत ही धर्म की जागृति है।

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिले, सबको ईश्वर सत शान्ति देवे। प्रमीजी अभी प्रोग्राम मुकम्मिल नहीं हुआ था। इस वास्ते जवाब में देरी हुई है। प्रेमियों की प्रेरणा से और ईश्वर आज्ञा से सम्मेलन सात कार्तिक मुताबक २२ अक्टूबर को मुकर्रर है ! ६ कार्तिक को प्रेमियों का सत्संग होगा और सात कार्तिक को आम लंगर होगा। सब प्रेमी बरमौका हाजिर होकर सेवा से लाभ उठावें। शरीरिक सेवा की ज्यादा ज़रूरत है। इस वास्ते और कोई किसी किस्म की प्रेमी मजबूरी न पैदा कर लेवें और जो भी सामान जायज ज़रूरत होगा वह वक्त के मुताबिक प्रेमी शरीरिक सेवा कर के स्थान पर पहुंचाने का लाज़मी यत्न करेंगे, रावलपिंडी के वास्ते अभी कोई वक्त नहीं है क्योंकि शुरू असूज तक गंगोठियाँ पहुँच जाना चाहिये। प्रमी जी वक्त काफी दिया गया है। अब अपना जीवन बाअमल बनाने की कोशिश करें। जिधर - २ ईश्वर का हुक्म होता है। उधर जरूरी जाना पड़ता है। इस वास्ते रावलपिंडी के वास्ते अभी कोई वक्त नहीं है। ईश्वर आज्ञा से २६ अगस्त तक इस जगह से रवाना होंगे। बाद में एक दो दिन सरबगला और फिर

नथिया गली, एबटाबाद एक एक दिन, सराय सालह दो या तीन दिन हरिपुर तीन या चार दिन उसमान खटड़ दो या तीन दिन ईश्वर आज्ञा से लग जावेंगे। मुमकिन है ज्यादा वक्त किसी जगह लग जावे मगर शुरू असूज तक गंगोठियाँ पहुँचना है। अगर सीधे मनक्याला न चले गये तो रावलपिंडी एक दिन के वास्ते आ जावें। सब प्रभु इच्छा पर ही मुनहसर है। अब प्रेमी जी अपना जीवन धर्मयुक्त बनावें और हर वक्त हमको हृदय में देखें। मुलक बहुत है इस वास्ते एक जगह ठहरना मुश्किल है। तमाम प्रेमियों को दुबारा आशीर्वाद कहना और सम्मेलन के मुतालिक वाजय कर देना। यह सम्मेलन संगत की कल्याण के वास्ते मुकर्रर हुआ है। इस वास्ते सत विश्वास से सेवा करके अपने जीवन को सफल करना हर एक प्रेमी का फर्ज है। अमली सबूत ही धर्म की जागृति है। ईश्वर सत अनुराग देवे। प्रमी बूढ़ासिंह के पोते का अफसोस है। नारायण शान्ति देवे और विश्वास बख्शे। अधिक संगत की प्रेरणा से यह सम्मेलन का प्रोग्राम बना है। और आइन्दा के वास्ते यह सूरत शायद तबदील हो जावेगी। क्योंकि संगत को बड़ी तकलीफ होती है इस वास्ते अब का मौका पूर्ण सेवा करके सुफल करें ईश्वर सत श्रद्धा देवे।

(अज जलमादा)

२. सत धर्म विश्वासी होने की तलकीन-

आशीर्वाद पहुँचे, ईश्वर सत अनुराग देवे। तुम प्रेमियों की

हाज़िरी सम्मेलन में होने से अधिक प्रसन्नता हुई, प्रभु ऐसा ही उत्साह देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी, ईश्वर सत धर्म विश्वास देवे हर वक्त हमको हृदय में देखें। प्रभु इच्छा से इलाका झंग की तरफ आये हैं। ईश्वर नित ही गुरु वचन का विश्वास देवे !

(अज़ झंग मगियाना)

३. सत धर्म में दृढ़ होकर जीवन व्यतीत करने की तलकीन।-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे तमाम परिवार और तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत भावना बख्शे। हर वक्त सत धर्म में दृढ़ होकर एकता प्रेम सहित जीवन व्यतीत करें। प्रोग्राम का अभी कुछ पता नहीं कि मालिक की क्या आज्ञा होती है। समाँ आने पर देखा जावेगा शायद किसी एकान्त जगह में चले जायें, आजकल ज्यादा सफर करना कुछ अनुकूल नहीं है। क्योंकि सब देश में अशान्ति है। इस मौके पर जो प्रभु आज्ञा। तमाम प्रेमियों को सतबुद्धि प्राप्त होवे ईश्वर धीरज और धर्म देवें।

(अज काहनूवान्)

४. ईश्वर विश्वास और धर्म मर्यादा जीवन अपनाने की तलकीन-

आशीर्वाद पहुँचे, प्रेमी जी शायद तुमको याद होवेगा कि पिछले साल यह तुच्छ सेवक आपके चरणों में कुछ वक्त ठहरा था और कुछ प्रार्थना भी की थी कि सत्संग का प्रोग्राम दृढ़ करके धारण करें। आप कारोबार के सिलसिले में यह प्रार्थना

भूल गये होंगे। मगर फिर दुबारा अर्ज की जाती है कि जरूरी एकत्र होकर सत धर्म विचार किया करें। तुम्हारी कुर्बानी से आइन्दा की नसलें जीवित होवेंगी। महज दुनियाँ के कारोवार की खातिर यह जीवन नहीं आया। बल्कि अपनी कल्याण की खातिर जीव का संसार में आने का कारण है। इस वक्त चारों तरफ देश में आग लगी हुई है, तुम को चाहिए कि नारायण का खौफ करके कुछ वक्त संगत में दिया करें। जिससे नौजवानों के दिल में देश भक्ति और परउपकार की लहर बढ़े ! प्रेमी जी तुम्हारी बेहतरी के लिए यह अर्ज की थी और अब भी की जाती है। बड़ी-२ कुर्बानियाँ तुम्हारे पुरातन बुजुर्गों ने की। अब तुमको भी लाज़िम है उनके नक्शे कदम पर चलना। दोरागंला निवासियों को भी प्रार्थना करनी कि जरूरी हफ्ता वारी एकत्र होकर आपस में सत् विचार से लाभ उठावें। हिन्दू कौम की बदनसीबी कि खुद गर्जी ने उसको शिकार कर लिया है। अब चारों तरफ से इसको काल चक्र फिरा रहा है। मगर फिर भी गहरी नींद से जाग नहीं आती। प्रेमी जी अब जागने का वक्त है। अपने आप पर खड़े होने का समय है। क्योंकि हमारे अन्दर कुछ जनता उद्धार का उत्साह है। इस वास्ते दुबारा अर्ज को जाती है। उम्मेद है ईश्वर विश्वासी होकर सत् संगत में ज़रूरी वक्त दिया करेंगे। और वापसी पत्र भी लिखना। कोई तो होश संभाल कर अपने जीवन को पवित्र करे और दूसरों को सुख देवे। प्रेमी जो यह समय नहीं आयेगा। इस वास्ते वक्त को कदर करनी चाहिए। जिन्दगी वही है जिसमें ईश्वर विश्वास

और धर्म का उत्साह होवें। तमाम गाँव के चीदा दीगर प्रेमियों को इस प्रार्थना से आगाह करना। आगे नसीब उनके। जरूरी अपनी कल्याण करो, पाप कर्मों से अपने आप को बचाओ, | ज़माना नाजुक आ रहा है जरूर ही सत्संग का प्रोग्राम बनावें। ईश्वर सत् मत देवे। सब प्रेमियों को आशीर्वाद पहुँचे। अपने तमाम कुनबे को आशीर्वाद कहनी।

न किसी की बनी रही, गये राज सिंहासन छोड़।

मन नहीं धीरज पाया, जो सम्पत लाख करोड़॥

वाल जवानी जरा प्राप्त, जीवन नित नहीं पाये।

टूटी माल प्रान की, देही राख समाये॥

उठ गफलत मनों त्याग के, सत संगत पधार।

नाम सिमर भगवान, ये लाभ जीवन विचार॥

चलनकी नौवत वाजती, नित साँची रास सभ्माल।

समाँ गँवाए रोवना, जब सर आवे काल॥

साचा नाम प्रभ सिमरिये, मिल संगत प्रेम कमाइए।

"मंगत" सुफला जीवना, जो रहनी साँची पाइए॥

(बज गोलड़ा)

५. धर्म परायणता की तलकीन :-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवें। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर इच्छा से तुम्हारी इन्तजारी काफी रही मगर प्रभु हुक्म तुम्हारे इधर आने का न

हुआ। आइन्दा तो प्रोग्राम थोड़ा-२ कभी किसी जगह कभी किसी जगह का होगा। अगर सम्मेलन प्रभु इच्छा से स्थान पर होना हुआ तो उस वक्त दर्शन हो सकते हैं। अगर प्रभु समय अनुकूल देवे तो पत्रिका द्वारे ही सत्संग का लाभ उठाते रहें। प्रभु निर्मल नाम की प्रतीत देवें। स्थान पर सम्मेलन माह कार्तिक में कई सालों से होता आया है। अब भी वह समय अगर अनुकूल हुआ तो दर्शन देने का विचार करना। खैर अभी समय तो काफी है। प्रोग्राम का कोई फैसला नहीं हुआ है। देखिये मालिक की मौज क्या होती है। हर वक्त प्रभु सत धर्म परायणता वशे। ईश्वर शुद्ध आचरण की दृढ़ता बख्शे।

६. विश्वास की दृढ़ता से गृहस्त में रहकर धर्म की पालना हो सकती है :-

पत्र मिला, ईश्वर सत् श्रद्धा देवें। प्रेमीजी जो कुछ होना है वह होकर ही रहेगा। इस वास्ते प्रभु इच्छा में निश्चित रहना चाहिए। और जो हालात पूछा है उसके मुतालिक तुम खुद मुनासिव विचार कर लेवें। अगर माता जी का हुक्म है और दुनियावी मजबूरियाँ तुमको मजबूर कर रहीं हैं तो फिर इनकारी करना मुनासिब नहीं है। हाँ अगर अपनी जिन्दगी को असली मार्ग की तरफ ले जाना चाहो तो फिर आज़ादी की ज़रूरत है मगर संसारी पावन्दियाँ तुमको इस तरफ रागिव होने में मुश्किलात पेश करेंगी। और न ही तुम्हारा इतना प्रवल

निश्चय है। वक्त गुजार देने के बाद अगर फिर पछताना हो तो माता जी के हुक्म को तस्लीम कर लेना। प्रेमी जो यह तुम्हारे मन का जजबा है ख्वाहे जो भी बात करो हमारी तरफ से तुमको आजादी है। जो मुनासिब होवे वह विचार कर लेवें। ईश्वर बुद्धि देवे। प्रेमी जी गृहस्त में रहकर भी धर्म की पालना हो सकती है। अगर विश्वास दृढ़ होवे तो। वैसे जो मन का संकल्प है वैसा करो, अगर तुम आजाद रहना चाहो तो बहुत बेहतर है। मगर तमाम तकलीफों का मुकाबला करना पड़ेगा। अगर ऐसी जुर्रत (साहस) है तो अपने बल पर खड़े रहो। नहीं तो माता का हुक्म तसलीम करलो। ईश्वर प्रेम भावना देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी।

७. मानसिक दोषों की निवृत्ति के लिए उत्साह-

हर वक्त प्रभु विश्वास द्वारा मानसिक दोषों की निवृत्ति हासिल करते रहें। ईश्वर शुद्ध भाव बख्शें। और मानुष जन्म की सार को अनुभव करें। ईश्वर सहायता करें।

८. धर्म ही जीवन है-

ईश्वर सत् बुद्धि देवे। प्रेमीजी हर वक्त हमको हृदय में देखें। देह नाश होने वाली चीज़ है। आत्मा अविनाशी है। ऐसा निश्चय धारण करके अपने नियम में दृढ़ रहें। ईश्वर कल्याण देवे। ईश्वर आज्ञा से पन्द्रह दिन से चनारी आये हुए

हैं | चौदह बैसाख को इस जगह यज्ञ था। तमाम इलाके के प्रेमी आये थे। ईश्वर कृपा से समता का प्रभाव अच्छा फैल गया है। अगले हफ्ता में इस जगह से दस मील के फासले पर जंगल में चले जावेंगे। हर वक्त अपनी भलाई करो। ईश्वर तुमको असली खुशी देवेंगे। प्रेमीजी धर्म ही जोवन है। निर्भय करने वाला है। इस वास्ते हर वक्त धर्म परायण होना चाहिए। यह मार्ग निजात का है। सादगी, सेवा, सत्संग, सत् स्मरण आदि गुणों को धारण करना यही शक्ति के देने वाले हैं। कभी- कभी पत्र लिखा करें।

६. धर्म ही शान्ति का मार्ग है।

ईश्वर सत् बुद्धि देवे। दुनियाँ में अपनी जिन्दगी को नमूना बनावें। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। हर वक्त समता के भाव को दृढ़ करें। ईश्वर तुमको निश्चय देवे। जो कुछ तुमको समझाया गया है। वो हो असली धर्म है। उस मार्ग पर चलने से शान्ति प्राप्त होती है। उसके बगैर और सब पाखण्ड है। यह विचार कर लेवें। हर वक्त अपने जीवन को नेक बनाओ। सत्संग में प्रीति रखो। हर एक से प्रेम करो। अपने बुजुर्गों की आज्ञा मानो तब हो आनन्द होवेगा। हर वक्त हमको हृदय में समझें। हर वक्त नेक कर्म धारण करो। तुमने बड़ी मुश्किल जगह अपनी जिन्दगो फरोखन की है। कुछ कुर्बानी करोगे तब ही ठीक होगा तुम्हारा जिन्दगी बहुत आदर्श वाली चाहते हैं।

वापिस पत्रका जरूर लिखा करो। ईश्वर परम धर्म नसीब करे।

१०.धर्म हर जगह सहायता करने वाला है :-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सत् श्रद्धा देवे। जिस जगह भी जाओ। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें। अपने पवित्र ख्याल को दृढ करते रहें। यह संसार बड़ा कठिन मार्ग है। बहुत सी कुर्बानी से शान्ति प्राप्त होती है। अभ्यास जरूरी किया करें। सत्संग का भी विचार करें। और प्रेमियों को भी सदाकत की तरफ रजूह (प्रेरित) करते रहें। समता की तालीम को खुद धारण करें। और दूसरों को भी अगाह करते रहें। हमको हर वक्त अपने हृदय में समझें। ईश्वर कल्याण बुद्धि देवे। ईश्वर आज्ञा से आजकल गंगोठियाँ आये हुए हैं। एक हफ्ता तक स्थान पर ठहरेंगे। फिर बाहर चले जावेगे। वापसी कुशल पत्र गंगोठियाँ तहरीर करें। प्रेमीजी शूरवीरों वाली जिन्दगी हासिल करो। हर एक से प्रेम रखो। दुखियों की सेवा का विचार किया करो। धर्म हर जगह सहायता करने वाला है। खाहे घर पर हो, खाहे बाहर हो। प्रेमीजी परदेस कोई चीज़ नहीं। अपनी आदत को हरदिल अजीज बनावें। ईश्वर सत्बुद्धि, देवे। सादगी, सेवा, सत्य, सत्स्मरण, सत्संग आदि गुणों को याद रखना। ईश्वर हर जगह खुशी देवेंगे। कुशल पत्रका लिखना जरूरी।

११. सही धर्म से समता का स्वरूप प्रकाश करता है :-

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला ईश्वर सत् बुद्धि देवे। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी एक-एक करके । कुछ मौसम की खराबी से कुछ दिन चनारी ही ठहरे रहे । २ भादों को इस जगह से रवाना होकर रास्ते में वक्त प्रेमियों को देते हुये माह असूज़ तक गंगोठियाँ पहुंच जावेंगे। अभी पत्रका इसी पता पर लिखनी । जिस जगह भी हुए पहुँच जावेगी । प्रेमी जी अपने निश्चय को दृढ़ करें । ईश्वर ज़रूर कामयाबी देवेंगे। तमाम छोटे बड़े प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी । देश बड़ी मुद्दत से गिरावट की तरफ जा रहा है । इस वास्ते बड़ी कुर्बानी की ज़रूरत है। एक तो धार्मिक विद्या न होने से सब लोग आलमों (विद्वानों) के फंदे में फंसे हुए हैं। जिस तरह वह चलाते हैं चलते हैं । जब तक हर एक मनुष्य को सही धर्म की वाकफियत (सोझी) न होवें, तब तक समता का स्वरूप प्रकाश नहीं हो सकता. ईश्वर तुमको समर्थ देवें । कोशिश करते चलो कामयाबी ही पाओगे । और अभी एक दो ट्रैक्ट छपे हैं। वो भी मुमाल्या करें (पढ़ें) । सत्संग में उन पर विचार करना । निष्काम भाव से परउपकार धारण कर रखो। ईश्वर सत् धर्म में विजय देवेंगे। ईश्वर तमाम प्रेमियों को सत् आनन्द देवे ।

१२. सत् धर्म प्रीति रखने की तलकीनः-

आशोर्वाद पहुंचे । पत्र मिला ईश्वर सत् धर्म देवें । मालिक

के हुक्म से सम्मेलन पर सब कुछ अच्छा हो गया है। मगर तुम्हारी गैर हाजरी ही रही। ईश्वर सब को सेहत देवें। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर आज्ञा से आखिर कार्तिक तक फिर कहीं तप की खातिर बाहर चले जावेंगे। हर वक्त सत् धर्म प्रीति रखें। और तमाम प्रेमियों को हर वक्त आशीर्वाद कहनी। अपनी कुशलता का हालात लिखना। ईश्वर आनन्द देवें। पत्र जरूर लिख दिया करो। अभ्यास भी किया करो। सत्संग का नियम भी कायम रखें।

१३. धर्म से प्रीति करना फर्जेअवलीन (पहला) है :-

आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। तमाम नगर निवासियों को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी जी कोशिश करके सत्संग का प्रोग्राम बनाये रखें। इस से तुम्हारी बेहतरी होवेगी। ऐसे नाज़ ुक जमाने में जरूरी धर्म से प्रीत होनी चाहिये। तुम्हारे वास्ते पहला फर्ज भी यही है। कृपा करके वापसी पत्र लिखना ईश्वर तुमको सत् बुद्धि देवें। सत्संग का प्रोग्राम ज़रूरी बनावें। अगर दूसरे प्रेमी न आवें तो तुम खुद ज़रूरी तबादला ख्यालात किया करें। आगे तुम्हारी मर्जी ईश्वर आनन्द देवे। वापसी पत्र ज़रूरी लिखना। तमाम प्रेमियों को लिखा जाता है। ईश्वर विश्वास धारण करें और नाम अभ्यास किया करें।

१४. धर्म के मार्ग को अपनाना ही मनुष्य जीवन की उच्चता है :-

आशीर्वाद पहुंचे। ईश्वर सत् श्रद्धा देवें। सदाचारी जीवन प्राप्त होवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। हर वक्त अपने धर्म मार्ग में उन्नति करें। मनुष्य जन्म की यही मौज है। ईश्वर बल बुद्धि देवें। और अपने आप को ऊँचा सेवा दार बनावें। प्रभु पवित्र भावना बख्शे। ईश्वर सत् विश्वास देवे। सही बुद्धि देवें। जिस से लोक परलोक में सुरखरूई हासिल कर सकें।

१५. सत् धर्म प्रीतिः-

ईश्वर नित्य ही सत् धर्म विश्वास देवे। हर वक्त अपने जीवन की उन्नति करें और ज़माने में अपनी ज़िन्दगी निहायत शान्तमयी बनावें। तमाम संगत को वाजे. होवे कि अपने जीवन के सही फर्ज को जानकर समता के असूलों में हर वक्त दृढ़ रहें। यहही असली कल्याण है। ईश्वर स्मरण में ज्यादा समय देवें। और सत्संग में अधिक प्रेम रखें। ईश्वर सत् धर्म प्रतीत देवे। ईश्वर सत् भावना देवे। अपने जीवन को पवित्र करते रहें।

१६. ईश्वर में दृढ़ निश्चय धारण करने की तलकीनः-

ईश्वर सत् बुद्धि देवे। प्रेमी जो कोशिश करते-२ मन शान्त हो जाता है। ऐसी निर्मल कोशिश का नाम ही साधन और

भक्ति है। प्रेमी जी अनेक जन्मों के कर्मों के संस्कार चले आते हैं। ये जल्दी से शान्त नहीं होते ईश्वर आज्ञा में दृढ़ निस्चा धारण करने से मुखलसी मिलती है। अच्छी तरह से इन पुस्तकों का विचार करते जावें। सब वहमात (भ्रम) नाश हो जावेंगे। हर वक्त धर्म में दृढ़ता रखें। मनुष्य जन्म का यही लाभ है कि एक घड़ी एक पलक ईश्वर का नाम ध्यान मिले। हर वक्त ईश्वर आज्ञा में दृढ़ निश्चित हो जावें। ये मार्ग ही कल्याण के देने वाला है। ईश्वर सत् विश्वास देवे। हर वक्त अपनी कल्याण की निमित्त यत्न करते रहा करें।

योग सम्बन्धी पत्र

महा मन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार अजनमा, अदद्वैत पुरखा

सर्व व्यापक कल्यान मूरत परमेश्वराये नमस्तं ॥

"योग सम्बन्धी पत्र"

१. 'शारीरिक कामना ही अभ्यास में बाधक होती है।

प्रेम पूर्वक चरण बन्दना स्वीकार करें। श्री सत्गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फ़रमाते हैं। आप स्वीकार करें और सुख- देवजी व दीगर घर में सब परिवार को आशीर्वाद फरमाना। आपके प्रेमपत्र द्वारा दर्शन हुए। श्री महाराजजी की दयादृष्टि से आपकी मानसिक और शारीरिक शुभ कुशलता चाहता हूं। सेवा में अज यह है कि श्री महाराज जी फरमाते हैं कि जो-जो विचार तुमने लिखे हैं यह अकसर अभ्यास में नमूदार होते हैं। मानसिक दोष फिर गलबा पाकर स्थिति से गिरा देते हैं। इस वास्ते दृढ़ सत परायणता और प्रभु आज्ञा में निश्चय रखते हुए सत सिमरण की धारणा को दृढ़ करते रहना चाहिए। इस तरह पूर्ण मानसिक शान्ति प्राप्त करके सत्स्वरूप अविनाशी शब्द में निह:चलता प्राप्त हो सकती है। शारीरिक कामना ही अभ्यास में बाधक होती है। उनको दृढ़ प्रभु अनुराग और शरीर की विनाश के निश्चय के बल से जीतना चाहिए। ऐसा यत्न करते-करते एक दिन सत् स्थिति प्राप्त हो जाती है। ईश्वर निर्मल सूझी प्रकाश करें। दुबारा श्री महाराज जी आशीर्वाद फ़रमाते हैं। स्वीकार करें। श्रीमान भाई सुखदेवजी

को दास की तरफ से ब्रह्म सत्यम् कहना । अपना दृढ़ स विश्वास ही हर जगह सहायक होता है। श्री महाराज जी की दयादृष्टि नित अंग-संग जानें | दुबारा आपको भी श्री महाराज जी आशीर्वाद फ़रमाते हैं । स्वीकार करें। दीनदयाल ति दयालता करें । सत श्रद्धा देवें । और पढ़ाई में पूरी-पूरी कोशिश करें। ताकि सही मकसद हासिल हो सके ।

२. (i) नाम जपने की तलकीन :-

आपका पवित्र पत्र मिला। पढ़कर बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। जैसी मन में दृढ़ता होती है वैसा ही उसको आनन्द प्राप्त होता है । जब आत्मा में बुद्धि स्थिर होती हैं । इच्छा क्लेश नष्ट हो जाते हैं। योगी महात्मा जो इस संसार में हुए हैं उनकी परम मुख्यता यही थी । जब लग मन में अहंकार स्थिर रहता है । तब तक राग द्व ेष की अग्नि में जलता रहता है । जब मन निर्वाण को प्राप्त होता है । तब परम सुख ब्रह्मनिष्ट बुद्धि प्राप्त होती है और आवागमन से मुक्त होता हैं। जो भी पदार्थ सिद्ध करना चाहो, उसके लिए जतन की ज़रूरत है । जबलग जिन्दगी को किसी खास मकसद के लिए न बनावे । तबलग उसको असली राहत नसीब नहीं होती । अपने मकसद को हासिल करने के वास्ते हर दम उद्यम चाहिये । जोगी का उद्यम यही होता है कि हर वक्त अपने स्वरूप विखे स्थिरता-

निष्काम निष्वीरता निज नाम से नेह।
पूरन भाग से पाइये ऐसे सन्त स्नेह॥

एक नाम निर्मल जपे पल छिन आठो याम।
स्वास सुरत को पीवये तब पाइयें विश्राम॥

शिव सनकादिक सिद्ध मुनि सबका एक आधार।
एक नाम दृढ़ चित जपे मेटे गवन संसार।

जोग जोग सब कहत हैं अरथ जोग का दूर।
पन्द पढ़े तब पंखिये साँख योग इक मूल॥

सुरती राखे श्वास में सोह धुन विचार।
आवत जावत स्वास में एक नाम जप सार॥

अनहद पुरख परगट भयो, पूरे गुरु उपदेश।
अगम निगम निर्खन कियो मिटे सकल सन्देश॥

मारग साचा योग का बहु विधि संत बखान।
एक नाम अराध नहीं भय भरम का मान॥

ऊँचा मारग सन्त का आठ पहर एक भावो।
हगं तुहगं दो मिट गये सुरती शब्द समाओ॥

जहाँ से उपजा यह सर्व, ताहि घर कियो वास।
लाभ हानि दुमंत गई काटी जम की फाँस॥

चार वेद खट शास्त्र पढ़ नहीं पाया मोल।
विनां प्रेम भरम्मत फिरे आवागवन के सूल॥

पूरन भाग गुर भेंटया एक नाम दियो सार।
पल छिन ताहे न विसरूं मारू मन गंवार॥

कहो "मंगत" इस जगत में एक नाम नित मीत।

प्रेम भाव सिमरन करे तब पावे ज्ञान पुनीत॥

पूरन पुरा मिल गया पूरन पाई बुद्ध।

भरम भय सब मिट गये भई नाम एक सुद्ध॥

"मंगत" साचा ज्ञान यह एक नाम पहचान।

जपत जपत निस्तर भये अन्ध बुद्ध अन्जान॥

जो वस्तु आपको मिली है उसको प्रेम भाव से मथन कर के माखन निकाल कर पान करो। इस से अफजल और कोई वस्तु इस संसार में नहीं है। राम कृष्णादि सब इस मार्ग में स्थित भये हैं।

यह खत किसी को बतलावें नहीं। आप हो पढ़कर मरन रहें। ओ३म् ब्रह्म सत्यम्।

(ii) सतनाम जपने की तलकीन:-

आशीर्वाद पहुँचे। आसन मिल गया है मगर कुशलता का कोई पत्र नहीं आया है। आसन से अधिक जरूरत पत्र की थी, खत के देखते ही पत्र तहरीर करें और इस जगह सब तरह से आनन्द है। ईश्वर तुमको आनन्द बख्शे। माह मई में पहाड़ में जाने का कुछ इरादा है अभी पूरा प्रोग्राम नहीं है। एक हफ्ता से फुर्सत न थी कि ईश्वर आज्ञा से तुच्छ सा भण्डारा किया गया है। मेरे घर होते हुये पत्र जरूरी लिखें। और कोई नया ताजा अहवाल होवे तो तहरीर करें -

सत नाम जपते रहो, जब लग स्वांस की दौड़ ।
जपत जपत निश्चल भया, शब्द लखा घट ठौर ।।
मन पवन को सोधना, मिल सतगुरु के उपदेश ।
सहज मिटे भ्रम देह का, कर चेतन में प्रवेश ।।
साधन में है कठिन यह, फल तुल अमृत होये ।
अज अविनाशी ब्रह्म में, लेत बसेरा सोये ।
काल करम भव दुःख गया, मोह ममता गया ताप ।
अखण्ड शब्द घट उपज्या, अतुल बुद्ध लईथाप ||
मानक मेरे घट मांहि, पांच शब्द घनघोर ।
पांच सखी अन्तर गई, "मंगत" लख ब्रह्म ठौर ।।

(अज गंगोठियाँ)

३. निष्काम कर्म साधन योग -

भव सागर के तरन को, कर्म करे निष्काम,
आज्ञा प्रभु को मान के, जापे निज प्रभु नाम ।
जप तप संजम, यज्ञ और दाना,
निश दिन साधे भये कल्याना ।
निष्काम कर्म बुद्ध निर्मल कीजे,
आत्म तत्त नित आत्म पीजे ।
तन मन धन अर्पन गुरु चरना,
महा त्याग रस अन्तर भरना ।
साध सोई जो एह बिद्ध साधे,
जुग जुग जीव काल नहीं बाँधे ।

काम क्रोध अगन की धारा,
निष्काम करम कर भये निस्तारा।
सब जीवों पर कर उपकारा,
"मंगत " बिनसे द्वौत को धारा।
अपना रूप सब जग में पेखे,
गुरु प्रसाद जन्म भया लेखे।
आध वियाध उपाध विनासे,
निर्मल बुद्ध ज्ञान प्रकासे।
तन मन धन सब भये विखादी,
अलपज्ञ जीव भया परमादी।
सत गुरु भेंट नाम सत जापे,
जन्म जन्म के गये सन्तापे।
अनन भगत गुर अमी रस पीवे,
"मंगत" सोध ज्ञान तत लेवे।
नाम आधारी जीवड़ा मन तन करे त्याग।
मिट जनम का अन्तरा घट उठे आत्मा जाग॥
सत नाम सिमरन करो कर्त्ता रूप पहचान।
मिटे भरम संसार का परसे पद निर्वान॥
हिरस खुदी के जाल में फँसे जोव अनजान।
शस्त्र पकड़ त्याग का साधो शब्द गुर ज्ञान।
साधत साधत साघया सत नाम निरधार।
मन मन पाई शान्ति बिनसे सकल विकार॥

घुन उठी आकास में, मनुवा भया उदास।

छाड़ दियो ये पंजिरा सत शब्द में लियो निवास॥

पाया पद निर्वान को धर सत गुरु की परतीत।

काल करम को छाड के सुरती भई अतीत॥

जां से आया तां मिला मिटा गवन का फेर।

गुरु परसादी बूझिया पार ब्रह्म निर वैर॥

उठ उठ मनुवा घाल तू नित प्रति एको नाम।

औध घटत नर जात है गरजत काल स्वान॥

सत मारग के चलन में पलक न लाओ देर।

"मंगत" मिथ्या जीवना झांके काल चौ फेर॥

४. निःकर्म अवस्था में स्थित रहने की तलकीन :-

आशीर्वाद पहुंचे, पत्र मिला, ईश्वर सत श्रद्धा देवे हर वक्त अपने सही जीवन को प्राप्त करते रहें। यह संसार बड़ा कठिन है। जब तक खालिस प्रीत प्रभु चरणों की न प्राप्त होवे तब तक शान्ति मुश्किल हैं। इन भावों को हर वक्त विचार करना चाहिए कि सुख व दुख शारीरिक धर्म है और आते जाते रहते हैं। आखिर देह विनाश के वक्त सब दुःख ही दुख हो जाता है। इस वास्ते जीवित में ही साखी स्वरूप की प्राप्ति का जत्न करना ही लाभकारी है। इन्द्रियाँ बड़ी जबरदस्त हैं मगर मन को जब सत नाम में लगाया जावे और बारम्बार प्रभु इच्छा में कर्मों को सौंपा जावे तब मन अन्तर मुख होकर सत आनन्द को ग्रहण करने लगता है और वासना रहित हो

जाता है। सब कुछ होना और न होना प्रभु इच्छा में देखना और अपने आप को बिलकुल धूड़ समान समझना और बारम्बार नाम में सुरती को दृढ़ करना ही असली योग है। प्रेमी जी मार्ग धर्म का बेशक कठिन है मगर फल आनन्द है। इस के मुकाबले में संसारी पदार्थ त्रिकाल अशान्ति के देने वाले हैं। ऐसा निश्चय दृढ़ होना चाहिये। प्रभु परायण होना ही असली जोवन है। यह हो समता ज्ञान है। जब तक कर्मों के फल में समता न प्राप्त होवे। तब तक वासना रूपी अग्नि नाश नहीं होती। हर वक्त जतन परयत्न यह ही होना चाहिये कि प्रभु इच्छा में दृढ़ता प्राप्त होवे। ईश्वर सत विश्वास देवे। अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। ईश्वर निर्द्धन्द्ध शान्ति देवे। हर वक्त गुरु बचन का विश्वास दृढ होवे। शूरवीर होकर अपने आपको निःकर्म अवस्था में स्थित करें जो असली तत्व स्वरूप है। ईश्वर सत अनुराग देवे, मास्टरजी और ब्रह्म प्रकास जी को आशीर्वाद कहनी। अपनी कुशल पत्रका गाहे बगाहे लिखते रहा करें, ईश्वर सत आनन्द देवे। वापिसी अपनी कुशलता का हालात लिख दिया करें। अगर कोई पत्रका में ऐसे प्रेम से लफ्ज़ लिखा गया तो तुम्हारे वास्ते मुबारिक है। बिलकुल फिक्र न करें। ईश्वर सत भावना देवे हर वक्त हमको हृदय में देखें। प्रभु सत आचरण और निःचल बुद्धि देवें।

(अजु काहनूवान)

५. मन के त्याग से परम सिद्धि की प्राप्ति होती है।

आशीर्वाद पहुंचे, ईश्वर तुमको सफल करें। अपनी कुशलता का पत्र लिखें। इधर सब तरह से आनन्द है, ईश्वर तुम को सत और शान्ति बख्शे और हमेशा सत भक्ति प्रदान करे। इस दुनियाँ में वह ही दुर्लभ वक्त है। जिसमें सत पदार्थ की खोजना और पाने के निमित्त प्रयत्न किये जावें। जितने इन्द्रियों के पदार्थ हैं सब असत हैं। इस वास्ते गुणी लोग इनमें दिलवस्तगी नहीं करते। अपने अन्तर में सत शब्द में निवास करते हैं। जीवन को उन्हीं ने जाना है। बाकी सब संसार अगन में जल रहा है। काम, क्रोध विकराल हमेशा इस जीव को दुःख देते हैं। परमार्थ की साधना का परम स्वरूप त्याग है जब तक मन करके त्याग नहीं। तब तक परम सिद्धि को प्राप्त नहीं होता। महापुरुष धन को लोकसेवा से सर्फ (व्यय) करते हैं, तन मन को जप-तप करके बाँधते हैं। तब अन्तर परमानन्द अवस्था जो तमाम विघ्नों से परे नित आनन्द प्रकाश स्वरूप है। उसको प्राप्त होते हैं। वह ही परम धाम है, वह ही परम मुक्त अवस्था है, वह ही सच खण्ड है। हमेशा से उस अवस्था अवि- नाशी पद को पाने की कोशिश करते रहो यही मूल जीवन है।

चतुर बुद्धि और ज्ञान आचारी,
सत स्वरूप का भये भिखारी।
जन्म मरन का संसा जाये,
नित आनन्द मन मगन समाये।

निमख निमख में जपे भगवाना,
दुस्तर मन का होवे कल्याना।
नित शान्त हर रसना लागी,
अखण्ड विरत निज नाम समाधी।
प्रेम पुंज में मन तन राख,
उपरसता पुरुष महा रस चाखे।
मन तन परे पाये समाजा,
अछेद अभेद पद गगन में गाजा।
तिस की आज्ञा में सीस कटावे,
काल करम का संसा जावे।
अवगत पुरुष से रखो प्रीत,
"मंगत" चलिये भव जल जीत।
तन मन की रसना सब त्याग,
सतगुरु शब्द में विरती लाग।
करम का संसा इच्छा दोख,
साधे शब्द मिटे सब रोग !
ममता मिटे सत नाम समाये,
मानुष जनम की कीमत पाये।
उठत बैठत अखण्ड चित नाऊ,
अकाल पुरुष में पावे थाओं।
नित सोधे रसना वढ भारी,
पीरवली जां भये भिखारी।
जुगा जुगन्तर सुरती पिये नाओ,
आवे जाये न इक भाये समाओ।

सकल करम का टूटा मान,
मिल अविनाशी मनुवा गुलतान।
सहज सभाये उठ सिमरो गोपाल,
अभय पद पाये मन भये निहाल।
सत गुरु पूरे की सुनिओ सीख,
सत नाम की मांगियो भीख।
नित ही यह मन करो विचार,
पूरे गुरु के चरन बलिहार।
दीन दयाल संग करो प्रीत,
दुर्लभ जीवन की यह रीत।
घड़ी घड़ी तन छोजे जाये,
पलक न विसरो सत नाम समाये।
अचरज जानो पुरख अनूप,
मिटे कल्पना सकल बिख कूप।
बारम्बार मन सिमर लो सत सरूप नरंकार।
"मंगत" जीवन जीवया मिल पूरे गुर उपकार॥

६. प्रेम से एकचित होकर सतनाम में दृढ़ता धारण करने की तलकीन-

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला, ईश्वर सत धर्म देवे। इस पत्र में सिर्फ खुलासा सूरज चन्द्र स्वर का किया हुआ था। सो फिर समझ लेवें। नाम के सिरमण से स्वर में खुदबखुद ही

मिलाप हो जाता है और पवन सूक्ष्म हो जाती है और ज्यादा कुम्भक करने की ज़रूरत नहीं और जितना शब्द से कुम्भक होता है वह ही आनन्द के देने वाला है। ज्यों-ज्यों नाम और पवन में एकता होती है मन में धीरज आ जाता है और पवन भी स्थिर होती चली जाती है। और अन्तर विखे शब्द का गुजार प्रगट होता हुआ मालूम होता है। यह ही जाप योग की इन्तहा (अन्त) तक पहुँचाने वाला है। इस वास्ते प्रेम से इकचित होकर सतनाम में दृढ़ता धारण करें। यह ही परम सिद्धि है। श्वास की गति खुदबखुद शब्द के जाप से अन्तर विखे ज़्यादा होती चली जाती है। सिमरन के सिवा और कोई जतन की ज़रूरत नहीं। ईश्वर आज्ञा से अमावस्या तक इस जगह हैं। क्योंकि इस जगह के लोगों की हालत धर्म से बहुत गिरी हुई है। इसके बाद देखा जावेगा। पत्र वापिसी लिख देना कि अमावस्या से दो दिन पहले तक मिल जावे। मास्टर जी को आशीर्वाद कह देनी। ईश्वर सत धर्म देवे। इस जगह तप के दौरान में चार हजार के करीब बानी कलमबन्द हुई है।

शायद दो तीन माह तक एक प्रेमी छपवा देगा। ऐसी इस को सेवा की ईश्वर आज्ञा से आज्ञा हुई है। ३५०० के करीब गर्मियों के तप के शब्द कलमबन्द हैं। कुल ७०० सफे की किताव बन जायेगी ! निहायत ही साधारण तरीके से हर एक जिन्दगी के पहलू पर विचार हुआ है। शायद अगले माह तक वापस स्थान पर चले जावें, क्योंकि उधर से प्रेमी बहुत याद

करते हैं। खैर जो आज्ञा ईश्वर की होगी। कुछ पता नहीं कि क्या होगा। ईश्वर सत धर्म देवे और हर वक्त नाम चित्त आवे। कुआं मरम्मत तो हो गया है अभी बोरिंग नहीं हुआ है. ऐसी पत्र आई है। ३५० रु० के करीब खर्च हुआ है बाकी हालात जो हुआ लिखा जावेगा। ईश्वर आनन्द देवे (अज शाहपुर कण्डी)

७. अभ्यास की परिपक्ता की तलकीन :-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला। ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी एक-एक करके। ईश्वर आज्ञा से कल से चनारी आये हैं और सावन में इस जगह प्रेमियों ने यज्ञ मुकर्रर किया है। बाद में किसी दूसरी जगह जायेंगे। पत्रका इस पते पर लिखनी। प्रेमीजी अभ्यास अधिक लाजमी है। रूहानी सेहत की अधिक जरूरत है। अभ्यास कम अज कम एक घण्टा सवेरे एक और घंटा शाम होना चाहिये। अभ्यास से अधिक लाभ होता है। मन निर्मल होता है। ईश्वर गुरु वचन का विश्वास देवे। हर वक्त हमको हृदय में देखें। अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। प्रेमी सांई दास और तमाम कुनबे को आशीर्वाद कहनी ईश्वर सत अनुराग देवें।

८. क्या आत्मा परमात्मा है:-

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला इसका उत्तर दिया जाता है। आप गौर करके विचार कर लेवें, क्या आत्मा परमात्मा है

वाजय होवे। जब तक बुद्धि शरीर के अहंकार में खड़ी है यानी शरीर के परायण बनी हुई है तब तक शरीर के दुख सुख इच्छा भोग और राग द्वेष में जलती रहती है। और उस अहंकार के जेर असर कई जन्मों को धार कर कष्ट उठाती रहती है। और जब यह ही बुद्धि जीवन शक्ति जो अविनाशी तत्त्व है उसके परायण होने का यत्न करती है किसी सत पुरुष की सिखया (शिक्षा) द्वारा उस वक्त उन विकारों से ऊँची हो जाती है यानी सत, सील, संतोख, दया, खिमा (क्षमा), श्रद्धा और प्रेमादि महा गुण बुद्धि के अन्तर प्रगट हो जाते हैं। जिसमें जीवन उन गुणों के सहित प्रभु चिन्तन और प्रभु आज्ञा पालन करने में दृढ़ होती है यानी अपने शरीरिक सुखों को दूसरे के सुखों में निरमाण भाव और जोवन कर्त्तव्य समझ कर त्याग करती है। त्यू-२ इस दुख और सुख की महसूसात से ऊँची होकर परम शान्ति जो अविनाशी तत्त्व है उसकी तरफ एकाग्र होती है। यह ही साधन परम भक्ति और परम तपस्या है। इस पवित्र अनुराग के बल से शारीरिक सुख जो तबदील होने वाले और दुःख स्वरूप हैं। प्रभु आज्ञा में समर्पण करके और गुरु बचन को अटल विश्वास सहित अपना कर हर वक्त निर्भय शान्ति जो जीवन शक्ति है। उसके सिमरन में दृढ़ होती है। ऐसा अभ्यास करते करते किसी वक्त अविनाशी शान्ति जो पूर्ण स्वरूप है उसको प्राप्त हो जाती है। यह ही यत्न मानुष जन्म का उच्च कत्तव्य है प्रेमी जी वाजय होवे। शारीरिक मद

को त्याग करके नित ही निर्मल विचार द्वारा अपने पूर्ण निश्चय को सत परायण दृढ़ करें। जब ऐसी शुद्ध भावना प्राप्त होगी तब उस परम सुख अखण्ड शान्ति के पास पहुंच जायेंगे। ईश्वर ऐसी समर्थ देवे। जिन्दगी का मकसद (ध्येय) जिन्दगी की तलाश है। जो इन तमाम अनासरों (तत्वों) पवित्र और निर्बन्ध है। उसी को ईश्वर, परमात्मा, अल्लाह, गाड आदि नामों से पुकारा जाता है। सो तुम अपने पूर्ण भाग्य सहित इस जिन्दगी की तलाश में दृढ़ हो जावें। यह हो यत्न सत पुरुषों के जीवन आदर्श का स्वरूप है। अपने गुज़रे हुये वक्त को भूल जावें और आइन्दा पवित्र आहार, पवित्र व्यवहार, पवित्र आचार में अपने आप को दृढ़ करके अपनी जीवन यात्रा के सही मकसद को प्राप्त करें। यह ही यत्न भाग्यशाली है। ईश्वर सत बुद्धि अनुराग देवे।

६. बातनी तसव्वर को खुदा की याद में लगाने की तलकीन :-

ब्रह्म सत्यम्, सलाम स्वीकार करें। सतगुरु देव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं। स्वीकार करें, घर में सबको आशीर्वाद फ़रमाते हैं। आपके बड़े प्रोम से लिखे हुए मोगामण्डी में प्रम पत्र द्वारा दर्शन हुए। श्री महाराज जी जालन्धर छावनी में पधारे हुए हैं। चन्द दिनों के प्रोग्राम होने की वजह से प्रेमियों को पत्रकायें कम लिखी जाती हैं। आपके विचारों को श्री महाराज जी पढ़ चुके हैं। श्री महाराज जी फरमाते है कि

तुम्हारे तमाम सवालों का जवाब तहरीर की अभी फुर्सत नहीं है। सिर्फ तमाम दलीलबाजी और तोहमात को काटने वाला यकीन है। इसके मुत्तलिक लिखा जाता है। अच्छी तरह गौर करके पढ़ें और अपना यकीन इस तरह कायम करें।

"अपनी खुदी यानी फाइलियत से ही तमाम अमल और फेल का दस्तूर जारी होता है। जिस का नतीजा खुशी व गमी पर मबनी है जोकि रूह के वास्ते बड़ा अजाब है। जब तक खुशी व गमी जो कि एमालों (कर्मों) का नतीजा है। उनसे छुटकारा प्राप्त न होवे। तब तक गौर तसव्वर हालत, अबादी हालत और गैर फाहलियत हालत जिसको खुदा ईश्वर या हस्ती कहते हैं। उसको पहिचानने के वास्ते एक यकीन हो काफी है कि होना या न होना, सब कुछ ही हुक्म खुदा से जानते हुए अपनी खुदी जो हालत तसव्वर को कायम करने वाली है उसको लमहा बलमहा (पलपल) खुदा के नाम की विद (सिमरन) से काटना चाहिए। कोई भी दूसरा तसव्वर सवाये नाम खुदा के अन्दर उठने न दिया जावे। जब ऐसी रयाजत पुखता होती है। तब ही कल्बी जिक्र जिसको इलहाम या आसमानी बांग या सुल्तान अल्फकार कहते हैं, वह जारी होता है। ऐसी हालत जब बातन में तारी (आरम्भ) हो जावे तो वह आबद और दरवेशों की मंजिल पर कदम रखने वाला होता है और किसी वक्त ऐसी महवियत में सरशार होता है जिससे तमाम खुदी की बू निकल जाती है और वजूद में

लावजूद जात कमाल की राहत में मुस्तग्रक हो करके अपनी जात हकीकत को आप ही जानता है यही हालत असली करार की है इसको मुक्ति या वसाले खुदा कहते है। इस विचार को समझ कर ज्यादा से ज्यादा बातनी-तसव्वर खुदा की याद में रखें जोकि तमाम अजाबों से रिहाई देने वाला है। खुदावन्द अमल को जुरर्त (साहस) बख्शे।

१०. स्वतन्त्र रूप में अभ्यास में बैठने का आदेश-

प्रेम पूवर्क प्रणाम स्वीकार करें। श्री सतगुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं। श्री मान् हकीम जी, कामता प्रसाद व ओमप्रकाश जी, रामजीदास जी, गोकुलचन्द जी, रामस्वरूप और भगत गणेशदास जो सब संगत को आशीर्वाद फरमावें। आपके प्रेम पत्रों द्वारा दर्शन हुए। श्री महाराज जी २७, २८ अप्रेल को एकान्त में तशरीफ ले जायेंगे। श्रीमान भाई साहब त्रिलोकनाथजो जो कि श्री मलिकजी के हमराह (साथ) तशरीफ लाये हैं। उनको दो अदद पुस्तकें समता विज्ञान योग और समता विलास दे देवें। दुबारा आपको श्री महाराज जी आशी- र्वादि फ़रमाते हैं, स्वीकार करें। श्रीमान जी किसी वहम में इन आसनों के नहीं पड़ना चाहिए। प्रेम और श्रद्धा विश्वास से अपने नियम को दृढ करने में कल्याणता और शान्ति है जिसने आपको भ्रम डाला है। दिल से निकाल देवें। जहाँ तक हो सके - स्वतन्त्र रूप में बैठने की कोशिश करनी चाहिए। श्री महाराज जी की दयादृष्टि नित अंग-संग जानें।

११. योग सम्बन्धी सन्शों की निवृती-

श्री महाराज जी फरमाते हैं कि प्रश्न उत्तर जो कुछ भी हुए वह ठीक हैं। मगर प्रमो ' ने आत्म साक्षात्कार समाधि के बाद कहा है यह महज़ एक ढोंग ही समझें। आत्म साक्षात्कार से पहिले समाधि का होना ना मुमकिन है संसार का मिथ्या, देह का मिथ्या समझने से प्रतीत होता है।

आप अपने पर कृपा ईश्वर कृपा का निर्णय यह है कि अपने आपको सत मारग में सावधान किया जावे और अपने आपका गुरु बनने का यत्न प्राप्त हो। अभी वह प्रेमी नई-नई साधना में लगा हुआ है और संसार का जमघटा घेरा डाल रहा है। देखिये कहाँ तक दौड़ होवेगी। इस किस्म के ज्ञानी कई बातों तक ही रह कर अपनी जिन्दगी को खो बैठते हैं। कुछ समय तक अकसर ऐसी साधना में दिलचस्पी बनी रहती है। मगर अंजाम को यश (कीर्ति) को प्राप्त होकर बिलकुल अधूरा ही रह जाता है। खौर अपना यत्न परयत्न करना हर एक के वास्ते लाज़मी है मगर पूर्णता को कोई विरला हो प्राप्त हो सकता है। उसके असबाब और ही रंग के होते हैं। यह जो सब को सिद्धि एक दम में देना चाहते हैं यह महज बच्चों का खेल है। जब सिद्धि को प्राप्त होगा तब ही जानेगा। यह माया त्रिगुणी बड़ी दुस्तर (कठिन) है। ऐसे ही सब सिद्धों ने ब्यान किया है कि चलते करोड़ों हैं मगर पहुँचता कोई विरला ही है। मगर प्रकृति

के नियम के मुताबिक अपना-अपना यत्न सब कर रहे हैं। जितना-जितना किसी को कुव्वते इरादी इजाजत देती है। बाकी .....के प्रश्नों के उत्तर की कोई जरूरत नहीं है। उसको वैसे कई दफा समझाया गया है। इन विचारों के मुत्ता- लिक और अब अगर उसने पूछना है तो खुद पत्रकाद्वारा पूछ सकता है। ऐसे निकम्मे लोगों से कुछ नहीं बन सकता है, महज बातें ही बातें बनाते हैं समता की तालीम में कौन-सा विचार कलमबन्द नहीं हुआ। शौक से मुताला (स्वाध्याय)- करें। तब समझ पूरी आवे।

अब खास विचार यह कि जितना भी समता को तालीम को खुले विचार की सूरत में हर एक के सामने रखा गया है। उस हालात के मुताबिक ऐसे निकम्मे लोग इस तालीम में दाखिल हो रहे हैं जो कि महज बातूनी और इस तालीम को बिगाड़ने वाले है। इन वज्र हातों के मुताबिक (अनुसार) आइन्दा खुले प्रचार का प्रोग्राम बन्द ही करना पड़ेगा। जैसाकि एक साल से विचार हो रहा है। तमाम समय तपस्या में ही गँवायें और कोई खास जिज्ञासु होवे तो वह अपनी उन्नति के मुतालिक समय लेवे। अब समता की तालीम में खास कुर्बानी वाले प्रेमियों की ज़रूरत है जो कि आइन्दा देश के वास्ते सफलता की सूरत बन सके।

१२. आत्म ज्ञान में न कोई देश है न कोई काल है।

सेवा में अर्ज यह है कि आप ने जो योग वशिष्ट का विचार तहरीर फरमाया है उसके उत्तर में श्री महाराज जी फ़रमाते हैं कि इस विचार पर गौर करने से मालूम होता है। कि यह रोचक विचार है और बाद में दर्ज किये गये हैं। क्योंकि आत्म दर्शी पुरुष हर एक देश में हुए हैं मसलन, ईसा, मूसा, इब्राहीम, बुद्ध, महावीर वगैरह और भी कई हुए हैं और होवेंगे। उनके मुतल्लिक कोई पेशीनगोई नहीं की गई है। क्या उन्होंने कोई थोड़ी कुर्बानी पेश नहीं की है ? क्या महज़ भारतवर्ष का हो मजमून (विषय) आत्म सत्ता में अनुभव किया गया है और देशों में जो आत्मदर्शी हुए हैं उनके मुतल्लिक कोई विचार नहीं है। यह सिर्फ बाद के आचार्यों ने राम कृष्ण के तई श्रद्धा बढ़ाने के वास्ते तहरीर किये हैं। आत्म ज्ञान में न कोई देश है, न कोई काल है न कोई और स्थूल प्रकृति का लिवास है। वह सत्ता निराकार स्वरूप सर्वज्ञ है उसमें न कुछ हुआ है न होगा। यह स्थूल प्रकृति महज तीन गुणों का अचम्भा है। आत्मदर्शी पुरुष इसके मुतल्लिक कुछ नहीं कहते। गुणों में गुण बर्तते हुए अनन्त प्रकार की सृष्टि का स्वरूप उत्पत प्रलय होता रहता है। इसके मुतल्लिक यथार्थ और मुकम्मल (पूर्ण) कुछ नहीं कहा जा सकता है सिर्फ गुणों के चक्कर का अन्दाज़ा ही लगाकर कुछ कहें तो कह सकता है। ख्वाहे (चाहे) वह बात

उससे पूछें कि ब्रह्म क्या चीज़ है और किसने तसम्बर में लाई है। जिस जगह ब्रह्म अनुभव किया गया उस जगह अनुभव करने वाले की क्या दिशा है। ब्रह्म में जीव और माया का कोई स्वरूप है। अगर नहीं तो सर्वज्ञ किसने जाना है और किस कारण सर्व शक्तिमान है। प्रेमीजी पहले तो जोव का स्वरूप सवाधान करना चाहिए तो फिर ब्रह्म की खोज करें। यह सव झगड़ा नासमझी में है। और कुतर्कों से कुछ हासिल नहीं होता। अगर किसी ने ब्रह्म को आलेप या परवर्त देखना है तो अभ्यास द्वारा देखें। वातों से कुछ तसल्ली नहीं होती। जिस तरह दूब में घृत की मिसाल है। पहले अपनी खोज करें कि मैं क्या हूँ। आया जिसम हूं या जान अगर जान हूं तो कंद किस करके हूँ। जिसम की बनावट क्या चीज है। जब अमली जीवन द्वारे इन वातों की अच्छी तरह समझ आ जावेगी। तब फैसला हो जावेगा। जान की असलियत पहचानने से जिसम की कैद नाश हो जाती है। जिसम की जब कैद नाश हुई तब दुरमत भेद नाश हो गया। संसार की विचरत हालत में तीन ताकतें मालूम होती हैं। वास्तवमें एक ही ताकत का सब जलवा है। प्रोमोजो बातों से यह फैसला नहीं होता बल्कि अपने अनुभव द्वारा पहले जीव की असलियत पहचान करे तब ब्रह्म जीव की एकता का पता लग जाएगा। ब्रह्म की खोज जीव ने ही को है और ब्रह्म स्वरूप हो करके की है जिस तरह से दरियाओं का पानी समुद्र की पूर्णता की कहता है अपने आप समुद्र में गरक करके। इतना भी कहना एक दूसरे के वास्ते सबक देना है।

नहीं तो यह हालत बयान से बाहर है। यानो केवल स्वरूप

ही हो जाता है। प्रमीजी ये विचार कर लेवें। ख्वाहे कोई जितना भी विचार करे ये मसला अमली अभ्यास करके फँसला हो सकता है। इस मसले को कई तरीकों से सिद्धों ने बयान किया है मगर निश्चय अभ्यास से ही होता है। बातों से नहीं इस वास्ते सत् स्वरूप की तहकीकात में हर वक्त ही लगा रहना चाहिए। जव सत् प्राप्त हुआ तब झूठ का मुकाम नहीं रहेगा। अपने आपकी बनावट का विचार करें कि किस तरह से और किस कारण हुई है। प्रेमीजी जो सही तरीका तुम्हें मिला है कि हृदय में नाम सिमरण और कर्मों का कर्त्तापन ईश्वर आज्ञा में समर्पण करना यही साधना असली प्रकाश के देने वाली है। दृढ़ निश्चय से लगे रहें। द्वतवाद भी ठीक है किसी हालत तक, अर्द्ध- तवाद भी ठीक है किसी हालत में, यह सब बुद्धि की तहकीकात की अवस्था है। समता तत्त असली जो कुछ है वो बयान से बाहर है। यानी निर्वाच और अनाम है। वो ही परमधाम है। यानी तहकीकात (खोज) से बाहर है। अभ्यास से इन अवस्थाओं का पता लगता है। किताबों के पढ़ने से कुछ तसल्ली नहीं होती। ईश्वर खाहे कर्त्ता करके सिमरो तो भी ठीक है। खाहे अकर्त्ता करके सिमरो तो भी ठीक है। कर्मों से मुक्त दोनों प्रकार की भावना से हो जाता है, पीछे जो कुछ पाया वो अपना आप प्रकाश समता स्वरूप है। अभ्यास द्वारा इस अवस्था को प्राप्त हो सकता है। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी।

२५. योगी के लक्षण-

निष्कामता, निर्मानता, उदासीनता, निःचलता और पर- उपकार आदि महागुण हैं और भी अधिक गुण हैं, सब शास्त्र ग्रन्थ योग की महिमा बयान कर रहे हैं, जो जिसने जाना है सो 'ही तृप्त हुआ है। ईश्वर सतबुद्धि देवे। तमाम प्रेमियों को दुबारा आशीर्वाद कहनी। हर वक्त हमको हृदय में देखें। ईश्वर सत् धर्म प्रतीत देवे।

२६. तप की जरूरत :-

ईश्वर सत् श्रद्धा देवें, प्रेमीजी जो नारायण की आज्ञा होती है वो ही सत्य है चूँकि इस वक्त दुनियाँ एक सख्त खतरे से गुज़र रही है। और आइन्दा भी कुछ समय तकलीफ का ही सबब नज़र आ रहा है। इस वास्ते मालिक की मौज जैसी हो रही है वैसा ही हो सकता है। इस वक्त नुमायश का स्वरूप ज्यादा जहूर हो रहा है। इस वास्ते असली धर्म की निष्ठा कमजोर हो रही है और ना ही लोगों की बुद्धि काम करती है, ऐस मौकों में तप की अधिक जरूरत होती है। इन सब बजूहात को मदेनजर रखकर गंगोठियाँ में तो बैसाखी पर आने को तो शायद फुर्सत न लगेगी, क्योंकि आखिर चैत में शायद इलाका कांगड़ा में चले जायेंगे और फिर शुरू वैसाख में शायद किसी एकान्त जगह में तप की खातिर निश्चित हो जायेंगे। हमारे वास्तं सिर्फ गंगोठियाँ ही नहीं सारी दुनियाँ है। इस वास्ते तुम सिर्फ

निमित्त मात्र अबके साल सत्संग का प्रोग्राम बना लेना। ज्यादा प्रोपेगण्डा की जरूरत नहीं है और हमारी गौर हाज़री में ज्यादा हज्जुम की एकत्रिता अच्छी नहीं है। सिर्फ दो-चार प्रमी जाकर अपना नियम पूर्ण कर लेना। बाकी अपने आपको निहायत काबिल बनावें। शायद दुनियाँ में कई काबिल लोग तुम्हारी आजमाइश लेवें। अगर तुम आज़माइश में पूर्ण उत्तर सको तो फिर तुम्हारो समता की उन्नति हो सकती है। इस वास्ते हर वक्त सत् असूलों को अपनाने का यत्न करते रहें। ईश्वर रत् बुद्धि देवें।

२७. ब्रह्म स्थिति की व्याख्या और सत् मार्ग सम्बन्धी आज्ञाएँ-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर आनन्द देवें। प्रेमीजी, हर वक्त अपने जावन को सुधारने की कोशिश करते रहा करें। मानुष ज़िन्दगी का यह ही फल है। तुम हमारी हृदायत को स्वीकार करोगे। ईश्वर तुम हो हर तरह से सुख देवेगा। हमको दूर ना समझें अगर तुम हमारी आज्ञा का पालन करोगे तो हम हर वक्त तुम्हारे हृदय में हैं। इस वक्त घोर कलयुग का पहरा है। प्रमीजी कुछ धर्म के सरूप को जगाना। हमारी प्रसन्नता तभी है कि तुम नेक बनो और हर एक दुखी दीन को सेवा करो। और अपने बुजुर्गों के कदम बोस करो। सुब्ह वा शाम जरुर ही दो घड़ो ईश्वर सिमरण करें। और अपनी आनन्द पत्रका लिखा

करो। सत्संग को बनाये रखो। एक-एक बात परम आनन्द देने वाली है। इनको धारण करें। तुमको भी कामिल गुरु की कृपा का पता लगे और गुरु को भी सत् विश्वासी शिष्य पर प्रसन्नता होवे।

ईश्वर की बड़ी कृपा आप पर है जिसकी औलाद ऐसी नेक- चलन है। ईश्वर तुम्हारे खानदान को दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की देवे। आपको भी सत्मार्ग में विश्वास होवे। प्रमीजी तुमको जगह अपने हृदय में दी है इस वास्ते फिकर न करें हमने अपने शिष्यों को कलेजा निकाल दिया है। इस वास्ते मंहगे भाव का व्यापार है। तुम्हारी खुशकिस्मती। जरूरी देश और धर्म की लाज रखनी और हमारे वचन पर विश्वास करना ईश्वर आनन्द देवे। श्लोक का अर्थ यह है-

गंगा जमना, सरस्वती का मेल।
त्रिरवेनी मज्जन करे सत्ब्राह्मण का खेल॥

गंगा - दाहिनी स्वर, और जमना - बायीं स्वर और सरस्वती- सुखमना। ब्राह्मण के हालात में ये श्लोक आया है कि ब्रह्म के हालात जानने वाला जो है वो ही ब्राह्मण है। ब्रह्म का स्थान दोनों नेत्रों और मस्तिक के बीच में है। वहाँ ये तीनों नाड़ियाँ इकट्ठी हो जाती हैं इस वास्ते उस जगह का नाम त्रिवेणी है यानी प्राग करके संतों ने पुकारा है। जब नाभी से शब्द उठता है तब त्रिकुटी यानी त्रिवेणी में भी टंकोर लगती है। तब मन माया

से एलैहदा होकर पारब्रह्म में स्थिर हो जाता है। ऐसी स्थिति में जो ब्राह्मण स्थित है वो ही असली ब्राह्मण कहलाने का हक- दार है। करनी प्रवाण है फ़कीर मसनूई (बनावटी) जात नहीं मानते।

जब मुश्किल विचार होवे पूछ लिया करो। ईश्वर आज्ञा से तीन या चार मधर को बाहर तप की खातिर जावेंगे। अभी जगह मुकर्रर नहीं हुई। जिस जगह भी गये तुमको खबर दी जावेगी। संसार में इन बातों का हर वक्त ख्याल रखें। बुरी सोहबत से, नुमायश देखनी, अमानत में ख्यानत, शराब नौशी, चोरी, फिजूल खर्ची से, चुगली, झूठी गवाही, तमाकू नौशी, मांस खोरी, बेज़बानी ये बड़े दीर्घ पाप हैं। रूह को स्याह (काला) कर देते हैं। दोन दुनियाँ की तरक्की का दरवाज़ा बन्द हो जाता है। और सब ज़िन्दगी गहरे अज़ाब में रहती है। गुरु की हदायत (आदेश) यही है। इन पापों को छोड़ना। इनके बरअकस ऐसा अमल करना चाहिए। सत्संग, सादा गज़ा, कम खर्च करना, सादा लिबास, सत्पुरुषों के स्थान देखने चाहिए | कौल का पक्का होना। मुँह पर सच कह देना। अपनी चीज़ पर संतोष करना, या मांग लेना यह बेहतर है। दूसरे का हक ज़हर समझना, गवाहो से परहेज | इन पापों से बचो। साबित कदम होकर धर्म के मार्ग पर चलो। तब हमको बड़ी खुशी होगी। ईश्वर आनन्द देवे।

२७. ब्रह्मज्ञानी की पहिचान

प्रेमी जी ब्रह्म ज्ञानी के सिर पर सींग नहीं होते। जिसने अपनी आत्मा का साक्षात किया है। वही ब्रह्म ज्ञानी है। और उसे अवतार कहते हैं। समय- २ पर ऐसे महा पुरुष का चोला प्रगट होता है। मगर उनके दुनियाँ से अलोप हो जाने के बाद उनकी ज़िन्दगी का पता लगता है। अगर तुम जवाव किसी को नहीं दे सकते हो तो सतगुरु क्यों लिखवाते हो। मूर्ख को क्या पता है। कि ब्रह्म ज्ञानी किसे कहते हैं। जिसने शरीर के होते - २ शरीर के भोगों से निजात पाई है और अपनी आत्मा में लीनताई हासिल की है। वही ब्रह्म ज्ञानी है। आप खुद विचार कर लेवें। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। हर वक्त ईश्वर विश्वास धारण करें। दुःख सुख में धीरजवान रहें। यही असली भक्ति है। वगैर विचार के और ईश्वर विश्वास के इस दुनियाँ से कोई अबूर (पार) नहीं पा सकता। इस वास्ते सब कुछ उसकी आज्ञा में जानकर सच्ची भक्ति को धारण करना चाहिए। ईश्वर आनन्द देवेंगे। हर वक्त व्यान में लगे रहें। ब्रह्म ज्ञानी वही है। जो अपनी कमाई वरताने (बाँटने) वाला है। दूसरे की जूठ को स्वीकार नहीं करता। ये तमाम लिट्रेचर वया विचार सिखाता है। अपने जमाने में जो ज्ञान, ध्यान, त्याग वर्ग रह सब में पूर्ण होवे। वे उस वक्त का पाप उद्धारने वाला महापुरुष है।

ईश्वर जिसको दात करे। बाद मुबाद की जरूरत नहीं। अपनी जिन्दगी बनानी चाहिए। ईश्वर सत श्रद्धा देवे।

२८. नाम सिमरन और सत सेवा शान्ति का सार साधन है :-

आशीर्वाद पहुंचे पत्र मिला। ईश्वर नित सत श्रद्धा देवे। तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सबको बल, बुद्धि देवें। प्रेमीजी सत्संग के हालात पाये। हर वक्त अपने पवित्र विचार द्वारा प्रेमियों को प्रेरणा करते रहना चाहिए। इससे प्रेम बढ़ता है। और जरूरी सत्संग में भी उन्नति हो जावेगी। वर्ग र कुरबानी के जागृति होना मुश्किल है। इस वास्ते समता के सही मतलब को समझकर हर वक्त अपने आपको देश और धर्म का रोशन चिराग बनावें। कुरबानी वाला - एक गुरमुख भी अधिक कल्याण कारी होता है। सब प्रेमियों को ईश्वर सत मार्ग परतीत देवें। हर वक्त अपनी मानसिक अवस्था को नाम सिमरण और सत्य सेवा के मार्ग में दृढ़ करें। यही शान्ति का सार साधन है। ईश्वर नित्य सहायक होवें।

२६. ख्यालात की एका प्रता :-

प्रेमी जी ख्यालात की एकाग्रता में असली आनन्द मिलता है। और ख्यालात के परागन्दा होने से वह प्रेम नहीं रहता। इस वास्ते ईश्वर आज्ञा में दृढ़ निश्चित होवें।

और अपने ख्यालात को नाम में लगाते जावें। ये ही खुशी का रास्ता है। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। प्रेमीजी सतश्रद्धा और सत यत्न करके सत्संग में निश्चय रक्खें और तरक्की करें। मंडी में सत्संग ठीक है। हर एक को हाजिर होने के वास्ते कहा करो। बगैर कुरबानी के कुछ हासिल नहीं होता। धर्म कुरबानी से बढ़ता है। ईश्वर तुमको अधिक प्रेम और श्रद्धा देवे। हर वक्त हमको हृदय में देखें। दीगर नाम सिमरण का प्रचार न करना। केवल इशारा से समझाना चाहिए। यह भी गिरावट का कारण है। यह निश्चय कर लेवें। ईश्वर सब संगत को धर्म प्रीति देवे।

३०. सत विचार और अभ्यास को दृढ़ता :-

प्रेमी जो हर वक्त सत श्रद्धा करके धर्म परायण होना चाहिये इससे मन को शान्ति मिलती है। दुनियाँ एक अजाब है। बगौर सत् पुरुषार्थ के शान्ति मुश्किल है। इस वास्ते हर। वक्त अपनी आत्मिक उन्नति करनी चाहिये। सत् विचार और सत् अभ्यास को धारण करना चाहिए। जिस जगह धर्म है। वहाँ कीर्ति और सुख है। जिस जगह अधर्म है वहाँ ही वहम और भय है। इस वास्ते शुद्ध चित्त होकर सत् धर्म परायण हो जाओ। ईश्वर आनन्द देवेंगे। हर वक्त नेक धर्म धारण करो। देश भक्ति में प्रीति रक्खो। अपने आप को तुच्छ समझो। ईश्वर को सर्व शक्तिमान जानो। ऐसे निश्चय से कल्याण को

पाओगे। जो बच्चे की बाबत लिखा है कोशिश करो अगर पढ़ जाये तो। अगर बिलकुल मुनकिर है तो कहीं मुलाज़िम करा दो। उसकी किस्मत अपने साथ है। वह हर तरीका से मुहाफिज़ है। इस समय मुलाजिमों का भी हाल कुछ नहीं है। इस वास्ते अगर पढ़े तो अच्छा है। अगर उसका दिल टूट गया है पढ़ाई से तो फिर तुम्हारी कोशिश रायेंगा (वे फायदा) है। इस वास्ते बच्चे की दिलचस्पी देखें। नहीं तो फिर कहीं मुलाज़िम करा दें। ईश्वर बच्चे को सत बुद्धि देवें।

३१. भक्ति और वैराग की आवश्यकता :-

ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर विश्वासी होकर अपने आपको उन्नति की तरफ ले जावें। शारीरिक भोग नित्य ही दुःखदायी है। अपना निज स्वरूप पहचानना ही कल्याणकारी है। ईश्वर दृढ़ निश्चय देवे। मानुष जन्म का फल यही है, कि सत् स्वरूप की प्राप्ति होवे। ये तृष्णा रूपी अग्नि अधिक दुखदायी है। इस वास्ते भक्ति और वैराग के पानी से इसको ठंडा करना चाहिये। और आत्म परायण होना चाहिए। तमाम संगत को आशीर्वाद दुवारा कहनी ईश्वर नाम सिमरण की प्रीति देवे। हर वक्त हम को हृदय में देखें। कई जगह से प्रेमी मजबूर करते हैं। देखिये प्रोग्राम किवर का होता है। अगर गंगोठियाँ आना हुआ तो शायद दर्शन हो जावें। वैसे हर वक्त हमको हृदय में देखें।

और हर वक्त गुरु वचन विश्वासी होकर अपनी कल्याण का यत्न करते रहें। मनुष्य जन्म का लाभ यही है कि दुख सुख में समता प्राप्त होवे। ईश्वर नित आनन्द देवे।

३२. शब्द क्या है ?-

ईश्वर सत धर्म देवें। ईश्वर आज्ञा से गंगोठियाँ स्थान पर आ गये हैं। जिस शब्द की दरयाफ़त लिखी है। उस का अर्थ मुकम्मल किसी वक्त लिख कर रवाना किया जायेगा। शब्द की महिमा जो लिखी हुई है। उस शब्द का मयनी ही ब्रह्मनाद है। जो सर्वव्यापक है। ईश्वर को शब्द रूप से ही पुकारा गया है। जिन्दगी का स्वरूप शब्द हो है। जो साकून अकल से मालूम होता है। जो अभ्यास तुमको बतलाया गया है। वही शब्द प्राप्ति का ज़रिया (साधन) है। हर वक्त अभ्यास करते जाओ। जिस वक्त मन अन्तर मुख की तरफ रागिव होवेगा उस वक्त दिल के अन्दर से आवाज सुनाई देगी। नाभि से उठकर दिमाग में मरकिज बनेगी। दिमाग में जब शब्द की प्राप्ति होवेगी। तब वह कामिल फकीर है। तमाम शब्द का ही विस्तार है। हर वक्त कोशिश करो प्राप्ति की। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। अपने देश और धर्म के रक्षक बनो। समता के नियमों का जरूरी प्रचार किया करें। ईश्वर सिमरन, लोकसेवा, आकवत का विचार, बुजुर्गों के जीवन का विचार, गुरु भक्ति इन नियमों को धारण करने की कोशिश

करें। ईश्वर सत बुद्धि देवें। अपने जीवन सुधार की ईश्वर तुमको परम सेवा देवे।

३३. नाम परायणता की दृढ़ता :-

ईश्वर सत आनन्द देवे। हर वक्त एक नाम के परायण हो कर मनो कल्पना का निरोध करें। ऐसे सत यत्न से अन्तःकरण से ममता की मैल का अभाव हो जाता है। तब अविनाशी शब्द का अन्तर में पूरण बोध होता है। हर वक्त सत् यत्न दृढ़ होना चाहिए। प्रेमी जी ! ये शरीरिक ममता अधिक घोर जाल है। इस से निर्बन्धन होना किसी ही परम वैरागी गुनी का काम है। पूरण निश्चय से तमाम शरीरिक कर्म प्रभु आज्ञा में समर्पण करते हुये और एक नाम में दृढ़ता धारण करते हुए गुनी पुरुष सत तत्त अविनाशी शब्द को अनुभव कर लेता है। यही निश्चय गुरु मुख मार्ग है। जब तक कर्म वासना का नाश नहीं होता तब तक सत् बोध नहीं हो सकता है। जब तक प्रभु आज्ञा में कर्म फल को समर्पण न किया जावे तब तक कर्म वासना नाश नहीं होती। इस वास्ते शरीरिक मद का परित्याग करके निर्मल प्रेम से नाम परायण होना चाहिये। ऐसी भावना ही तमाम मलीन संस्कारों का नाश करती है। तव ही बुद्धि निर्मल होकर अखण्ड स्वरूप में निश्चल होती है। ईश्वर सत् परायणता बख्शे ताकि अपने जीवन को कल्याणकारी बना सके। ईश्वर सत् भाव प्रकाश करें।

३४. नाम परायणता ही परम सिद्धि और शान्ति का मूल है : :-

परमार्थ मार्ग में दृढ़ निश्चय से सत्नाम की धारणा को दृढ़ करते रहना चाहिये। यानी कर्त्ता हर्त्ता सर्व जीवन रूप एक अखण्ड आत्मा को जान कर के अधिक श्रद्धा युक्त होकर के सिमरण में दृढ़ होना चाहिये। चूँकि अन्तःकरण में कई जन्मों के विकार भरे होते हैं। इस वास्ते दृढ़ सिमरण उपासना के बल से बुद्धि अहंकार की मलिन को त्याग कर शुद्ध स्वरूप के बोध को प्राप्त होती है । इस वास्ते अभ्यास का प्रोग्राम दृढ़ रखना चाहिए। प्रेमी जी ! ऐसी साधना में तुच्छ मात्र भी समा लगता जावें । तो भो अन्तःकरण की शुद्धि होती जाती है । और मानसिक तपश से ठंडक प्राप्त होती है। अधिक से अधिक कोशिश कर के नाम सिमरण में दृढ़ता धारण करनी चाहिये । और तमाम शक्कूक तोहमात् का त्याग करके एक गुरु वचन के परायण होना चाहिये। पिछले तमाम करूर कर्म निश्चय कर के गुरु चरणों में त्याग के जो आइन्दा निर्मल कर्त्तव्य पालन करने का यत्न करते हैं, वो जल्द ही सत् शान्ति को अनुभव करने लगते हैं। ऐसा हो सत् पुरुषों का सिद्धान्त है । जिज्ञासु का निश्चय गुरु चरणों में अटल होना चाहिए। तब ही मन तमाम कल्पना को त्याग कर के एक नाम के परायण हो सकता है। जो परम सिद्धि और शान्ति का मूल है। अपने पवित्र निश्चय से अभ्यास में मन लगाते रहें। आगे

कल्याण प्रभु खुद करने वाले है। ईश्वर सत् बुद्धि देवे। सत् अनुराग देवें। तमाम परिवार, तमाम संगत को आशीर्वाद पहुँचे।

३५. ज्ञान अभ्यास ही कल्याण का मार्ग है :

अनुभव के बगैर कथनी ज्ञान ऐसा ही है, जैसे प्यासा आदमी जल की तारीफ करके अपनी प्यास बुझाना चाहे। ऐसे कथनी ज्ञान से अन्तःकरण में सत् शान्ति नहीं हो सकती है। जब तक कि सही आमिल होकर के सत् यत्न द्वारा अपने मानसिक विकारों से पवित्रता हासिल न कर लेवे। विद्या द्वारा समझना फिर बार-२ निदिध्यासन करना ही दृढ़ निश्चय का देने वाला यत्न है। सत् विश्वास, सत् अनुराग, दृढ़ वैराग और दृढ़ अभ्यास के धारण करने से मानसिक दोषों से पवित्रता प्राप्त होतो है। तब सत् पदार्थ ज्ञान स्वरूप अन्तर में बोध होता है। जो परम शान्ति है। ऐसे सत असूलों को जो धारण करने वाला होवे। वोही सही साधक है।

दुनिया में रहना तो कमल के पत्ते के समान चाहिए मगर भ्रान्ति के बन्धन में हर एक आदमी अपने स्वभाव के मुताबिक ही दुनियाँ में विचरता है। और दुनियादारों से अपना लगाव कायम रखता है। परमार्थी पुरुषों के वास्ते रास्ता उल्टा है। परमार्थी पुरुषों का लगाव ज्यादा परमार्थी सज्जनों से होना चाहिये। और आम दुनिया दारों से अन्तर

से अलहदगी होनी चाहिए। अवस्था का कोई शुमार नहीं है। अपनी मंजले मकसूद को हर वक्त तय करने का यत्न करना चाहिये ! दीन व दुनियाँ हरएक मानुष अपने स्वभाव के मुत्ताविक ही बनाता है। अपने स्वभाव से ही उसको तबदील कर सकता है। मगर बाहर के संग दोष का भी असर लाजमी होता है।

इस वास्ते परमार्थ में सत् पुरुषों का संग दृढ़ता का देने वाला है। मन की एकाग्रता तब ही होती है जब तमाम शरीरिक सुख व दुःख प्रभु आज्ञा में समर्पण कर दिये जावें। और होना न होना प्रभु आज्ञा में देखा जाये। और अखण्ड वृत्ति से बार-बार प्रभु का नाम का चिन्तन करे। ऐसे दृढ़ अभ्यास से तमाम विरुद्ध कामना का नाश हो जाता है। और अधिक प्रेम प्रभु का धारण करके बुद्धि अपने आप में अचल होती है और सत प्रकाश अखण्ड शब्द को अनुभव करती है। यही असली एकाग्रता का स्वरूप है। अधिक वैराग तमाम संसार से और अधिक प्रेम परमेश्वर के ज्ञान स्वरूप में और अधिक श्रद्धा सत पुरुषों के वचनों पर जिसकी होती है और जो अभ्यास में भी पूर्ण दृढ़ता को धारण करता है। वो ही पुरुष तमाम वासना के अन्धकार से निर्मल हो करके अपने सत स्वरूप में एकाग्रता को प्राप्त होता है। यानी अपने स्वरूप में निःचल होता है। अच्छी तरह विचार करके सत निदिध्यास को दृढ़ करें। ईश्वर सुमत्ति देवे |

३६. आत्म सिमरण की दृढ़ता और जीवन निर्वाह की तलकीन :-

आशीर्वाद पहुंचे । पत्र मिला, ईश्वर सत बुद्धि और सत शान्ति देवे। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी । ईश्वर संकट के समय में उदारता बख्शे ये समय का चक्र अकसर आत्म निश्चय को दृढ़ करने वाला होता है । इस वास्ते प्रभु परायण पुरुष ऐसे दौर में शान्तमयो रहते हैं । हर वक्त जीवन का जो परम लाभ आत्म सिमरण ध्यान है उससे अधिक दृढ़ता धारण करें । और जो जीवन निर्वाह का विचार लिखा है सो प्रभु इच्छा को मद्द नज़र (सामने) रखकर बिलकुल सादगी रूप में वैदिक साधन ईख्तयार कर लेवें तो कोई बाधा न होगा। जैसाकि तुम्हारा निश्चय है । सिर्फ नियम अनुकूल धारणा होनी चाहिये । यानी वक्त मुकर्रश में कुछ सेवा कर दी और ज्यादा समय ईश्वर चिन्तन में गुजारना चाहिये। इससे लोक सेवा भी हो जाती हैं। और अपना भी निर्वाह हो जाता है। अक्सर महात्माओं के साथ यह साधन भी होता चला आया है। भलाई ज्यादा करनी और इब्जाना निर्वाह मात्र लेना । यह भी। एक बड़ो सेवा है। मगर यह खास दृढता रखनी कि बहुत पसार न बढ़ाया जाये । इस से गो आमदन काफी हो जाती है। मगर सरदर्दी के सिवा कुछ हासिल नहीं होता । परमार्थ बिलकुल विगड़ जाता है। आगे तुम बुद्धिमान हो जैसा भो विचार होवे प्रभु इच्छानुसार धारण करें । अक्सर शरीरिक

मुकम्मल दुरुस्त (पूर्ण सही) हो या अधूरी हो अच्छी तरह से विचार कर लेवें। आइन्दा ऐसे विचार अपनी डायरी में नोट कर लिया करें जब हाजिर होने का मौका मिले तब उत्तर पूछ लिया करें। इधर ऐसे विचारों का उत्तर देने के वास्ते और तहरीर करने के वास्ते इतना समय नहीं होता है। ऐसे ग्रन्थों में कई किस्म के ऐसे हालात दर्ज हैं जो महज रोचक रूप हैं, यथार्थ नहीं है, इस वास्ते आइन्दा ऐसे विचार लिखने की इधर ज़रूरत नहीं है। हाजिरी के वक्त तबादला विचार कर लेना चाहिए।

आश्रम जमीन के मुतल्लिक विचार : - और ज़मीन के मुतल्लिक अगर सौदा हो जावे तो एक गेट बिल्कुल छोटा सा उस जगह निकलवाना होगा जो इन्द्रसिंह को ज़मीन मलहका रसोई के साथ है। इस का आखरी बन्द जो आश्रम की दीवार के साथ कुएँ के पीछे वाली दीवार के साथ लगता है। वह अन्दाजन कोने से शायद ५ या ६ गज कुएँ के पीछे तक बन्द होगा। इस की वजह यह है कि दूसरे तमाम रास्ते दूर पड़ते हैं और दो तीन दफा दिन को बाहर जाना पड़ता है, इस वास्ते इधर भी एक गेट निकल जाय तो आसानी होगी। आगे मुनासिब तुम खुद विचार कर लेवें गेट बिल्कुल छोटा ही हो ! जिस में से आदमी गुजर सके और वक्त जरूरत उसको बन्द करना पड़े तो भी हो जावे। आगे तुम उस जमीन के बन्ने के

मुतल्लिक पता देना कि कितना इधर दीवार के साथ है। क्या गेट निकलना इसी जगह मौजू. (ठीक) रहेगा अगर तुम्हारे ख्याल में मौजू (उचित) न हो तो कोई ज़रूरत नहीं है। सिर्फ अब चूंकि ज़मीन ली जा रही है अगर इसका बन्ना इधर अनुकूल जगह हो तो गेट का निकलना बेहतर रहेगा। आगे तुम खुद ही बन्ने के मुतल्लिक देखकर विचार कर सकते हैं। और जल्दी जल्दी इस सौदे को निपटाने की कोशिश करें। और जो जमीन धर्मसिंह के भाईयों ने काश्त शुरू कर दी है उनको रजिस्ट्री होने के बाद यह वाजय कर देना होगा कि जो जगह गुसलखाना (स्नानगृह) वगैरह बनाने की अगर जरूरत पड़े तो उनको फसल से वह जगह खाली कर देनी होगी। अभी कुछ मुल्को हालात हो ऐसे है। शायद अब के साल कुछ न ही बन सके। खैर एहतयातन जतला देना चाहिये। और सम्मेलन के बाद ही इस जमोन को उन्होंने बोना होगा, यह वाजय कर देना। शायद माताओं के तम्बू वगैरह रसोई के पोछे वाले खेत में लगाये जायें। मौका के मुताबिक ही जैसा होना हुआ होवेगा। इसी हफ्ता में इस काम को निपटा कर फिर मौका के मुताबिक दूसरे विचारों की तरफ तवज्जा (ध्यान) करनी। रजिस्ट्रियाँ तो करवा रहे हैं, इन के इन्तकालों का क्या बनेगा। क्या तहसीलदार कभी इस तरफ भी निगाहे करम (कृपा दृष्टि) करेगा। अजीव लोक राज्य का तमाशा है। प्रभु ही सब को अपने फर्ज की सुमति देवें। तबादले वाला

जो खेत ठेके पर दिया है इस की कोई तहरीर होनी नहीं है। आज कल ज़माना अजीब है, मुनासिव विचार करके ही इसके मुताबिक यत्न करें। ईश्वर नित्य रखियक (रक्षक) और सहायक होवें !

१३. अभ्यास में दृढ़ता की युक्ति:-

आशीर्वाद पहुँचे, पत्र मिला ईश्वर सत अनुराग देवे। प्रेमी जी अभ्यास द्वारा सिर्फ नाम की अधिक दृढ़ता में नि:- संकल्प होने का भाव दृढ़ करना चाहिये यानी सर्व प्रभु इच्छा में होना न होना को समझते हुए मनोवृति को नाम में एकाग्र करना चाहिये। ऐसी धारणा विशेष पवित्रता और शक्ति के देने वाली है और ज्यादा स्वास की रफ्तार को रोकना नहीं चाहिये बल्कि सत उपदेश बीज अक्षर धीरे-धीरे सिमरन करना चाहिये। ऐमे सहज स्वभाव सिमरन करते करते बुद्धि एकाग्र होती जावेगी और पूर्ण आनन्द को प्राप्त कर लेगी। प्रेमी जी परमार्थ अकर्म अवस्था है और इन्द्रियाँ कर्मों का जाल हैं। बुद्धि इन्द्रियों के कर्मों में हर वक्त चलायमान रहती है। अकर्म अवस्था का तो इसको बोध नहीं है फिर कैसे धीरज पकड़े। उस अकर्म अवस्था को अनुभव करने के वास्ते भक्ति ज्ञानादि साधन हैं। जो निर्मल भावना से यत्न करते है वह ही उस अकर्म शक्ति आत्मा स्वरूप परमार्थ को पहचान सकते हैं और

सत शान्ति को प्राप्त होते हैं वह ही परम स्थिति और मोक्ष है। ईश्वर सत अनुराग देवे हर वक्त समता के असूलों को अपनायें। इसी से जीवन उन्नति कर पायें। इस मानुष जन्म का सही मकसद (ध्येय) ही सत्य की पहचान है। ईश्वर सत पुरुषार्थ बख्शे अपने सत भाव को प्राप्त करने का। हर वक्त हमको हृदय में देखें ! तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी।

१४. अभ्यास में स्वाँसों की गति और बैठक सम्बन्धी विचार

ईश्वर सत बुद्धि देवे और अपने जीवन कर्त्तव्य में सही रखिया करे। अभ्यास के मुतल्लिक सीधा बैठना चाहिये, शरीर ढोला रखना चाहिए। स्वास न ज्यादा तेजी से लेने चाहिये और न हो ज्यादा रोकने चाहिये। वल्कि दरमियानी हालत में ! सिर्फ नाम का शुद्ध उच्चारण अन्तर सुरती में करना चाहिये। नाम के जाप से खुद ब खुद ही स्वास अपने हालात मुताबिक चलेंगे। तुम को सिमरन में तवज्ज़ा (ध्यान) लगानी चाहिये न कि वक्त की मर्यादा विचार करते रहें। और कोई पुस्तक शकूक वाली न पढ़ें। अंग्रेजों को किधर आत्मविद्या का पता है वह तो सिर्फ शारीरिक तन्दरुस्ती का विचार सोचते रहते हैं। मन की शान्ति का उनको किधर से इल्म (ज्ञान) है। आइन्दा कोई ऐसी पुस्तक न मुताला करें। बच्चों के खेल को तर्क (त्याग) करें। फकीरों के साथ अगर

लगाव रखना हैं तो उनके सही हुक्म अनुकूल चलें। यह नहीं कि तीन माह तक पत्र लिखकर माफी (क्षमा) मांग लेनी। अपने आचार संगत और भावना को दुरुस्त करें। जो पत्रका लिखी जावे उसको संभाल रखें और अपनी ज़िन्दगी के साथ निभावें और अब ज्यादा पत्रका लिखनी बन्द की हुई हैं जो कुछ लिखा जाता है उसको ईश्वर हुक्म समझ कर अपनाओ। पहली पत्रका में तमाम ज़िन्दगी की सार तुम को लिखो गई थी उस को विचार किया करें। बाहोश, बाइखलाक और सही श्रद्धा युक्त बनें तब ही इस संसार की अग्नि से कुछ ठण्डक मिलेगी। जो जो असूल तुम को समझाये गये हैं उन पर पूर्ण कारबन्द होवें, अपनी जिन्दगी को एक नमूना बनावें। इस वक्त दुनिया एक गहरे अजाब की तरफ दौड़ रही है। वह है नुमायशी ज़िन्दगी (प्रदर्शित जीवन) हर वक्त बुद्धि को मुनव्वर (रोशन) करें। नेक लोगों की सोहबत (संग) करें ईश्वर गुरु वचन विश्वास देवें। सही जवांमर्द होकर गुरु आज्ञा का पालन करते हुए अपने आप पर फतह (विजय) पावें और दूसरों के वास्ते एक मिसाल बनें। ईश्वर सत अनुराग देवें और नित्य सहायक होवें।

नोट: - अभ्यास फिलहाल आध घंटा कम से कम और एक घंटा ज्यादा से ज्यादा होना चाहिये। स्वभाव पकते पकते खुद बखुद समय ज्यादा लेवेगा ईश्वर सत बुद्धि देवें।

१५. अभ्यास यानी ईश्वर सिमरण रूहानी (अध्यात्मिक) खुराक है :-

ईश्वर सत बुद्धि देवे अपने तमाम सम्बंधियों को आशीर्वाद कहनी, अपनी ज़िन्दगी को सत मार्ग में दृढ़ करते हुए संसारी चक्कर से अबूर पाना हो सकता है इस के बगैर संसार अग्नि स्वरूप है यानी निहायत रंजोगम का मुकाम है। हर वक्त ईश्वर विश्वासी होकर गुरु उपदेश को अपनाते हुए रोज़ाना ज़िन्दगी के तजुरबे से पवित्र रूप में विचरें। यह ही जीवन गुणकारी है, जो हर वक्त सादगी का मुजस्सम (प्रतिमा) स्वरूप हैं ऐसा भाव अधिक अभ्यास यानी ईश्वर सिमरण में भी समय दिया करें। यह रूहानी खुराक है इससे रोशन ज़मीरी बढ़ती है। अपने ख्यालात पर काबू पाने की शक्ति प्राप्त होती है। सत उपदेश को ही ज़िन्दगी का परम आधार बनावें। इससे दुनियावी मुसीबतों से छुटकारा मिलता है। संगत हमेशा नेक लोगों की करें। रोज स्वाध्याय रूहानी उस्तादों की पुस्तकों का किया करें। जीवन निर्वाह के वास्ते जैसा भी साधन मिल सके। उसको पवित्र भाव से स्वीकार करके अपनी गुज़रान बनानी चाहिए। सार विचार यह है कि दुनियाँ के आगाज़ को देखा। अब आखरत (अन्त) को देखते हुए अपने आप सुख रुई करें। और सही शान्ति जिन असूलों से प्राप्त होती है उन पर हर वक्त दृढ़ रहें। अपने आपको सत असूलों का निहायत

मुख्तार बनावें। यानी मुस्तकिल मिजाज होवें। जिन्दगी की सही तहकीकात (पड़ताल) के रास्ते अपने आपको खड़ा करें और दूसरों की भलाई के वास्ते अपना जीवन बनावें। यानी निर्मल और सदाचारी और निर्मल परउपकारी अपने आपको बनावें। यह ही एक रास्ता जिन्दगी का सही है। इसके बगैर सब अज़ाब और गुफ़लत है यानी खुददारी, खुद पसन्दौ, खुद गर्जी की जो तलाश का रास्ता है। हर वक्त गुरु भगत होकर अपने आप की कल्याण करें तब ही देश समाज और धर्म के बास्ते रोशन मिनार (प्रज्वलित स्तम्भ) हो सकेंगे।

थोड़ा पड़ो ज्यादा समझो। सही समझ को हर वक्त कायम करो, तब ही इस बहरे बे किनार (तट रहित सागर) से अबूर पाओगे। असली रोशनी तुम्हारे अन्दर है उसकी जुस्तजू (प्राप्ति की इच्छा) करो। वह हो तुम्हारी असली रहनुमाई (पथ प्रदर्शित) करने वाली है और तुमको राहत अबदी के देने वाली है। ईश्वर सत विश्वास देवे। काहनूवांन जाना होवे तो सबको आशीर्वाद कहनी। अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। ईश्वर नित ही निर्मल त्याग, प्रेम और सेवा भाव बख्शे और तुमको सहो याचना इन उच्च असूलों की वनी रहे। हर वक्त हमको हृदय में देखें। ईश्वर जिन्दगी के सही नियम में दृढ़ करे।

१६. अभ्यास के मुतल्लिक हिदायत-

पत्र मिला, ईश्वर सत श्रद्धा देवे। प्रेमीजी अभ्यास के मुत- ल्लिक इन बातों को हर वक्त याद रखो-

(१) अभ्यास को कुव्वते बरदाश्ता (सहनशक्ति) के मुताविक करें। यानी हर वक्त ख्याल को बेशक नाम स्मरण में लगाये रखें। मगर सुबह व शाम जो अभ्यास करें वह जितना तबीयत बरदाश्त करे उतना ही करें और आहिस्ता-आहिस्ता तरक्की करें।

(२) स्वास को ज्यादा रोकना नहीं बल्कि शान्ति से जितना आवे जावे उतना ही ठीक है। सिर्फ नाम स्मरण को न भूलें। बहुत जागना भी नहीं चाहिये। ऐसी एहतयात जरूरी रखा करें। आहिस्ता-आहिस्ता मन खुदबखुद आदी हो जावेगा और शान्ति को पकड़ेगा। ईश्वर सत श्रद्धा देवें और बुद्धि प्रकाश करें। अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। प्रेमीजी नित्य सत विश्वास द्वारा अपने आपकी जो उन्नति करता है वह आखिर सही शान्ति को प्राप्त होता है। नारायण सत अनुराग देवे। दृढ़ निश्चय से नाम स्मरण में मन को लगाये रखें। हर वक्त हमको हृदय में देखें। ईश्वर निर्मल प्रेम देवे।

१७. शब्द का अनुभव क्योंकर होता है-

आशीर्वाद पहुँचे, ईश्वर सत अनुराग देवे। हर वक्त गुरु विश्वास प्राप्त होवे। जो प्रश्न लिखा है कि तीन बन्द क्या है।

मन, पवन और नाम की एकता को कहते हैं। ऐसे अभ्यास की परिपक्कता से शब्द का अनुभव होता है। सतपुरुषार्थ करते जावें और प्रभु आज्ञा में अपने आपको न्यौछावर करें। तब ही जड़ देह से सत स्वरूप का अनुभव होता है ईश्वर सत अनुराग देवे। ईश्वर आज्ञा से १७ अप्रैल को तप के वास्ते मंसूरी से दो मील नीचे एक एकान्त जगह में आये हैं। प्रभु आज्ञा से समय कुछ व्यतीत होवेगा। अपनी कुशल पत्रका मारफत नारायण सिंह गोहर सिंह क्लॉथ मर्चेन्ट लन्डूर बाजार मंसूरी के पते पर लिखनी। यह एडरेस (पता) सब प्रेमियों को जो-जो मिले लिखवा देना। हर वक्त हमको हृदय में देख। ईश्वर सत नाम विवेक देवें।

१७. सत नाम की दृढ़ता का उपदेश-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सत शान्ति देवे। अपने प्रण को हर वक्त दृढ़ रखना चाहिए। दुनियाँ की तमाम हरकत परेशानी के देने वाली है। जो प्रथम खुशी मालूम होती है वह ही आखिर में गमी हो जाती है। यह ही काल चक्कर हैं। हर वक्त सतनाम की हढ़ता रखनी चाहिये। सत अनुराग के बल से ही जीव अपने तमाम दोषों पर विजय हासिल कर सकता है। इस वास्ते जीवन शक्ति सत शब्द में अधिक प्रेम रखना चाहिये। ईश्वर सत बुद्धि प्रकाश करे। खुद रोशनी की तह- कीकात (खोज) करें और दूसरों के अन्धेरे से अपने को बचावें

ईश्वर सत परायणता बख्शे और गुरुबचन विश्वास प्राप्त होवे। तमाम दुनियाँ ख्वाहिशों का जाल है। जितनी ख्वाहिश उतनी हो दुनियाँ समझें। सततत्व की दृढ़ उपासना ख्वाहिशात से मुखलसी (छुटकारा) देने वाली है और शारीरिक अभिमान ख्वाहिशों को बढ़ाने वाला है यह निर्णय समझ कर अपने-आपको सत परा- यण बनावे ईश्वर सत नाम विश्वास देवे। तमाम संगत को एक एक करके आशीर्वाद कहनी।

१६. सत मार्ग में जब्त (अनुशासन) की तलकीन :-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सत बुद्धि देवे। प्रेमी जी घबराने की ज़रुरत नहीं फिर कोशिश सही करते रहें। प्रम शायद दयालु होकर फिर अन्तःकरण को रोशनी देवें। इसमें जोर किसी का नहीं चलता, उसकी दया होनी है तुम को पहले जब यह समझा दिया गया था मगर फिर तुमने महफिल लगानी शुरू की तो अब पछताने की बजाये अपनी लगन को दृढ़ करते जावें। प्रभु की जरूर कृपा होगी। छोटी अकल हाजमा कहाँ से लाये | अब अपनी गल्ती को समझ कर आइन्दा ज्यादा अभ्यास में प्रेम धारण करें और जवान पर मोहर लगा दें गैव के हालात की। तब ही प्रभु जी क्षमा कर के फिर सत शान्ति की झलक शायद अपनी अपार दया से दिखलायें। ईश्वर सत विश्वास देवें। प्रेमी जी वा समझ होकर पूरन जब्त से इस मार्ग में चलें तब ही सत शान्ति को हासिल कर सकोगे। ईश्वर नित ही रखयक होवे ॥

२०. शुद्ध जाप का स्वरूप :--

आशीर्वाद पहुँचे। पक्ष मिला ईश्वर सत बुद्धि देवें। प्रेमी जी अभ्यास के मुतल्लिक पत्र में तहरीर नहीं हो सकता है। जब कभी दर्शन हुए तो वहाँ अपनी तसल्ली कर लेगी। यह पों का खेल नहीं कि सालों तक मुयाद गुजार कर भी वह ही शुरू की पूछ । तुम क्या उन्नति करोगे। ईश्वर तुमको ऐसी लापरवाही से जाग्रित करे । अभ्यास में तबज्जा से अन्तर गति और बाहिरगति में धारणा दृढ़ करनी चाहिये । किसी किस्म को जायद हरकत ठोकर वगैरा धारण करनी कोई फायदामन्द नहीं है। निःचल सुरति से और निश्चल भाव से धीरे-धीरे जाप को दृढ़ किया करें। शुद्ध जाप खुद वखुद ही सब हालात को दुरुस्त कर देता है। यह थोड़ा सा इशारा लिखा गया है। जब हाजिर दर्शन किया करते हैं वहाँ ऐसे मखुफी (गुप्त) हालात से तसल्ली किया करें ईश्वर सत बुद्धि देवे । तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी ।

२१. मानसिक दोषों के निरोध के लिए संयम और अभ्यास की तलकीन:-

श्री महाराज जी फरमाते हैं कि अभ्यास के मुतल्लिक आगे तुम को समझाया गया था कि खारिज़ा और दाखिला (बाहिर गति और अन्तर गति) गतियों का बोध रहना

चाहिये। आहिस्ता आहिस्ता अभ्यास करते करते ऐसी स्थिति हो जावेगी।

नीज़ समता विलास पुस्तक में से प्रसंग समता योग सिद्धि का बार बार मुताल्या (पढ़ें) करें। आहिस्ता आहिस्ता लगातार अभ्यास करते करते संकल्प विकल्प का अभाव होता जावेगा। यह जल्दी का काम नहीं है। मानसिक दोषों का निरोध काफी संयम और अभ्यास करने के बाद प्राप्त होता है। इस वास्ते सत श्रद्धा और सत विश्वास सहित दोनों वक्त अभ्यास का प्रोग्राम मुकम्मल रखें। और साथ ही साथ जिस वक्त भी संसारी कारो- वार की उलझन न हो उस वक्त नाम सिमरन की वृति को दृढ़ करते रहना चाहिये। ऐसा लगातार अभ्यास सही सफलता के देने वाला होता है। ईश्वर सुमति देवें।

२२. आत्म सिद्धि प्राप्ति का सही निर्णय:-

पत्र मिला। ईश्वर सतबुद्धि अनुराग देवे। प्रेमीजी अध्यात्म उन्नति के बारे में तुम्हारी बड़ी भावना रही मगर न तजुर्बेकारी की वजह से कई जगहों में राहनुमाई हासिल की है। जिसका नतीजा यह हुआ कि सही रहनुमाई न होने के कारण तमाम समाँ अकार्थ गुज़र गया। अब जो सही रहनुमाई हासिल की है यह हो साधन तमाम सिद्धों का मार्ग है। इस पर निश्चय से चलने का प्रयत्न करें। और तमाम तोहमात का त्याग कर

देवें। नाम सिमरण की दृढ़ता की खातिर कर्म योग, भक्ति योग की भावनायें दृढ़ करते हैं। जितनी जितनी बुद्धि समर्पण भाव को प्राप्त होगी उतना ही अभ्यास में आनन्द प्राप्त होगा। प्रेमी जी आत्म सिद्धि की खातिर प्रथम संसारी भोगों से वैराग को प्राप्त करना है फिर सत सरूप का अनुराग प्रकट होता है। तब अभ्यास की प्राप्ति और कामयाबी में बुद्धि दृढ़ होती है। पूर्ण अभ्यास के बल से तमाम मानसिक दोषों से असंग होकर के आन्तरिक सत सरूप में बुद्धि एकाग्र होकर के निर्वास आनन्द आत्म अनुभवता को प्राप्त होती है। यानी आन्तरिक अविनाशी शब्द का बोध होता है। फिर उस शब्द के आनन्द को प्राप्त होकर के उसी में ही ध्यान मई होती है। और लीनताई हासिल होती है ऐसी अवस्था को ही परम सिद्धि कहा गया है। दृढ़ निश्चय से अभ्यास में यत्न करते जावें और साथ ही बाधक विकारों का त्याग करते जावें जो सत अनुराग का नाश करने वाले हैं। इन के मुतल्लिक थोड़ी सी कैफियत (हाल) नीचे लिखी जाती है। अनुभव करके अपने आप को सत मार्ग में निश्चल करें यानी जो, अवस्थायें आत्म सिद्धि की तहरीर की जाती है इनको अच्छी तरह से विचार करके अपने आप को पूर्णतः पवित करने का यत्न करें।

आत्म सिद्धि विचार-

१. संसार से वैराग, २. आत्म विरह, ३. आत्म अभ्यास,

४. आत्म अनुभवता, ५. आत्मस्थिति, ६. आत्म लीनताई नोट (पहली पाँच अवस्थाओं में अपने आप को गुप्त रखना चाहिये)

(i) वैराग की नाश - इन्द्रियों के भोगों की चेष्टा उत्पन्न होना।

(ii) आत्म बिरह का नाश-लोक यश कीर्ति चाहना।

(iii) आत्म अभ्यास में असिद्धि - आहार, व्यौहार, विचार का अशुद्ध होना।

(iv) आत्म अनुभवता का नाश - सिमरन तप-ध्यान का अभिमान होना और विद्या के मद में आकर लोगों को प्रभावित करके आडम्बर रचना।

(v) आत्म स्थिति से गिरावट - लोक यश के मद में आकर वर या सराप देना और रिद्धि सिद्धि को प्रकट करना।

(vi) आत्म लीनताई—यह अवस्था मुकम्मिल है यानी गुनातीत अवस्था में बुद्धि निःचल होकर के ब्रह्म स्वरूप में लीन हो जाती है।

२३. अभ्यास की दृढ़ता-

ईश्वर सत श्रद्धा देवे, प्रेमीजी अभ्यास को दृढ़ करते जायें और ईश्वरी आज्ञा में अपने आपको वकफ़ करते जावें तब मन एकाग्र होकर ब्रह्म शब्द में स्थित हो जावेगा। सब कुछ

ईश्वर का ही देखें। दुःख व सुख ईश्वर की आज्ञा में ही देखें। अपने आपको एक आर्जी निमित्त कर्म जानें। दृढ़ निश्चय से मन पवन और नाम की एकता करते जायेंगे। बहुत आनन्द मिलेगा।

प्रेमीजी, रास्ता सही अगर मिल जावे तो जो कदम उठाओगे। वह मन्जिले मकसूद की तरफ होते जाओगे। सो तुम सही दृढ़ निश्चय करके इस मार्ग में दृढ़ हो जावें यह ही रास्ता सव महापुरुषों का है। प्रेमीजी शरीर जल करके पवित्र होता है मन की शुद्धि पवन की आमदो-रफन के ध्यान से है। पवन की शुद्धि सतनाम के सिमरन करके है श्री गुरु महाराज का सत उपदेश है। प्रेमी जी, अभ्यास के वास्ते जरूरी आज़ाद वक्त इख्यतार करें। यह लाजमी असूल है। जिस वक्त ज्यादा अभ्यास हो जावेगा उस वक्त हर हालत में नाम ध्यान अभ्यास बना रहेगा। अपनी सुरित को हर वक्त ध्यान में लगाते जावें। प्रेमीजी यह तालीम अलोप हो चुकी थी। ईश्वर आज्ञा से फिर प्रगट हुई है सो तुमने हासिल की। समता जो हिन्दू धर्म की जड़ है उसको फिर प्रकाश करना तुम जैसे गुरुमुखों का अवल फर्ज है। ईश्वर समर्थ देवे. अभ्यास में मन जरूरी पहले अशान्त होता है मगर जब दृढ़ निश्चय हो जाता है फिर कहीं जाता भी नहीं। ऐसा निश्चय हर वक्त धारण करें। कर्त्ता हर्त्ता महाप्रभु जानकर नित्य ही सिमरन करो। सब कर्मों को ईश्वर आज्ञा में अपंण करते जाओ। अपने मन को बड़ी कोकिश से सत अभ्यास में लगाते जाओ।

तब मानुष जिन्दगी का असली फल मिलेगा। प्रेमीजी यह संसार बहर बेकनारा (समुद्र) है इस वास्ते नाम रूपी नौका में बैठकर गुरु रूपी मल्लाह से प्रोत करके ज्ञान रूपी अपना शुद्ध स्वरूप जो किनारा है प्राप्त हो जाओ।

ऐसा विचार नित्य ही करो, जीव अपने सरूप को भूलकर कर्म भोग में दुःख और सुख पाता है। शान्त कभी नहीं होता। जिस वक्त परमार्थ की खोज करता है उस वक्त असली खुशी की तरफ आता है। ईश्वर तुमको श्रद्धा देवे। कभी-कभी पत्रका लिखा करो। ईश्वर आज्ञा से तप की खातिर जंगल में जाने वाले हैं। पत्रका चिनारी के नाम व पता पर लिख देनी पहुँच जायगी। डेढ़ माह तक शायद ठहरेंगे। अगर जगह पसन्द आ गई तो। अपनी कुशल पत्रका लिखते रहा करें। अपने तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सबको धर्म विश्वास देवे। जिससे संसार आनन्द स्वरूप हो जावे।

२४. ब्रह्म और जीव का भेद-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। प्रेमीजी जो पत्र लिखे हैं वो पत्रका द्वारा जवाब नहीं तहरीर किये जा सकते हैं और यह निकम्मे लोगों का विचार है। अपने मानसिक दोषों की निवृती करनी चाहिए। बातूनी जीवन असली नादानी है। जिसने यह सवाल किया है कि ब्रह्म जोव का क्या भेद है।

यात्रा को किसी बहाने गुज़ारना, प्रभु परायणता अनुकुल निर्वाह मात्र को मद्द नजर रखकर ऐसे कार्य कल्याण के मार्ग में निर्वाधक होते हैं। सिर्फ अपना विश्वास निर्मल और मर्यादा में परिपक्कता वाला होना चाहिये। ईश्वर सत नियम में दृढ़ता बख्शे और समता के सत असूलों में प्रण बख्शे यानी निश्चय में सर्व आत्मभाव, मनन में सर्व कल्याण भाव, और कर्त्तव्य में सर्व सेवक भाव को दृढ़ करते हुए निमित्त मात्र सत कर्म में वर्तते हुए जो गुरुमुख अपना जीवन व्यतीत करते हैं वह ही परम शान्ति निर्वाण को प्राप्त होते हैं। इस वास्ते अपनी जीवन यात्रा को महज कल्याणकारी बनाकर दृढ़ आत्म चिन्तन में अपने आप को निश्चल करके निर्वाह मात्र सत कर्म को धारण करते हुए पर सेवा में जो विचरते हैं वह ही परम पुरुष हैं उनका जीवन लोक शिक्षक है। ईश्वर सत अनुराग देवे । अपनी कुशल पत्रका माह व माह लिखते रहा करें। जो मिलें उनको आशीर्वाद कहनी ।

३७. कथा कीर्तन का निर्णय :-

श्री महाराज जी फरमाते हैं कि जो कबीर के दोहे कथा कीर्तन के लिखे हैं वह रुचि बढ़ाने के वास्ते रुचिकारक शब्द हैं । इसका सार यह है कि जिस समय भी किसी को कथा कीर्तन में रुचि हुई उस समय उसको किसी पूर्ण गुरु की पहले जरूरत पड़ेगी। जो कथा कीर्तन का भेद समझावे । अगर गुरु के बगैर

वैसे ही देखा देखी कथा कीर्तन को धारण कर लेता है, वह पुरुष वैसे हो समझें जैसे कि प्यासा आदमी स्नान से प्यास बुझाना चाहता है यानी सब यत्न उसका अधूरा है। इस वास्ते कथा-कीर्तन के समझने के वास्ते पहले पूर्ण गुरु की जरूरत है जो यह भेद समझावे। कथा का सार निर्णय यह है कि सतग्रही पुरुषों के सत इतिहास का गहरा विचार करना जो सत मार्ग में दृढ़ता के देने वाल होता है।

और कीर्तन का निर्णय यह है कि गुरु उपदेश द्वारा अन्तर मुख नाम का निदिध्यासन करके उस परम तत्व की महिमा का अनुभव किया जावे। यह असली कीर्तन है जिसको प्राप्त करके संसार का तमाम राग द्वेष नाश हो जाता है। और बुद्धि निज स्वरूप में निश्चल होती है। इसके अलावा जो गाना बजाना लोगों ने कीर्तन समझ रखा है। यह महज एक आरजी दिलचस्पी का हा प्रोग्राम है। खास कल्याण इसमें कुछ नहीं है जब तक कि अन्तर में सत स्वरूप का बोध प्राप्त करके निर्मल कीति परम तत्व की न जानी जाय। अच्छी तरह से विचार कर लेवें। ईश्वर सत अनुराग देवे।

३८. अन्तर गति अभ्यास की विधि और निःकर्म गति पर विचार :-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी, ईश्वर नित्य सहायक

होवे। प्रेमी जी जो विचार लिखा है। उसका उत्तर लिखा जाता है। गौर करके अनुभव कर लेवें। और आइन्दा के वास्ते कोई शक्क (संशये) चित्त में न धारण करें। अगर अपनी उन्नति करनी है तो वाज्या होवे के अन्तरगत अभ्यास से बुद्धि या मन एकाग्र होता है। और वासना रूपी अग्नि से निर्मल होता है। तब शान्त होकर अपने अन्तर विखे उस ब्रह्म- नाद को अनुभव करता है। जो सरब का आदि मूल है। प्राणों के साखी होने से तत्व सरूप में एकता पैदा होती है। यानी अविनाशी स्वरूप का बोध होता है। प्राणों का साखी (साक्षी) होने से इन्द्रियों का दमन होता है। प्राणो के साखी होने से वृत्ति रहित अवस्था को प्राप्त होता है। प्राणों के साखी होने से अपने आप पर काबू हासिल कर सकता है। प्राणों के साखी होने से निःकर्म स्वरूप आत्मा को अनुभव कर सकता है। प्राणों के साखी होने से जीवन स्वरूप का बोध होता है। जो सर्व प्रकाशी है। आखिरी निर्णय यह है कि जब तक बुद्धि प्राणों की साक्षी न होवे तब तक एकाग्र नहीं हो सकती। जब तक एकाग्र न होवे तब तक अविनाशी तत्व का बोध नहीं हो सकता जो अन्तर विखे प्रकाश कर रहा है। वायु आत्मा नहीं है बल्कि वायु के साखी होने से आत्मा अन्तरविखो जाना जाता है। जो शरीर में व्यापक भी है और अलेप भी। इस वास्ते तमाम शंकाओं को त्याग कर के इस अभ्यास में दृढ़ होते जाओ। जब अन्तःकरण की शुद्धि होवेगी तब उस पर परम तत्व का बोध होवेगा तब ही वासना मुकम्मल

होवेगी। ऋषि दयानन्द जी ने कोई नई बात नहीं कही वास्तव में उस पार ब्रह्म की पूजा और अभ्यास करना चाहिये जिस के जानने से सब कुछ जाना जाता है। जिस के जानने से सर्व स्वरूप वोही दिखाई देता है कि जिसके जानने से तमाम वासना और कल्पना नाश हो जाती है। जिस के 1 जानने से तमाम मालूमात (जानकारी) पूरण हो जाती हैं। जिस के जानने से जाननपन मुकम्मल हो जाता है। ऐसा परम तत्व सर्व आद, सव प्रकाशी ब्रह्म स्वरूप को जानना ही असली ज्ञान है। अब जिस तरीके से बुद्धि एकाग्र होकर उस परम स्वरूप को अपने अन्तरविख देख सकती है वो तरीका तुम को समझाया है। इस में किसी किस्म का शक न धारण करें। तब मन श्रद्धा युक्त होकर अपने दोषों से निर्मल होकर उस साखी स्वरूप को अनुभव करेगा। प्रेमी जी ! इस विचार को अच्छी तरह समझाया गया था फिर तुमको क्या शंका हुई। खैर अच्छी तरह से फिर समझ लेवें। कि मन और पवन को एकता से वृत्ति का निरोध होता है। और वृत्ति रहित होकर अविनाशी शब्द को प्राप्त होता है। जो हालत निःकर्म और निर्वास है। अभ्यास का सीखना महज इतना हो समझें कि स्कूल में जैसे विद्या को खातिर दाखिल होता है। पूरण डिग्री तो किसी वक्त हो बड़ी से बड़ी कोशिश करके प्राप्त होती है। इसी तरह परमार्थ का मार्ग है। अब जो कुछ कहा जाता है उसको परम श्रद्धा से धारण करें। ज्यादा

किताबों के हवाले छोड़ देवे। जब ज़िन्दगी की किताबों और तमाम सिद्धों का राज (भेद) तुम को समझाया गया तो अपने आप को इसमें लीन करें। तब देखें क्या हासिल होता है। यह तरीका ब्रह्म की उपासना का है। इस को सिद्ध गायत्री, और अखण्ड गायत्री, अकथ कथा, अजपा जाप, अनन भक्ति) आदि नामों से सिद्धों ने विचार किया है। अब प्रेमी जी ! एक राई मात्र भी शक दिल में न रखें। अपने आपको ऐसी साधना में सावधान करें। तब इस परम तत्व को पा सकोगे। अब किताबों के हवाले की जरूरत नहीं। जिन्दा पुरुष तुमका समझाने वाला है। इस वास्ते निःसंशक हो कर सत मार्ग में दृढ़ हो जाओ। जिस से परम सिद्धि प्राप्त होवे। इस साधना की महिमा अपार है थोड़ा सा विचार लिखा जाता है। विचार कर लेवें। —दूसरा जो निःकर्म गति का उत्तर पूछा है सो वाजय होवे कि सत् कर्म करते जाओ और उसका नतीजा प्रभु आज्ञा में देखो। अपना भरम त्याग करो तब वासना की अग्नि ठंडी होवेगी। और अन्तरविख निःकर्म स्वरूप आत्मा को जानोगे। निष्काम कर्म से बुद्धि निर्मल होती है। और अभ्यास में दृढ़ होती है। अभ्यास यानी सिमरण की दृढ़ता से असिमर्त होकर यानी निःचल होकर उस परम तत्व को प्राप्त हो सकती है, जो सर्व आनन्द हैं।

नीर मज्जन से तनमल नासे, मन मल हरे संग पवना।
पवन को पीवे गुरु शब्द के संगा, तब परसे पद निह गवना॥

पवन को पीवे शब्द जप जीवें, तब नासे भ्रम गुबारा।
अन्तर में अन्तर सुख पावे, घट देख अलख अपारा॥
मार्ग गुप्त कोई गुरमुख बुझे, बिन रसना नाम कमाई।
"मंगत" दुविधा दुरमत नासे, घर निर्भय घाम लखाई॥

३६. सिमरन के कुछ नुक्तों पर विचार :-

आज्ञाकारी सत् सेवक जी !

(१) जो प्रश्न लिखे हैं उनका उत्तर अनुभव करें। प्रेमी जी नाम का सिमरन न तो तेज स्वास से करना चाहिये और ना ही बहुत स्वास रोका जाय। लम्बा बेशक बर्दाश्त मुताबिक होवे। सिर्फ रोकना ज्यादा नहीं चाहिये। लम्बाई खुद बखुद ही जाप से हो जाती है और इसको पूर्ण स्वांस कहा गया है।

(२) जो उस आसन का तरीका तुम करते हो यानी जिस जगह हाथ रखते हो वो ही ठीक है सिर्फ गर्दन छाती और कमर सीधी हो और अकड़ापन से रहित बैठक होवे। जिससे स्वाँस शाँति और बे रोक अन्दर बाहर आ जा सके।

(३) अभ्यास दोनों वक्त जरूरी है। स्वभाव को नियमानु- कूल बनाना चाहिये। आयु और वक्त की कदर जरूरी ही करनी चाहिये। मन के दोषों में नहीं आना चाहिये। प्रभु आज्ञा को दृढ़ करके दोनों वक्त अभ्यास किया करें इससे जल्दी मानसिक शांति प्राप्त होवेगी।

(४) ये निहायत जरूरी है कि दोनों वक्त अभ्यास के अलावा भी नाम का सिमरन करना चाहिये। जब कभो फुर्सत होवे क्या दिन में क्या रात में जाप को तो एक लमह मात्र भी नहीं भूलना चाहिये। वैसे दो वक्त कच्चे अभ्यास वाले प्रेमी के लिए मुकर्रर हैं। बाकी अभ्यास की परीक्षा तो तब होवेगी जब ऐसा निश्चय दृढ़ हो जावे |

स्वास सुरति और नाम प्रभु, पल-पल एका कीजे।
अन्तर बाहर नाम कमावे, सत् मार्ग भक्ति लीजे॥
विरत रहित मन इकत्र होवे, सहज समाधि को पाई।
उठत-बैठत सोवत जागत, सत्नाम की रसना खाई॥
कर्म की फाँसी सकली नासी, अन्तर ब्रह्म पहचानी।
"मंगत" जाप अजपा को जापे, सोई संत गियानी॥

(५) जब भी जाप करना हो तो गुरु मन्त्र का ही करें और किसी मन्त्र का जाप कोई सिद्धि देने वाला नहीं हैं, जब २४ घन्टे एक गुरु उपदेश को जपने के वास्ते हिदायत है तो और साधन और जाप का कोई सफलता के देने वाले नहीं हैं | ये निश्चय कर लेवें, एक ही नाम जो गुरु उपदेश है। उसको ही अपना जावनमई और ध्यानमयी बनावें। ईश्वर सत् विश्वास देवे, और कोई विचार होवे तो पत्रका द्वारा पूछ लेवें। ईश्वर का भरोसा और उपासना प्रार्थना हो कल्याण के देने वाली है, सत्संग का भी प्रोग्राम बनाये रखें।

तमाम प्रेमियों को दुबारा आशीर्वाद कहनी। ईश्वर गुरु वचन का विश्वास देवें।

४०. परम सिद्धि प्राप्त करने का यत्न :

पत्र मिला ईश्वर सत् शांति देवें। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी, तमाम संगत को आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर नित्त ही सत् अनुराग देवे। प्रेमी जो केवल सत् परायण होकर के सत् कर्मों में विचरें और उनके लाभ व हानि प्रभु इच्छा में समर्पण करें। अपने आपको केवल निमित्त मात्र जानें। ऐसी सत् श्रद्धा युक्त भावना को दृढ़ करके नित ही गुरु उपदेश का सिमरन ध्यान करें। ऐसी पवित्र भावना तमाम कर्मों के जाल को नाश करने वाली है और आत्म तत्व में स्थिति देने वालो हैं। प्रेमी जी समता के भाव को अच्छी तरह समझें और स्वाध्याय सत्संग की खातिर जरूरी सब प्रेमी एकत्र हुआ करें। अपने जीवन को सत् आधारी और सदाचारी बनावें। इस मानुष जीवन में यही परम लाभ है। नित्त हो निर्मल परउपकार में दृढ़ होवें। प्रभु सिमरन में दृढ़ अनुराग रक्खें। संसारी यश मान और अधिक ममता से वैराग को हासिल करें। प्रभु जो घट-घट वासी है उसकी उपासना में मन वृद्धि को निःवल करें। जिन्दगी का बहुत सा तजुर्बा कर लिया हुआ है अब हर वक्त सत् परायणता में दृढ़ होवें। प्रेमी जी जीवन की यात्रा में समत्त भाव को दृढ़ करने से ही परम सुख प्राप्त होता है, इस वास्ते समता के मार्ग में

अपने आप को नित ही निःचल करते रहें। प्रेमी जी समता के ही सब पहलू हैं, क्या राजनीति क्या धर्म नीति। आम शरीरों की एकता राजनीति से ताल्लुक रखती है और प्रकृति बल प्रगट करती है और महज अपने शरीर के विकारों को निरोध करते - २ इन्द्रियों और मन की एकता प्राप्त होती है। इससे आत्म विज्ञान प्राप्त होता है जो सर्व शांति और सर्व संसार का मूल है। जितनी २ ही कोई उन्नति करे समता मार्ग में उतना ही उसको आनन्द प्राप्त हो सकता है। इन सब भावों को विचार करते हुये फिर कुछ २ समय जनता के उद्धार में निष्काम भाव से दिया जावे और ज्यादा समय सिमरन ध्यान में लगाया जावे तो ये सव यत्न परम सिद्धि के देने वाला है। ईश्वर नित्त ही सत् विश्वास देवे।

४१. परम तप :-

जीवन का सत् आदर्श प्राप्त करना ही परम उच्चता है। इस वास्ते अधिक दृढ़ विश्वास से सत् तत्व अविनाशी स्वरूप का निदिध्यासन धारन करते हुये शरीरिक ममता का नाश करना ही परम तप है। यानी हर वक्त एक परम तत्व की दृढ़ परायणता में तमाम शरीरिक कर्मों के फल की आसक्ति का समर्पण करना और लगातार अखण्ड वृति से नाम का चिन्तन करना चाहिए। ऐसे निर्मल सहज

स्वभाव अभ्यास के बल से बुद्धि हंग भाव का त्याग कर के निज स्वरूप में समता को प्राप्त होती है। यह ही सत् यत्न जीवन का महा कार्य है। ईश्वर नित्य ही सत अनुराग का बल देवे। और गुरु बचन का दृढ़ विश्वास प्राप्त होवे।

४२. आत्म चिन्तन के लिए प्रेरणा :-

ईश्वर सत बुद्धि देवे और सत शांति बख्शे। ईश्वर इच्छा से इस काल चक्र में कोई भी नहीं बच सकेगा। जो पैदा हुआ है वह एक दिन जरूर नाश को प्राप्त होवेगा। इस वास्तें इस नाशवान संसार से अपरस होकर ज्यादा से ज्यादा समाँ आत्म चिन्तन में लगाना चाहिये। इस से सत शांति प्राप्त होती है। यह ही एक जीवन का कल्याणकारी प्रोग्राम है। संसार की अग्नि आगे देखी भी है। आइन्दा अपने आपको इस से ठंडा करें। ईश्वर प्रेम और वैराग के जल से। यह ही पुरुषार्थ परम उत्तम है जो शरीर नाश हो चुके हैं उनकी विनाश से सबक हासिल करें। और ज्यादा समा प्रभु परायण होने में लगावें। ईश्वर सत अनुराग देवे। ईश्वर नित्य रखयक होवे।

४३. प्रभु प्रेम कब प्रगट होता है :-

ईश्वर सत् बुद्धि देवे प्रेमीजी, दुःख व सुख ईश्वर की आज्ञा से होता है। हर एक को सहन करना पड़ता है। तुम्हारा

फर्ज है सेवा करनी। आगे कामयाबी उसका नशीब | ईश्वर आइन्दा बेहतरी करें। प्रेमीजी प्रेम जल्दी प्रगट नहीं होता। हर सत् श्रद्धा से सिमरण करते जायें। जब देह का सही मालिक उस परम पिता को जान लेवेंगे तब प्रेम प्रगट होवेगा। घबराने का मकाम नहीं बल्कि शूरवीरों वाला जीवन धारण करना चाहिए। जो मालिक की रजा (मर्जी) वो ही ठीक है। ईश्वर की भावी पर क्या-क्या कष्ट महापुरुषों ने उठाये। तुम किस बात से घबराते हो हर वक्त लोक सेवा धारण करें। हर एक से प्रेम करें, सेवा करें, अन्तर चित्त अभ्यास करें। दृढ़ निश्चय से ईश्वर को मालिक कुल जानें। ऐसी भावना से हो मन में प्रेम की लहर प्रगट हो जावेगी। प्रेमीजी ज़िन्दगी को गज वाली न बनावें बल्कि फर्ज वाली। हर वक्त विचार आजाद रखें। परिवार भी ईश्वर का ही समझें। अपने आपको सेवादार जानें तब ये मन सत् विश्वास को पकड़ेगा। दुनियाँ एक गहरा जाल हैं। बड़ी साबत कदमों (मजबूती) से महापुरुषों ने पार पाया है। होना और न होना सब मालिक की मर्जी देखें। अपने आपको एक बिलकुल अदना (तुच्छ) जानें। तब मन की शान्ति होवेगी। ईश्वर सत् बुद्धि देवें। हर वक्त अपनी आख- रत को देखकर महाप्रभु का सिमरण किया करें। ईश्वर शान्ति देवे।

४४. ओ३म अक्षर की व्याख्या:

ईश्वर सत् बुद्धि देवे, जो कुछ होता है सब इच्छा में होता

है। ईश्वर की आज्ञा में निश्चल रहना चाहिए। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सबको सत धर्म प्राप्त करें। हर वक्त धर्म परायण जीवन इखत्यार करें। जो अर्थ पूछ भेजा है। उसका विचार करें। ओ३म अक्षर के तीन जुज (हिस्से) हैं। आकार, ऊकार, मकार यानी जर, जबर, पेश के मिलाप से ओ३म अक्षर बना है। आकार उत्पत करने वाला, ॐकार पालन करने वाला, मकार नाश करने वाला। इन तीनों ताकतों का जो मालिक है। वो नाद स्वरूप ओ३म् है। ये ओ३म् अक्षर की तशरीह है। इन को मात्रिक शब्द कहते हैं। अडंज (अण्डों से पैदाईश), जेरज (वजूद स्वरूप की पैदाईश), स्वेदज (वनस्पति), औद्वज (पसीने की पैदाईश) ये चार प्रकार की पैदाईश चारखानी भी इन को ही कहते हैं। ईश्वर की शक्ति सब में पूर्ण तरीकों से प्रकाश कर रही है। इस वास्ते उसको सर्वज्ञ कहा गया है। स्थूल विकार लेगुण माया का स्वरूप है। बीच कारीगर आप ईश्वर ही है। ऐसा निश्चय करके ईश्वर का ध्यान करना चाहिए। हर वक्त जीवन शक्ति नारायण का विश्वास होना चाहिये। परउपकार में चित्त को लगाना चाहिए। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। समता की तालीम हर एक को समझायें। जिससे सबको शान्ति प्राप्त होवे। ईश्वर सत विश्वास देवे। अपने जीवन का सुधार करते रहें।

४५. शब्द स्वरूप प्रभु को पाने का सुगम मार्ग-

ईश्वर सत् बुद्धि देवे। प्रेमीजी, शब्द ही सब कुछ है। जो

एकाग्र चित्त होकर अनुभव किया जा सकता है। वह ही ईश्वर पारब्रह्म स्वरूप है। वह ही ज्योति है। उसको जिसने अनुभव किया है वह ही गुरु है। उसने ही माया की कैद से मुखलसी (आजादी) पाई है। और परम शान्त अवस्था को प्राप्त हुआ है। जो तीन काल सम स्वरूप है। उसी मरकज को हासिल करने की खातिर सब प्रकार की साधना है। मगर सच्चे अनु- रागी उस मंजिल को पहुँच सकते हैं सो कृपा करके शौक और शुगल को दृढ़ करते रहें। एक दिन जरूरी कामयाबी हो जावेगी। सब कुछ ईश्वर आज्ञा में देखना। ये बहुत सुगम रास्ता है। थोड़ी देर मे जीव परम पद को प्राप्त हो जाता है। ईश्वर तुमको सत् विश्वास देवे, और पुरुषार्थ देवे। तमाम परिवार को आशीर्वाद कहनी। जो सुपन के हालात हैं, वो मन की कल्पना है। मगर अच्छा है पवित्र ख्याली की निशानी है। जो तृष्णा रूपी रोग जीव को लग हुआ है ईश्वर आज्ञा के कुल्हाड़ा से छेदन करना चाहिए। यह ही रास्ता सत्पुरुषों का है। ईश्वर सत् विचार देवे।

४६. नाम सिमरण का अभ्यास गृहस्त में सुखदायी है-

ईश्वर सत् बुद्धि देवे। सही मार्ग मिल जावे तो प्रेमीजी जरूरी शान्ति मिल जाती है। इस मखफी तालीम (गुप्त विद्या) के सीखने की खातिर महात्माओं ने बड़े-बड़े कष्ट उठाये। तब कामयाब (सफल हुए। सो जो वाक्यात तुमको समझाये गये हैं।

वह ही असलो मार्ग है। दृढ़ निश्चय रखकर कोशिश करें। ईश्वर ज़रूरी सफल करेंगे। हर वक्त अपने मन को अन्तर नाम और पवन में लगाये रखें। यह ही असली साधन है। जो ग्रहस्थ में सुखदायी है। ईश्वर विश्वास देवे। प्रेमीजी अपने जीवन का जरूरी सुधार करें। मानुष जिन्दगी का यही लाभ है। अभ्यास करते-करते परम आनन्द को पाओगे। यह ही मार्ग है, जो जनक जैसे ज्ञानी इस मार्ग में स्थित होकर परम पद को प्राप्त हुए। ईश्वर आनन्द देवे, आप निश्चल चित्त होकर ईश्वर भक्ति में दृढ़ होवें।

मन पवन और नाम को, नितधारो इक सूत।
"मंगत" जाये सब कल्पना, मिले शब्द तत्व रूप॥
ईश्वर सत् श्रद्धा देवे।

४७. शान्ति का नुक्ता (अनुस्वार) -

ईश्वर सब जीवों को शान्ति बख्शे। प्रेमीजी ईश्वर विश्वास दृढ़ रखें। सब कुछ ईश्वर आज्ञा में देखें। इसके सिवा जीव का और कोई चारा नहीं यह ही शान्ति का नुक्ता है। इस ज़माने में हर एक जीव भयभीत है। धर्म के बगैर शान्ति नहीं हो सकती है। ईश्वर सदाचारी जीव बख्शे और आनन्द देवे। हर एक की भलाई करो, हर एक से प्रेम करो। सादगी इखत्यार (धारण) करो। तब ही मन का नाम सिमरण में प्रीत होवेगी।. ईश्वर सत् सेवा का भाव बख्शे और प्रेम भक्ति देवे।

(१) आश्रम सम्बन्धी पत्र।

(२) गुरु-शिष्य सम्बन्धी पत्र।

(३) बाल-धर्म सम्बन्धी पत्र।

(४) चेतावनी।

महा मन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार अजनमा, अदवंत पुरखा

सर्व व्यापक कल्यान मूरत परमेश्वराये नमस्तं ॥

"आश्रम सम्बन्धी पत्र"

१. तौफीक (समर्थ) के बगैर छलांग लगाना फिज़ल है- (तपोभूमि खरीद के बारे में विचार)

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला, ईश्वर सत श्रद्धा देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। प्रेमीजी तपो भूमि के मुतल्लिक आहिस्ता-आहिस्ता ही कदम उठावें। क्योंकि अभी तुम प्रेमियों में इतनी तौफीक नहीं है और मजबूरन किसी दूसरे प्रेमी को कहा भी नहीं जा सकता और इधर हमारी तरफ से कोई मज- बूरी ना समझें। हम कोई स्थान बनवाना नहीं चाहते हैं। क्योंकि कुछ समय गुजर गया है और कुछ गुज़र जायेगा। दीगर तुम प्रेमियों के दर्शन आगे भी एक दो दिन रावलपिण्डी ठहर कर हो जाते हैं और आइन्दा भी प्रभु कृपा से होते रहेंगे। इसके अलावा सब प्रेमी जहाँ भी कभी प्रभु प्रेरणा होवे तो दर्शन दे ही देते हैं। यह सिर्फ विचार से विचार निकला था कि रावलपिण्डी शहर के माफिक ही जगह होनी चाहिए। जिससे लोगों को ज्यादा सबक हासिल होवे। इसमें कोई मज- वूरी ना समझें और ना ही हमको कोई मजबूरी है जिस तरह से होता है सम गुज़र जाता है। सब प्रेमियों को दुबारा आशी- वाद पहुँचे। हर वक्त हमको हृदय में देखें। ऐसे महा कारज

बड़ी कुरबानी से सरअन्जाम होने पाते हैं। इस वास्ते कोई तेजी करने की जरूरत नहीं है। समय पर सब कुछ हो जाता है जो प्रभु को मंजूर होता है। ईश्वर सत् अनुराग देवे। यकम को डेरा गोपीपुर जाना है। प्रेमी उस जगह है। ४ अप्रैल तक तो हुशयारपुर पण्डित लक्ष्मणदास के यहाँ ठहरना होवेगा क्योंकि उसने बड़ी प्रार्थना की है। बाद में प्रभु इच्छा से आगे जायेंगे। जगह खरीदने के इन्तजाम से पहले जगह की मिकदार और अनुकूलता और सव हालात दरयाफत कर लेने चाहिए। बाद में जब कभी समाँ होवे तो कदम उठाना नहीं तो खामोशी हो बेहतर है प्रभु ऐसे कारज सरअन्जाम देने की तौफीक बख्शे। आहिस्ता-आहिस्ता विचार करते रहें। तुम्हारी उन्नति प्रथम तो तुम्हारे औसाफ (गुण) निर्मल से ही है। जो दूसरों के वास्ते भी कल्याणकारी है। ईश्वर सत बुद्धि देवें। तमाम संगत को दुबारा आशीर्वाद पहुँचे। अपनी पत्रका लिखते रहा करें।

नोट- बिलकुल कोई मजबूरी ना समझें और ना ही तौफीक के बगैर छलांग लगाने की कोशिश करें। अपना जाविता दिल (दृढ़ निश्चय) पहले विचार कर लेवें। चूँकि तुम्हारी रिहायश रावलपिण्डी में है। इस वास्ते अकसर और कई जिम्मेवारियाँ तुम पर हैं। सम्भल सम्भल कर विश्वास सहित चलना चाहिये। नारायण मार्ग में कुरबानी के जज्बात वख्शें।

२. जगाधरी सम्मेलन सम्बन्धी विचार-

श्री महाराज जी फरमाते हैं कि बार-बार आप जो लिखते हैं कि जगाधरी में जरूर दर्शन देवें और सम्मेलन भी होवे। आपको सब हालात का पता नहीं कि ऐसे समय में और प्रेमियों की अन्दरूनी हालत भी नादार (गरीब) होने के कारन सम्मेलन कैसे सरअन्जाम हो सकता है। गौ की पत्रका भी आई है कि वह विलकुल ऐसे महाकारज से नावाफिक है, वह क्या वोझ उठा सकता है ! यह उसकी भावना और ईश्वर इच्छा पर ही मुनहसर (निर्भर) है वाकी और प्रमी जिस-जिस मुकद्दर में खड़े हैं वह कितनी कुछ सेवा कर सकते हैं सब हालात को अच्छी तरह समझें। फिर कोई रास्ता अगर तुमको दिखलाई दे तो तह- रीर करें। प्रेमीजी आगे जो कुछ हुआ वह काफी है। आइन्दा प्रभु फकीरों का परदा रखे और इस दुनियाँ के ऐसे कामों से न्यारा रखे तो ही बेहतर है। अब फकीरों की वह अवस्था नहीं है कि प्रेमियों को बार-बार कहा जावे तो फिर कोई काम सरअन्जाम होवे। इनके वास्ते बिलकुल कनायत (सवर) और शान्ति से सम व्यतीत करने का हालात रोशन हो रहे हैं। इस वास्ते ऐसे कारजों में बिलकूल दखल नहीं देना चाहिए। अपने आप मुना- सिव विचार कर लेवें। अगर संगत से कोई ऐसे प्रेमी इशारे पर चलने वाले बाहिमत दिखलाई देवें तो उनके जिम्मे यह काम किया जाये मगर वह भी अन्धेरा ही नज़र आ रहा है। ऐसे

हालात में यह ही बेहतर है कि एक नियम का सिर्फ आश्रम स्थिति के सरूप में सतसंग का पालन कर लेवें आगे जो प्रभु इच्छा और प्रेमियों की श्रद्धा। इन मुन्द्रजा जेल (नीचे लिखी) वातों का मुफसल (पूरा-पूरा) जवाब देवें :-

(i) दूसरे खेत का कब्जा जरूर लेना होगा। क्या इसमें संगत के नहाने की खातिर नल का लगवाना ठीक रहेगा और माताओं के सोने के वास्ते वहाँ हो तम्बू ठीक रहेंगे या हर दो हालत का कोई और वन्दोवस्त हो जावेगा। क्योंकि आश्रम के अहाता के अन्दर नहाना और माताओं का सोना श्री महाराज जो बन्द करते हैं।

(ii) आश्रम के गिर्दो नवाह (आस-पास) में फसल कितनी कार्तिक तक काटी जावेगी।

(iii) छोटे सत्संग में कितनी तादाद में अन्दाजन प्रेमी हाज़िर हो सकते हैं। बड़े सत्संग में कितनी तादाद का आप तखमीना (अंदाज) लगाते हैं।

(iv) क्या शहर से वर्तन वगैरा का बन्दोवस्त हो सकता है' जैसा भी सत्संग करना चाहेंगे उसमें लंगर के इस्तमाल के वास्ते।

(v) लोगों का प्रभाव कैसे ख्याल करते हैं।

(vi) रोशनी वगैरा की एकत्रता करने में कोई हकूमत की तरफ से पाबन्दी तो नहीं होगी?

(vii) आपका विचार छोटा सत्संग करने का है या बड़े का?

(viii) क्या बड़े सत्संग में तम्बू चांदनी वर्गरा की जरूरत होवेगी और उसका बन्दोवस्त क्या हो सकेगा?

(ix) क्या छोटे सत्संग में भी तम्बू चांदनी की जरूरत होगी और कौन-कौन से प्रेमी सत्संग होने की दिलचस्पी रखते हैं? और कोई हालात होवे तो भो इतलाह करना। आइन्दा आश्रम के काम के खर्च का क्या अन्दाजा लगाते है ? और जगह आपके पास क्या रह जायेगी ? आमदन का कितना अन्दाज़ा है ? कुछ बचत रहेगी या सव खर्च हो जावेगा ?

(अज श्री नगर)

(ii) जगाधरी सम्मेलन सम्बन्धी विचार-

प्रेमपूर्वक चरण वन्दना स्वीकार करें। श्री सत गुरु देव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं आप स्वीकार करें और श्री मान भाई साहिब राम स्वरूप जी, नत्थू राम जी, प्यारे लाल जी वा माया राम जी, भोलू भगत और दीगर सब प्रेमियों को श्री महाराज जी आशीर्वाद फरमाते हैं। दास की तरफ से ब्रह्म सत्यं फरमाना जी। आप के प्रेम पत्र द्वारा दर्शन हुये

सब हालात से आगाही हुई। प्रभु जी अधिक सत पुरुषार्थ देवें। जिसके द्वारा सब कारज सुफल हो सकते हैं। सेवा में सम्मेलन के मुतल्लिक विचार लिखे जा रहे हैं जो कि श्री महाराज जी ने उच्चारण फरमाये हैं प्रेम सहित विचार करके तसल्ली बख्श जवाब देवें।

(i) तमाम जिन्स (चीज़ों) वा लकड़ी की फराहमी का बन्दोबस्त

(ii) स्नान के मुतल्लिक कुआ का बन्दोबस्त। एक कुआ माताओं के स्नान के वास्ते मुकर्रर करना होगा।

(iii) जगाधरी निवासी प्रेमियों का सम्मेलन के मुतल्लिक विचार व भावना, कि सम्मेलन खास प्रेमियों तक महदूद रहे या आम सम्मेलन होवे।

(iv) आम जन्ता जगाधरी व गिर्द व नवाह के लोगों की हाजिरी की कहाँ तक तादाद।

(v) प्रेमी अपनी सही कल्याण को मदे नज़र रखते हुये अगर निष्काम भाव से सम्मेलन सेवा में अपने आप को बलिदान देवें तो ज़रूरी प्रभु की कृपा से सत शांति प्रकाशती है और धर्म की जागृति होतो है अगर ऐसा भाव न होवे तो महज एक नुमायण ही जानें।

(vi) तमाम इन्तजाम की बाबत तसल्ली का पत्र लिखना कि आखिर जौलाई तक सब प्रेमियों को दोबारा चेतावनी

सम्मेलन हाज़िरी की दी जावे। आज २५-६-५१ को श्री मान भाई साहिब दीनानाथ जी वापस श्री नगर जम्मू की तरफ तशरीफ ले गये हैं और श्री मान चौधरी हरजीराम जी, पंडित सीताराम जी मलोट मंडो से तशरीफ लाये हैं।

दोवारा श्री महाराज जी आपको आशीर्वाद फरमाते हैं स्वीकार करें, प्रभु जी नित रक्षक होवें। भाई साहिब बनवारी लाल जी, रामदास जी, हरबंस लाल जी, चौधरी जी ब्रह्म सत्यं फरमाते हैं स्वीकार करें।

(अज़ मसूरी)

३. फकीरों से प्रेम शिष्य और श्रद्धालुओं की कुर्बानी पर निर्भर है :

आशीर्वाद पहुंचे, पत्र मिले ईश्वर सत बुद्धि देवें। तमाम प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर नित रखयक होवे। प्रेमी जी हालात प्रेमियों की सेवा का पाया। १५०० रुपया से कैसे सम्मेलन हो सकता है और आप प्रेमीजी कहते हैं कि श्री महाराज जी सम्मेलन की आज्ञा देवें। इसका मतलब यह है कि महाराज जी खर्च भी कहीं से मुय्सर करें और सम्मेलन की आज्ञा भी देवें। वाह कलजुगी श्रद्धालुओं और प्रेमियों की श्रद्धा और फर्ज शनासी, (कर्त्तव्य परायणता) प्रभु हो सत बुद्धि देवें। खैर अब के साल जैसी आप लोगों की भावना है उसके मुताबिक तुमको खर्च भी मुहीया कर दिया जावेगा और सम्मेलन की तारीख भी मुकर्रर कर दी जाती

है। यह याद रखें कि आइन्दा को ऐसी भावना अगर धारण की तो बिलकुल ही फकीरों के पास से अलहदा हो जावेंगे। यह अच्छी गुरु की अजमत (वड़प्पन) आप प्रेमी कर रहे हैं। कि संगत के अपने फर्ज की अदायगी भी श्री गुरु महाराज जी करें यानी कहीं गिरवी पड़ें या नौकरी इखत्यार करें या कहीं से गैबी दफना (खजाना) शिष्यों को मुयसर करें और शिष्य लोग एकत्रित होकर अपनी खुदी को बुलंद करें और नर्क के गामी बनें। आइन्दा ऐसा नहीं हो सकेगा। बल्कि बड़ी से बड़ी कुर्बानी फकीर लोग प्रेमियों की देखना चाहते हैं। अगर प्रेमी कुर्बानी नहीं दे सकते तो फकीरों के साथ प्रेम ना मुमकिन है। यह निश्चय कर लेवें।

विचार सम्मेलन - प्रभु आज्ञा से सम्मेलन को कार्तिक का दूसरा इतवार जो कि १३ कार्तिक को है उस दिन मुकर्रर समझें यानी २१ अक्टूबर को। आइन्दा को भी अगर यह समय अनुकूल रहा तो दूसरा इतवार कार्तिक मुकर्ररा सम्मेलन तारीख लिखें।

दरबार से खर्च - डेढ़ हजार के करीब प्रेमियों ने जो सेवा कही है उसको शामिल कर लेवें और आइन्दा किसी भी सेवा इजाजत के बगैर वसूल नहीं करनी। इस जगह के एक नये प्रेमी ने खर्च सम्मेलन के वास्ते ३ हजार की रकम पेशकश की है सो आज कल तुमको पहुंच जावेगी और छ

सौ के करीब प्रेमी जी भी अपनी सेवा सम्मेलन के अनकरीब ही रवाना कर देवेंगे। यह कुल पाँच हजार से कुछ ज्यादा हो जावेगी इसको संभाल के खर्च करना जितनी भी बचत होवे करें। यह फकीरों का तप नाश करके रकम मुय- सर हुई समझें और सम्मेलन खाता हिसाब अलहदा रखना। जिन्स की फरिस्त साथ रवाना की जाती है और वर्तनों को भी फहरिस्त रवाना की जाती है सो आपने खरीद लेवें और ज्यादा जरूरत हुई तो शहर से इमदाद हासिल कर लें इसके अलावा माताओं को रिहायश का इन्तजाम जो तुमने यह विचार जाहिर किया है दूसरे खेत की बजाये आश्रम के साथ ही वाहिर नलका और गुसलखाना बनाया जावे तो अच्छा है और हिफाजत भी हो सकेगी। गुसलखाने में तो नलका हर जगह महफूज रह सकता है सिर्फ विचार यह है कि आश्रम की हदूद (सीमा) आज़ाद रहनी चाहिये। किसी किसम की अन्दर या बाहिर गड़ बड़ न होवे। इन हालात को विचार कर लेवें और नलका व छोटा गुसलखाना जिस में सिर्फ ५ सौ के करीब खर्च होवे दूसरे खेत के कोने में त्यार करवा लेवें और माताओं के वास्ते वहाँ ही तम्बू लगवा देने। इस के मतल्लिक राम सरूप व गोपी चंद जी से भी मश्वरा कर लेवें और फिर पता देना कि क्या तजवीज़ इखत्यार को है सिर्फ तम्बू और चांदनी किराये पर लानी होगी। उसकी भी तादाद लिख दी गई है। तकरीबन यह

कुल काम इस रकम में अच्छी तरह से सर अन्जाम हो जावेगा। प्रभु सहायक होवें।

प्रेमियों के स्नान के बारे में व्रतपाल की कोठी ठीक है। दो दिन कुआ को चला लेना। रामस्वरूप को वाजह कर देवें और अगर कोई साथ और किसी का रहट वाला कुआ होवे तो उस को भी तारीख के वास्ते अर्ज कर देवें कि दो घण्टा पानी की सेवा कर देवे। आगे जो आज्ञा ईश्वर। आइन्दा अपना लंगर का इन्तज़ाम मुकमल करें।

विचार तो यह है, यह एक जगह नई है इस जगह के रसमों- रिवाज का कुछ पता नहीं है। खैर १३ कार्तिक को सत्संग के बाद कड़ाह प्रसाद हाज़िर संगत को तकसीम कर दिया जावे और बाद में जो भोजन खाना चाहे तो बैठे वरना सबको जाने की आज्ञा हो जावेगी। खास जगाधरी के प्रेमी बमह (समेत) परिवारों के बाहिर की संगत उस जगह भोजन करें। और कोई गरीब अनाथ होवे तो वह भी भोजन पावे। इस विचार के मुताबिक जिन्स का प्रोग्राम लिख दिया गया है। और तुम भी रामस्वरूप से विचार कर लेना अगर कोई तबदीली करनी हुई तो पहिले विचार करके कर लेनी।

नोट- शहर में ज्यादा परापेगण्डा सत्संग सम्मेलन का नहीं करना। अगर कोई पूछे तो कह सकते हैं कि फलां तारीख को सत्संग होगा। यज्ञ वगैरा का नाम तक नहीं लेना। इस नाम में ब्राह्मण लोग और अड़चन हवन वगैरा की

पैदा कर देवेंगे। सिर्फ सत्संग सम्मेलन ही ज़ाहिर करना। तकरीबन २५ से २७ असूज तक दीनानाथ जी और एक और प्रेमी सेवा के वास्ते जगाधरी पहुँच जायेंगे। मलिक को पहले बुलवा लेना और सेवादार तकरीबन चार दिन पहिले आवें और बाहर की संगत एक दिन पहले आवे। ईश्वर आज्ञा हुई और शारीरिक अवस्था ठीक हुई तो पहिले हफ्ते कार्तिक में शायद जगाधरी पहुँच जावेंगे। इसके अलावा आम ब्राह्मण बरादरी को मुतलह करने की कोई ज़रूरत नहीं है सिर्फ प्रेमियों को ही इतलाह दी जावेगी। फहरिस्त में मृच मसाले व सब्जी तरकारी जो दर्ज है बनारसीदास के कहने पर खरीद लेनी और इन्त- जाम के मुतालिक उस जगह पहुंचने पर विचार करें।

हाज़िर काम यह ही है। जिन्स की खरीद करनी व बर्तनों की खरीद करनी। बर्तनों की खरीद में साथ गोकल चन्द को रखें उसको वाकफीयत होवेगी। नलका छोटा गुसल- खाना तैयार करवाना, तम्बू व चाँदनी चार दिन पहले लानी होवेगी। सिर्फ इनके लिए इन्तज़ाम कर रखना। सिर्फ जो जो सेवादार तुम्हारी निगाह में होवें उनको पहले हाज़िरो की लिख देना और पत्रकायें तमाम जगह इधर से लिख दी जावेंगी। सम्मेलन का सब इन्तजाम तुम्हारे ज़िमे है। जिसको साथ इमदादी रखना हो उसको पहले बुलवा लेना। जब सम्मेलन का सब काम अपने हाथ से

करेंगे और जिन्स वगैरा का भी पता लग जावेगा। आइन्दा को इधर बोझ डालने की जरूरत ना रहेगी प्रभु संगत को सही अनुयायी भावना देवें। (अज श्रीनगर)

४. ज़िन्दगी कुरबानी से बनती है-

आशीर्वाद पहुँचे, आपका एक पत्र देरी से जो गंगोठियाँ से होकर आया है मिला। इससे पहले एक पत्र आपको लिखा गया है। शायद पहुँच गया होगा मगर जवाब नहीं आया। ईश्वर हर वक्त धर्म प्रतीत देवे। तमाम कन्वा को आशीर्वाद कहनी। प्रेमी बलराज जी को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर हर वक्त सदाचारी जीवन बख्शे। प्रमीजी अगले हफ्ते में शायद दोरांगला जावें। क्योंकि यहाँ भी प्रेमी आये हुए हैं। दीगर सत्संग हाल का काम अमोलक राम ने शुरू करवा दिया है। यानी ईंट साठ हज़ार के करीव इकत्र हो गई है। और सामान चुनाई का इकट्ठा कर रहे हैं। और शुरू फागन में शायद ईश्वर हुक्म से काम चुनाई शुरू होगा। प्र ेमी लोगों ने जो तकलीफ महसूस की है उसका उपाय शुरू कर दिया है आगे सरअन्जाम ईश्वर के हुक्म से है। क्योंकि गिरानी बड़ी सख्त है। सत्संग हाल की जो जगह मुकर्रर हुई थी वह तबदील की गई है क्योंकि एक मिस्त्री कारो- गर ने जब उस जगह का मुलाहिजा किया तो यह बतलाया कि सहन ढलवान है ऐसे हाल कमरों का सहन हमवार होना चाहिये। और खुदाई का खर्च भी बहुत है। इन वजूहातों को

विचार करके एक प्रेमी ने चान्दनी जिस जगह नसब (स्थित) थी उस खेत के साथ दक्षिण की तरफ के नीचे के ख ेतों में से ढाई कनाल जमीन सत्संगशाला के वास्ते दी है और वहाँ ही ईट वगैरा जमा हो रही है और सब लोगों ने वह जगह पसन्द की है। प्रेमीजी ईश्वर आज्ञा से सब ठीक हो जावेगा। सिर्फ वक्त बड़ा नाजुक है। ऐसे मौके नये कामों के लिए बिलकुल मौजूं नहीं हैं मगर प्रेमियों ने शुरू कर ही दिया है। आगे नारायण सफल करें और कुशल पत्रका जरूरी लिखनी । बलराज जी की माता को आशीर्वाद कहनी और जो तहरीर छज्जियाँ वाली थी वह अमोलकराम ने यज्ञ के हालात में नकल कर लो है। मौका मिलने पर शायद छप जावेगी। ईश्वर सत सेवा का भाव बख्शें। जरूरी गाह वगाह (कभी-कभी) पत्र लिखा करें। प्रेमोजी जिन्दगी कुरबानी से बनती है ईश्वर कुरबानी का जज्बा देवे। हर वक्त हमको हृदय में देखें। नारायण देश भक्ति देवे।

(अज़ तरन तारन)

५. आश्रम ज़मीन को प्रेम द्वारा सुलझाने की तलकीन-

श्री सत् गुरुदेव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं आप स्वीकार करें जी। और श्रीमान भाई साहब नत्थूराम जी, राम स्वरूप जी, मायाराम जी, प्यारेलाल जी व दीगर सब प्रेमियों को आशीर्वाद फरमावें। दास की तरफ से सब प्रमपूर्वक ब्रह्मसत्य स्वीकार करें। आपके प्रेम पत्र द्वारा दर्शन हुए। श्री महाराज जी फरमाते हैं कि बाग वाली जमीन का हालात

मालूम हुआ। वह राजपूत बड़े हैं उन्होंने जमीन ना यह देनी है ओर न हो आश्रम वाली जमीन। ऐसा मालूम होता है इस तनाजह की सूरत में दूसरा कौन ज़मीन तबदील कर सकता है। और जो ठेका मन्जूर किया है वह शशमाही है या सालाना। और बन्ना शिकनी (हदवन्दी) का जरूर ख्याल रखना ऐसा न हो उधर अपनी जमीन मिला लेवें। इन लोगों का कुछ इतवार नहीं है क्या भोलू को वह पैसे देगा। ऐसा न हो कि उस गरीब को कोई हर्ज पहुँचे और यह जो तुम्हारे साथ ठेका मुकरंर किया है। तुमको भी पैसे मिलेंगे या किताबों में ही उसने जमीन कब्ज़ा कर ली है। कागजात माल में क्या लिखवायेंगे। कोशिश करके इन्तकाल पेश करवा देवें ताकि इसकी नीयत का पता लगे अगर कोई शरारत करें तो फिर राजपूत बरादरी के चीदा लोगों से मशवरा करके आश्रम वाली ज़मीन ही हासिल करनी होगी। अगर इसके इन्तकाल में कोई गड़बड़ करें तो। अगर राजपूतों की भी- -ना माने तो फिर क्या कानूनी कारवाई ही करनी होगी या किसी और तरीका से यह मामला सुलझेगा। मुफत में वह ज़मीन लेना चाहते हैं। इन तमाम विचारों को मदे नजर रख कर हालात का जायज़ा लेवें कि ठेका के पैसे वाकई दे देवेंगे या सब टाल मटोल ही है। राम सरूप से भी इस के मुतल्लिक विचार कर लेना और पौधे उमीद है लगा दिये होंगे। इस जमीन का मामला प्रेम द्वारा सुलझ जाये तो ठीक है। आश्रम ने

कोई जायेदाद नहीं बनानी हैं सिर्फ जायज़ हक और जायज जरूरत को मुकम्मल करना है आगे सम्मेलन के मुतल्लिक जो जगाधरी संगत को चेतावनी दी है। सिर्फ इनको यह एहसास करवाया गया है कि वह अपने फर्ज को समझें। आगे आगे काम करने वाले तो कोई खास ही होते है, सम्मेलन के मुतल्लिक तमाम संगत को यह एहसास होना चाहिये कि सत्गुरू महाराज की सरप्रस्ती में इकत्र होकर तन मन धन से सेवा करके अपने अन्तःकरण की शुद्धि करनी है, ऐसी भावना से तो सरव कल्याण होता है अगर इसके उलट जो यह समझे कि सत्गुरू महाराज जी को सम्मेलन की जरूरत है तो ऐसा निश्चय कोई कल्याणकारी नहीं हो सकता है, इन हालात के मुताबिक अब के साल तो सम्मेलन का जायजा लिया जावेगा कि संगत का क्या भाव है अगर कुछ अनुकूल हालात हुए तो फिर आइन्दा सम्मेलन में हाजिरी होनी मुश्किल होगी। ऐसा सब को निश्चय होना चाहिये दीगर आश्रम के हालात जायज दुरुस्त मुकम्मल जल्दी करा लें। रोजाना ऐसे वाक्कयात मौजू नहीं होते और ना ही यह संसारी झगड़े यह चाहते हैं। जल्दी-२ इन ज़मीनों के मामले और रास्ते वाला मामला दुस्रुत होना चाहिए। आगे ज़्यादा तरक्की यह जगह नहीं कर सकती है जैसे हालात दरपेश हैं। सम्मेलन की जिन्स वगैरा की फराहमी मौजू. वक्त पर शुरू कर देनी और इधर से आखिर जोलाई शुरू अगस्त तक सब प्रेमियों को दोवारा

चेतावनी २८ अक्टूबर सम्मेलन की दी जावेगी और हमारा आना आखिर हफ्ता असूज तक हो सकेगा। आगे जैसे प्रभु आज्ञा। उस जगह हाज़िरी के वक्त जो प्रोग्राम संगत की आम दो रफ्त के मुतल्लिक होगा वह फिर किसी वक्त तहरीर कर दिया जावेगा। तुम जो अपने साथ काम करने वाले है उनसे हम मश्वरा हो कर बर मौका सब कारज को सर अन्जाम देना होगा। यह आश्रम व सम्मेलन की सिरदर्दी को ख्वाह मख्वाह शुरू करके खास प्रेमियों ने बन्धन इखत्यार कर लिया है। इस का नतीजा इस ज़माने में क्या खुशगवार होवेगा। ईश्वर ही सहायक होवें। श्री महाराज जी दोबारा आशीर्वाद फ़रमाते हैं स्वीकार करें। ईश्वर निर्मल सुमति देवें।

(अज मसूरो)

६. जगाधरी आश्रम के हिफाज़ती इन्तज़ाम के मुतल्लिक विचार :-

श्री सत गुरु देव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं। आप स्वीकार करें जी और भाई साहिबान राम सरूप जी व्रतपाल जी, सतपाल जो, गोकल चंद जो, गोपी चंद जी सब को आशीर्वाद फरमावें जी। आप के प्रेम पत्र द्वारा -दर्शन हुये सब हालात से आगाहो हुई।

श्री महाराज जी फरमाते हैं कि काम तो अनकरीब (जल्दी) ही खत्म हो जावेगा। पौधों के मुतल्लिक इधर से ही

देखभाल बागों की करके और खास किसी तजुरवा-कार की राये के मुताबिक स्कीम बना कर काम शुरू करना। इघर से कुछ वाकफियत नहीं है। अब आगे के मुतल्लिक विचार सोचना होगा। जगाधरी में हमारा आना मुश्किल ही होगा क्योंकि शरीर भी खास ठीक नहीं हुआ और ना ही अभी कोई प्रभु प्रेरणा है। छोटा सा सत्संग अगर देहली के प्रेमियों की मर्जी होवे तो माह कार्तिक में आरम्भ कर देना। खास सम्मेलन का होना तो ना मुमकिन है। प्रेमियों का उत्साह बहुत कमजोर है। और आइन्दा आश्रम के खर्च के वास्ते सेवादार कोई नहीं है इस वास्ते सम्भल सम्भल कर कदम उठाना। आश्रम के हिफाज़ती इन्तज़ाम के मुतल्लिक भी गौर करनी। ऐसी नादार (गरीबी) हालत में किस तरह से यह सिलस्ला दुरुस्त रहेगा। खास प्रभु प्रेरणा तमाम संगत और जगाधरी की संगत की श्रद्धा के वगैर आश्रम के इहाता में कदम रखना भी मुश्किल है। अगर शरीर दुरुस्त खास हो गया तो शुरू सर्दी किसी एकान्त जगह में जाना होगा। अब ऐसे जमाने में खामोशी और तिन्हाई बेहतर है। तपस्या आश्रम का सादगी में वन्दोवस्त कर लेवें जब तक प्रेमी अपने फर्ज को पूर्ण सर अन्जाम ना देवेंगे तब तक आइन्दा का कोई प्रोग्राम निश्चित नहीं हो सकता। पहिले का समय गया है। अब प्रेमी अपनी कुर्बानी का सबूत देवेंगे तो ही कुछ जाग्रति हो सकती है।

यह थोड़ा सा विचार लिखा जाता है इस को विचार करके आइन्दा मुनासिव कदम उठावें जी ।। ईश्वर सत भावना देवे। श्री महाराज जी दोबारा आशीर्वाद फरमाते हैं (अज श्री नगर)

७. स्वार्थ कारज के वास्ते आश्रम में जगह नहीं है :-

श्री सत्गुरु देव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं आप स्वीकार करें जी । और श्री मान भाई साहिब माया राम जी, हकीम नत्थू राम जी, गोकल चंद जी, गोपी चंद जी, राम सरूप जी, नन्द लाल जी वा भोलू भगत जी, प्यारे लाल जी सन प्रेमियों को आशीर्वाद फरमावें । दास को तरफ से ब्रह्म सत्यम् फरमावें जी । आप जी के प्रेम पत्र द्वारा दर्शन हुए। सेवा में अर्ज यह है कि श्री महाराज जी फरमाते हैं कि ज़मीन के मुतल्लिक हालात मालूम हुए। रिजस्ट्री हो जाने पर ही पूरी तसल्ली का बाइस (कारण) हो सकता है। क्योंकि हालात जमाना निहायत नाजुक है। इस वास्ते कोशिश करके जल्दी से जल्दी काम को निपटावें ताकि फिर और विचार होवे ।

बोरिंग का खर्च चूंकि ज्यादा हुआ है और शायद तुम्हारी नाकत इस खर्च के काविल वरदाश्त न होवे। इस वास्ते आश्रम खाता से ही रकम अदा कर देवें तो कोई तुम्हारी श्रद्धा में फरक

नहीं पड़ेगा। आश्रम की उन्नति की अधिक जिम्मेवारी तो तुम सर अन्जाम दे ही रहे हो। और अपनी शरीरिक मानसिक शक्ति को अर्पण कर रहे हैं। इस वास्ते इस विचार को विचार कर लेवें। किसी किसम की मजबूरी ना उठावें। जिस वक्त तुमने आज्ञा वोरिंग की मांगी थी उस वक्त हालात आश्रम नाजुक थे। अब बोरिंग का खर्च आश्रम फन्ड बर्दाश्त कर सकता है आगे जैसी तुम्हारी मर्जी — के मुतल्लिक जो लिखा है सो वाजूह होवे कि आश्रम को सिर्फ परमार्थ कारज तक ही महदूद रखना चाहिये और किसो किसम के भी परिवारिक कारज ऐसे त्याग आश्रम के वास्ते शोभा दायक नहीं है। अच्छी तरह से विचार कर लेवें। इस का असर तुम्हारी खुद जिन्दगी और आश्रम दोनों के वास्ते ना मौजू ं हैं। इस वास्ते स्वार्थ कारज के वास्ते आश्रम में आज्ञा नहीं हो सकती है।

श्री महाराज जी दोबारा आशीर्वाद फरमाते हैं स्वीकार करें जो। इस जगह जो श्री मुख्य वाक्य अमृत उच्चारण हुये हैं "समवाद विज्ञान" के रूप में आपको तहरीर करके रवाना किये जायेंगे एक दो रोज़ तक || श्री मान चौधरी साहिबान को श्री महाराज जी आशीर्वाद फ़रमाते हैं दास की तरफ से ब्रह्म सत्यं फरमाना जी। उमीद है भाई साहिब मदन लाल जी आश्रम में पधारे होंगे। भाई साहिब रलया

राम जी की मानसिक और शरीरिक सेहत से पता देना जी। श्री महाराज जी की कृपा दृष्टि से दास आपकी शुभ कुशलता चाहता है। प्रभु जी नित सहायक होवें जी। भाई साहिब मुकन्द लाल जी ब्रह्म सत्यं फरमाते थे। दो रोज़ हुए वापस चले गये हैं। बनवारी लाल जी और सब प्रेमी ब्रह्म सत्यं फरमाते है स्वीकार करें जी (अज़ मसूरी सिद्धखड)

गुरु के प्रति शिष्यों का धर्म

१. गुरु उपदेश धारन करने की तलकीन :-

ईश्वर सत बुद्धि देवे। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत धर्म विश्वास देवे। प्रेमी जी दर्शन हाजिर प्रभु इच्छा से हो समय आने पर हो सकेंगे। वैसे हर वक्त हमको हृदय में देखें। जिवर जिधर मालिक की आज्ञा होती है उधर उधर ही यात्रा करनी पड़ती है। यह ही आज्ञा मेरे मालिक की है हर वक्त तुम्हारे प्रेम से तुम्हारे हृदय में ही रहते हैं प्रभु सेहत देवे। कल से जंगल में आये हैं और वारिश भी शुरू है। प्रभु इच्छा से प्रेमी- -ने अधिक सेवा भाव को धारण किया हुआ है। उसके प्रेम से इघर ठहरना हो गया है। आप लोगों को काफी सेवा का मौका मिला है। अव जितनी आज़ादी होवे उतना ही बेहतर है। क्योंकि परमार्थ में चलने से अकसर जीव घबराता है। इस वास्ते आहिस्ता आहिस्ता ही सेवा धर्म में चलना कल्याणकारी है। ईश्वर इच्छा जब हुई तो आप के चनारी में दर्शन होंगे। वैसे हमको हाजिर ही जाने। तमाम माताओं और बच्चों को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सत शान्ति वरताये। तमाम प्रेमियों को वाज़ह होवे कि गुरु उपदेश को अच्छी तरह से धारण करें तब सांझ बनी रहेगी नहीं तो शायद दशन भो मुश्किल हो जावें। फकीर लोग ज्यादा प्रेम प्रीत पैदा नहीं

करते वह तो अपने फर्ज से जीवों के कल्याण की खातिर बिचरते हैं। अगर कोई आज्ञा मानेगा तो सुखी होगा और लोक परलोक में शान्ति प्राप्त करेगा। अगर मन मुख रहेगा तो किसी जगह भी आराम ना होगा। यह धर्म का सिद्धान्त है ।। सव प्रमियों को प्रभु सत बुद्धि देवें और गुरु उपदेश अपनाने की शक्ति बख्शें । हर वक्त हमको अपने प्रेम द्वारा हाजिर जाने । ईश्वर नित रक्षक होवें और श्रेष्ठ आचरण प्राप्त होवे । तमाम प्रमियों को एकता सहित रहना चाहिए। ज़माना बड़ा नाजुक है ।

(अज़ कारकुटनाग मट्टन पोस्ट)

२. गुरु वचन में विश्वास रखने की तलकीन :-

आशीर्वाद पहुँचे । पत्र मिला, ईश्वर सतश्रद्धा देवे । प्रेमीजी तुम्हारा प्रेम हाज़िर ही था। जिद न करें। हर वक्त गुरुबचन विश्वासी होकर अपनी जिन्दगी को पवित्र करें और देश और धर्म के रखयक बनें। ईश्वर सत बुद्धि देवे । तमाम संगत को एक एक करके आशीर्वाद पहुँचे । ईश्वर सबको दृढ़ निश्चय देवे, हर वक्त हमको हृदय में देखें । प्रमीजी हम तुम्हारे में मौजूद हैं । क्या हुआ जो इस जगह आ नहीं रहे ईश्वर प्रेम देवे, ईश्वर हर वक्त नाम प्रतीत और संगत सेवा भाव बख्शे ।

(अज काहनूवान)

२. गुरु उपदेश में दृढ़ता धारण करने की तलकोन :-

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला, कुशलता से आनन्द हुआ ।

दीगर अहवाल यह है कि जो राजे मारफत (अध्यात्मिकता) तुमको दिखाया है उसको बड़े प्रेम से ग्रहण करते रहो। कोई मुसीबत तुम पर गलवा ना पायेगी। सब लोग गर्मी के घास की तरह जल जायेंगे । जहाँ तक हो सके सत्य को कभी ना छोड़ें। यह हो महापुरुषों का धर्म है। अपने गुरुमन्त्र को अच्छी तरह से जपते रहा करो। कोई मुसीबत न होगी यही ही हमारा आशीर्वाद है । तुम हमारे वचन को प्रमाण करते रहा करो । कोई क्लेश संकट ना आवेगा जिसके सिर पर ईश्वर की कृपालता है उसको किसका डर ! अपनी जिन्दगी को बड़ी जदोजहद (संघर्ष) करके एक दुनियाँ का नमूना बनाओ। हमारी तहे दिल से यही आशा है और मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम जैसे सदाचारी पुरुष जरूर इस मकसद को हासिल कर लेगें । जो काम आपका मठ के मुतल्लिक है उसको एक फर्ज समझ करके करो और दिलवस्तगी (मानसिक लगाव) ना लगाओ और दृढ़ भावना गुरु उपदेश में रखें। तमाम राज तुमको दिखा दिया है अच्छी तरह से ग्रहण करो। और अपने मानुष जीवन को सफल कर लो । तकलीफ जो सिर पर आती है महात्मा लोग उससे सबक सीखते हैं ना कि घबराते हैं। इरादा शेरों की तरह रख कर अपने मकसद (लक्ष्य) को हासिल करें। हमारे दिल की निगाह तुम्हारे सिर पर रहती है। कोई फिकर न करें। मैंने अपनी आधी जिन्दगी तुमको दी है।

इस वास्ते अपने आपको चिरंजीव समझो और आइन्दा के

वास्ते हर वक्त आशीर्वाद लेते रहो। मैंने तुम्हारे सदाचार की अच्छी तरह तहकीकात की है तुम पूरे उतरे हो। इस वास्ते ईश्वर बहुत आनन्द और सफलता देवे और आइन्दा को अधिक सदाचार देवे। जो जाहिर मन्त्र है उसको हर सुबह शाम को किसी काम आरम्भ करते हुए सिमरो। ईश्वर जीत देवेगा और तेज बढ़ावेगा और अभ्यास का पूरा नियम रखो। सब तरह से आनन्द होवेगा। मैं दस बारह दिन तक यहाँ पर रहूंगा। यह मानते तो नहीं पर इरादा यही है तुम मेरे इस जगह होते-होते. सब खैरियत और आनन्द का जवाब देवें।

सत गुरु साध के बचन में जो राखे विश्वास।
तीन लोक की सम्पदा सदा रहे तिस पास॥
उठत बैठत गुर शब्द में मनुवाँ ले परो।
निश्चय से साधन करे दुर्लभ जीवन हो।
सबल करम का करता जाने एक करतार।
आप अकर्ता हो रहे यही ज्ञान तत्त सार॥
सरजनहार गोविन्द को मन में सदा चितार।
गुर सिखया से उभरे जीत चले जम काल॥
अवगुण सकले काढिये सूरा नाम धराए।
जन्म कदार्थ होवे सत्गुरु सीख सहाये॥
परम सहायक जगत में अमृत नाम अमोल।
पीछे कोई जन जौहरी राख एकचित तोल॥
परम सहायक जगत में अमृत नाम अमोल।
पोवे कोई जन जौहरी राख एकचित तोल॥

सदा सदा जय कार तिस जो ले संत संदेश ।
सदा आनन्द मन में बसे चूके भ्रम वलेश ॥
सुरति जपे एक नाम को सत्गुरु के प्रताप ।
अमृत झरे आकाश से मेटे गुण ताप ॥
सत सिखया संसार में सत नाम विश्वास ।
"मंगत" पीवे गुरुमुख तन मन पूरन आस ॥

इस जगह दो तीन प्रेमियों ने फोटो लेने का असरार (जिद) क्या है अगर बहुत लाचार किया तो एक फोटो तुमको रवाना किया जावेगा। खत का जवाब जल्दी देवें । संसार में दुर्लभ प्राप्ति सच्चिदानन्द पुरुष की है । इस वास्ते अपने जीवन को उसके आधार पर रखें। सत्गुरु ईश्वर सब सहायक होवें

(अज पचमरी)

४. गुरु बचन को सही सरूप में अपनाने से ईश्वर दरबार से सुरखरुई :-

श्री सत गुरु देव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं आप स्वीकार करें और श्रीमान भाई लक्ष्मन दास जी, मलिक भवानी 'दास जी, अनन्त राम जी, सरदार सन्तसिंह जी, अमीरचन्द जी और दीगर सब हाज़िर संगत को आशीर्वाद फरमावें । श्री महाराज जी फरमाते हैं कि आपके प्रेम पत्र द्वारा समाचार से आगाई हुई दीन दयाल जी अधिक सत श्रद्धा हम सब प्रेमियों को सत्संग में शामिल होने की वख्शें जी । जिससे निर्मल

विचारों और सतकर्म की सिद्धि प्राप्त होती है। भाई साहिबान जी श्री महाराज जी फरमाते हैं सत्संग की हाजिरी अधिक लाजमी है।

मगर इससे भी लाज़मी सत नियमों पर अमल करना है। ईश्वर दरवार से सुरखरुई तब ही हासिल हो सकेगी जब गुरु बचन को सही सरूप में अपनायेंगे। नहीं तो गुरु दरबार के भी देनदार और ईश्वर दरबार में तो कहीं ठिकाना ही पाना मुश्किल होगा। ज़िन्दगी का सुधार कोई बच्चों का खेल नहीं है। वल्कि बड़ी कुरबानी से कुछ हासिल होता है। ईश्वर सव को सत अनुराग देवें। श्री महाराज जी दुबारा आशीर्वाद फरमाते हैं स्वीकार करें जी। दास की तरफ से हाथ जोड़कर सव संगत को प्र ेम से ब्रह्म सत्यं फरमाना जी। ईश्वर सत परायणता में नित सहायक होवें जी।

(अज़ श्रीनगर)

५. गुरु कृपा और जीवन सम्बन्धी संशों को निवृति

श्री महाराज जी कृपा दृष्टि करके फ़रमाते हैं कि-

(i) सत् गुरु को हर शिष्य के हालात का इल्म हो सकता है अगर मालूम करना चाहे तो। बाको शिष्य अपने सत विश्वास के बल से ही गुरु कृपा हासिल कर सकता है और अपने हालात को दुरुस्त कर सकता है। शिष्य अगर अपने सत यत्न को छोड़ देवे तो

वह फिर कैसे गुरु कृपा का पात्र हो सकता है अच्छी तरह से समझ लेवें।

(ii) सत विश्वास का यत्न मनुष्य को कुवत्ते बर्दाश्त (सहन शक्ति) बख्शता है और देव वृतियों द्वारा रहनुमाई भी करता है।

(iii) फर्ज़ की अदायगी हमेशा शक्ति पर इनहसार (निर्भर) रखती है जिसमें कोई रंज (दुख) का मुकाम नहीं है हाँ अल्बता गुर्जु का मामला बड़ा दुश्वार है जिसको पूर्ण करने में खुद भी खत्म होना पड़ता है। इस वास्ते गर्ज और फज़ के मसले को अच्छी तरह से समझें। तलकदारों (सम्बन्धियों) में तो गर्ज का ही दौर चलता है जो जीव का वास्त- विक स्वभाव है। फर्ज़ शनासी (कर्त्तव्य परायणता) और फर्ज अदायगी का मामला उस जगह समझना चाहिये जिसमें अपना निजी स्वार्थ हासिल करने की उम्मीद न कायम की जावे। इस विचारधारा को अच्छी तरह से समझ करके फर्ज अदायगी में रंज वा गम से वालातर रहना चाहिए और हसबतौफीक यत्न करना चाहिए वाकी गज का मामला खुद ही समझकर अमल में लावें।

(iv) कामिल पुरुष के मिलने पर साधारण पुरुष को

कामिल पुरुष की सत शिक्षा में अपने आपको मिटाना होगा तब ही कुछ कामयावी हो सकती है।

(v) जिन्दगी ना रहमत है ना जहमत है बल्कि ख्यालात का मजमूहा है जैसे जैसे ख्यालात के जे.र असर होकर मानुष कर्त्तव्य करता है इसके नतीजे को हासिल करके अपने आप में खुशी या गमी के तूफान को पाता है। यह ही जिन्दगी बेकरारी की है और जब ख्यालात की धारा को ही सत सरूप के प्रेम में खत्म कर दिया जावे तब असली जावेद शान्ति) जिन्दगी हासिल होती है। जो सही मानों में ज़िन्दगी है। अच्छी तरह से विचार कर लेवें।

ईश्वर सत बुद्धि देवे। श्री महाराज जी दुबारा आपको आशीर्वाद फरमाते हैं स्वीकार करें ईश्वर नित सहायक होवें।

(दास बनारसीदास)

६. गुरु शिष्य अन्तर तथा समर्पण बुद्धि का निर्णय :-

श्री महाराज जी फरमाते हैं कि अपने प्रश्नों का उत्तर विचार कर लेवें। आत्मा सर्वज्ञ व्याप रहा है। गुरु ने तो आत्मा का बोध किया है और शिष्य बोध प्राप्त करने के यत्न में लगा हुआ है। सही गुरु और शिष्य में इतना ही फर्क है। गुरु की अवस्था में शिष्य कोई दूर नहीं है बल्कि उसका

अपना आप ही है। शिष्य के नज़दीक गुरु काफी दूर है। जब तक कि सही गुरु के तत्व को शिष्य जान ना लेवे।

(ii) सपुदर्गी यानी समर्पणता और यत्न का यह मेल है। कि समर्पणता के बल से केवल यथार्थ यत्न ही हृदय से उत्पन्न होता है जो कि जीवन उन्नति में सहायक है और मलीन वासनाओं का अभाव हो जाता है। समर्पण बुद्धि के बगैर जो भी यत्न किया जाता है वह बन्धन दर बन्धन और वास्तविक अशान्ति के देने वाला होता है। यानी समर्पण बुद्धि से निर्मल संकल्प और निर्मल यत्न प्रकट होता है। जो कि परम सुख का सरूप है। समपण बुद्धि की दृढ़ता शुद्ध प्रयत्न को प्रकाशने वाली है और नित सरूप आत्मा के आनन्द में स्थिति के देने वाली है। सत पुरुषों का प्रथम सार साधन समर्पण बुद्धि की दृढ़ता हो है॥

(iii) खूबसूरती का निर्णय यह है कि संसारी विचरत हालत में वासना की गिरफतारी में जिन पदार्थों में मन अति लोभित होता है उसके वास्ते वह ही खूबसूरत हैं ख्वाहे बदसूरत और दुर्गन्ध सहित क्यों ना होवें और असली खूबसूरती वह ही है जा ना बदलने वाली हो और जिस कर के तमाम बदसूरतें सूरतमंद प्रतीत हो रही हैं। वह एक परम तत्व आत्मा हो है जिसके प्रकाश से तमाम जड़ प्रकृति प्रकाशवान हो ही है वह ही परम सूरत, परम प्रकाश और

परम प्रसन्नता का भंडार है। ऐसा निश्चय होना चाहिये। अच्छी तरह से विचार कर लेवें। ईश्वर सत बुद्धि अनुराग देवे।

बाकी दीवाचा (सूची पत्र) एक ही होना चाहिये दरम्यान में और दीवाचों की ज़रूरत नहीं है। तुम्हारा विचार ठीक है। इस के मुताबिक ही करें। श्री महाराज जी दोबारा आशीर्वाद फरमाते हैं स्वीकार करें ईश्वर नित सहायक होवें।

(दास बनारसी दास)

७. गुरु बचन में लीनताई का स्वरूप -

श्री महाराज जी आशीर्वाद फरमाते हैं कि तुमने अपने निर्मल विचार द्वारा जो अति उत्तम प्रतिज्ञा में दृढ़ता धारण करने का निश्चय किया है सो परम कल्याण रूप है। गुरु तत्व या गरु बनन में लीनताई का सरूप यह है कि तन, मन, धन आदि सम्बन्ध से गरु शिक्षा का सम्बन्ध अधिक विशेष सरूप में जानते हुए मन, बचन, कर्म द्वारा सत शिक्षा को अपनाने का प्रयत्न धारण करें। जब ऐसी दृढ़ता प्राप्त होती है तब ही बुद्धि शरीरिक सुखों के राग से निर्मल हो करके सत सरूप के अनन्य सिमरण में निश्चल होती है और परम सुख अविनाशी तत्व आत्मा का बोध करती है जो निःखेद स्थिति है। ईश्वर नित ही पवित्र निश्चय निर्भय स्थिति प्राप्ति का बख्शे। सब प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी।

८. सत पुरुषार्थ और गुरु बचन विश्वास :-

आशीर्वाद पहुंचे। पत्र मिला ईश्वर सत श्रद्धा देवें। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर ही रख्या शक्ति देवे। जो प्रेमी केम्प में आये हैं उनको आशीर्वाद कहनी और वाज्या करना कि मुसीबत झीलना जवान मर्दों का काम है ईश्वर शायद कुछ बेहतरी ही करें। अक्सर दुनियाँ में ऐसे आन्दोलन आ जाते हैं। हर वक्त सत धर्म द्वारा अपने अन्दर यक जहती पैदा करनी चाहिए और जमाना की गर्दिश से सबक सीखना चाहिए और समता के भेद को समझना चाहिए। दुख और सुख प्रभु आज्ञा में देखना चाहिए। हिन्दु व सिख कौम की तकलीफ को सुनकर निहायत दुख हुआ है ईश्वर लोगों को अब भी धर्म की बुद्धि देवें और सत पुरुषों के बचन में विश्वास देवे। सव प्रेमियों को दुबारा आशीर्वाद कहनी और हालात आगाह करना। हफ्ता तक शायद इसी जगह होंगे आगे जा प्रभु आज्ञा ईश्वर सत पुरुषार्थ और गुरु बचन का विश्वास देवें। अब प्रेमीजी उजड़ी हुई हिन्दू कौम इस इलाके में समता के असूलों पर चलकर ही ठिकाना पकड़ सकती है और सही जीवन को हासिल कर सकती है। हिम्मत मत हारें एक भी श्रद्धावान बहुत सा भला कर सकता है। अपनी उन्नति के वास्ते पुरुषार्थ नहीं हारना चाहिए। ईश्वर के मार्ग पर चलने से ईश्वर सहायक होता है। ऐसी बुद्धि प्राप्त करें ईश्वर सिमरन और लोक सेवा में

दृढ़ निश्चय रखें ऐसी धारणा से ही निज स्वरूप का बोध प्राप्त होता है । जवान मर्द बनें। सत् और पत में अपने आपको न्योछावर करना ही शूरवीरता है। ईश्वर दृढ़ विश्वास देवें और त्याग बुद्धि प्राप्त होवे । सब हालात लिखना ।

६. गुरु सिख्या अपनाने की तलकीन :-

तिल भर दे मन भर ले जो गुरु सेती वापारे ।

गुरु की दात भेंटिये गुरुचरनी जिन जीवनकाज संवारे ॥

गुरु समर्थ सब विपत निवारे सत सेवक होय निहाल ।

आज्ञा कारी पद को बूझे सब वन्दी छूटे जाल ॥

मन स्वतन्त्र कर्म स्वतन्त्र चित्त भाव भक्त को धारी ।

गुरु आज्ञा में आप मिटावे सो होवे शिष्य जयकारी ॥

निर्भय धाम प्राप्त पावे नित सिख्या मन परवेसे ।

"मंगत" ले गुण जाल से छूटे सब नासे भ्रम संदेसे ॥

१०. गुरु बचन विश्वास में दृढ़ता :-

पत्र मिला । ईश्वर सत श्रद्धा देवें । तमाम परिवार को और तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी । ईश्वर सत अनुराग देवें । प्रेमी जो गुरु शिक्षा का निर्णय ये ही है कि कई किस्म के मनमाने निश्चय जो न सिद्धि और शांति के देने वाले होते है उनसे छुटकारा हासिल करके एक तत्व वस्तु में मन का लगाया जावे जिससे मेहनत सफल हो जावे । ईश्वर

चिन्तन जो अन्तर मुख धारणा से किया जाता है उसका जल्दी ही असर मन पर होने लगता है और ईश्वर प्रेम की शक्ति के बल से अपने आप पर काबू पा लेता है मगर गुरु बचन का विश्वास अटल होना चाहिए। यह मन एक बड़ा कठिन शत्रु है इसके दमन करने के वास्ते सत् मार्ग, सत् पुरुषार्थ और निर्मल प्रेम का वोध जरूरी होना चाहिए तब ही बुद्धि नाम चिन्तन के बल से मन पर गालब आ जाती है। और सत् स्वरूप को प्राप्त कर लेती है ईश्वर अधिक विश्वास और प्रेम देवें । जिससे अपने मानसिक दोषों को पवित्र करके निज स्वरूप आत्म आनन्द को अनुभव कर लेवें । ईश्वर नित सहायक होवे ।

११. गुरु देव की अपने शिष्यों से तवक्को (आशा) :-

आशीर्वाद पहुँचे पत्र मिला। ईश्वर समता बुद्धि देवें । तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी । प्रेमी जी समता की रोशनी को फैलाना तुम सब गुरुमुखों का परम धर्म है । और हर वक्त हमको अपने हृदय में समझें । यह हर वक्त याद रखें कि तुम प्रेमियों का जीवन अपने देश और धर्म के लिए अति सुगन्धित होवे । उम्मीद है कि तुम होनहार बच्चे ज़रूरी अपनी सादत मन्दी का सबूत देवेंगे। ईश्वर आज्ञा से हम भी तुम्हारे जैसे सच्चाई के मुतलाशियों की खातिर घर-घर फिर रहे हैं। प्रेमी जी जो कुछ हिदायत

तुमको मिली है उस पर हर वक्त कारबन्द रहें। यह संसार एक बड़ा अन्धकार है इस वास्ते हर वक्त सत् असूल को धारण करते रहें। कुर्बानी से जिन्दगी मिलती है तुम्हारी जिन्दगी बहुत ही कुर्बानी वाली चाहते है। इस वक्त ईर्खा द्वेष की आग प्रचण्ड हो रही है इसको बुझाने के लिए समता की रोशनी तलह हुई। तुम ग रुमुख जरूर इस रोशनी की किरणें बनकर अपने जीवन और देश को जरूरी प्रकाश करें। हिन्दू कौम की विखरी हुई हालत को तुमने टाँका लगाना है इस वास्ते इस महा कार्य का बोझ तुम्हारे सिर है। हर घड़ी हर लमहा अपनी इखलाकी जिन्दगी का सुधार, अपनी आत्मिक उन्नति रोज़ाना अभ्यास करके प्राप्त करें।

सत्संग एक महा कारज है इसको हर वक्त हर एक प्रेमी तन, मन, धन करके धारण करे। सत्संग एक जीवन हैं राज स्वराज की बुनियाद यह सत्संग ही है हर वक्त तुम्हारे अन्दर यह तड़प होनी चाहिए कि हमारे जीवन से लोगों को सुख मिले। यह ईश्वर का हुक्म है कि जो जोव पर सुख और परहित का विचार करता है वह ही परम आनन्द को प्राप्त होता है। इस वास्ते हर वक्त कोशिश करो समता के मेहराज को हासिल करने की ! समता हो आखिरी मुकाम है जहाँ यह जीव अपनी अनान्यित से मुखलसी पाकर अपने नित स्वरूप में लीन हो जाता है। हर एक सोसाइटी को समता की तबलीग़ करें और

आपस की कशमकश जूहलाना से मुखलसी हासिल करें। प्रेमी- जियो तुम्हारी नेक सीरत हर वक्त चाहते हैं। तुम्हारे अन्दर परउपकार और देश सेवा की तड़प चाहते हैं। तुम्हारे अन्दर दुखियों के दुःख का अहसास चाहते हैं। तुम्हारे अन्दर एकता सत्संग चाहते हैं। तुम्हारे अन्दर अपने सच्चे प्राचीन बुजुर्गों का आदर्श चाहते हैं। तुम्हारे अंदर समता के लामादूद दायरे की रोशनी चाहते हैं। तुम्हारे अन्दर गुरुभक्ति और ईश्वर परायण जीवन चाहते हैं। तुम क्या प्रेमी सच्चे अधिकारी इस हमारी प्यास को पूर्ण करोगे जरूरी अगर तुमने अपना सच्चा रिफारमर माना है तो जरूरी अपनी कुरबानी का सबूत देवेंगे। ईश्वर तुमको सामर्थ देवेंगे। ईश्वर सबको सत्संग प्रीति बख्शे। गाह बगाह सत्संग की कारवाई लिखते रहना ईश्वर तुमको सत सेवा का भाव बख्शे। और हर वक्त हमको अपने हृदय में समझें। जो उपदेश तुमने ग्रहण किया है उसको हर वक्त दृढ़ करें। इस दुनियाँ में बड़े आला मेहराज को प्राप्त करोगे। अपने गुरु भाइयों से और तमाम जनता से अधिक से अधिक प्रेम बढ़ायें। सब प्रेमियों को आपस में मिलकर सेवा करनी चाहिए। यह तुम्हारी अव्वल ड्यूटी है। ईश्वर उस पर खुश होता है जोई श्वर के नियम पालन करने वाला है। तुम हर वक्त उस महाप्रभु के विश्वासी बने रहो। दुनियाँ में शान्ति को पाओगे हमको दूर मत समझें वल्कि अपने हृदय में, पत्रका द्वारा आशीर्वाद हासिल करते रहा करो। सत्संग में दृढ़ता रखनी ईश्वर सत श्रद्धा देवें।

१२. गुरु बचन के विश्वासी होकर जीवन को मार्ग धर्म में दृढ़ करो :-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सतश्रद्धा देवें। ईश्वर सत धर्म प्रीत देवें। हर वक्त हमको हृदय में देखें। प्रेमीजी तुम्हारे जिम्मे बड़ा बोझ है कि पहले अपना जीवन पवित्र करना फिर दूसरों के वास्ते यत्न करना। तुम बड़े खुशनसीब हो जिनको ऐसे राहवर की सरप्रस्ती हासिल हुई है। अब इस तालुक्क को खुशगवार करना है। और हर वक्त गुरु वचन के विश्वासी होकर अपने जीवन को मार्ग धर्म में दृढ़ करना तुम्हारा परम धर्म है। ईश्वर आज्ञाकारी जीवन बख्शे। तमाम प्रेमियों को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। तुम्हारी श्रद्धा हमारे दिल में है और इधर से आशीर्वाद तुमको हर वक्त मिल रही है। ईश्वर सफलता देवें और गुरु बचन का विश्वास धारण करके दीन व दुनियाँ में सुरखरुही हासिल करें। अपने आपको मर्देकामिल बनाओ और समता की रोशनी को फैलाओ यही तुम्हारे जीवन का राज है। ईश्वर आनन्द देवें, हर वक्त हमको हृदय में देखें और सत भाव ग्रहण करें।

१३. गुरु उपदेश द्वारा मानसिक शान्ति हासिल करो :-

आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सत श्रद्धा देवें। तमाम संगत को आशीर्वाद कहनी। ईश्वर सबमें धर्म प्रतीत देवें।

प्रेमीजी हमको जुदा न समझें बल्कि तुम्हारी सत श्रद्धा से तुम्हारे हृदय में मौजूद हैं। प्रेमीजी तुम प्रेमियों को वाज्या होवे कि गुरु वचन को दृढ़ निश्चय से धारण करें और अपनी जिन्दगी को खुशगवार बनायें और दूसरों के लिए एक नमूना बनकर दिखलायें। इस वक्त धार्मिक, सामाजिक उन्नति विल- कुल गरूब हो चुकी है। तुम प्रेमियों को चाहिए कि बाअसूल जीवन बनाकर देश धर्म की रक्षा करें। सत्संग का प्रोग्राम बहुत मुकम्मल करें और तमाम प्रेमियों को शामिल होने के वास्ते प्रेरणा करें नहीं तो तुम प्रेमी जरूरी एक जीवन वन कर दिखलायें। हर वक्त गुरु आशीर्वाद से सफलता प्राप्त करें। शिष्यों का फर्ज है कि गुरु उपदेश को अपनाकर मानसिक शान्ति हासिल करें। प्रेमियों से बहुत सी सेवा चाहते हैं ईश्वर तुमको निर्माण भाव और सत सेवा का जीवन वरुशे जो कि सदाचारी पुरुषों का लक्षण है। जरूरी अपने राहनुमा के दर्द को दिल में जगह देनी और सही मानों में अपना जीवन पेश करें। तुम प्रेमियों के सिर पर धर्म का बड़ा बोझ है। ईश्वर तुमको सत बुद्धि देवें। हर वक्त बुलन्द ख्याली हासिल करें। वैर, बुगज (द्व ेष) को मिटाने की कोशिश करें। हर एक से सांझ पैदा करें। ईश्वर विश्वास पूर्ण रखें और गुरु को हरवक्त सहायक देखें। प्रमीजी अपने अन्दर पवित्र जल्वा पैदा करना चाहिए और बड़ी से बड़ी कोशिश करके सत असूलों को धारण करना

चाहिए। अभ्यास ज़रूरी किया करें इससे बुद्धि प्रकाश होती है। तमाम प्र ेमी समता का जीवन हासिल करें। ईश्वर बल बुद्धि देवें। हर वक्त हमको हृदय में देखें ईश्वर आज्ञा से जल्दी ही कहीं तप की खातिर एकान्त में जावेगे। ईश्वर सत भावना देवे और गुरु बचन का अटल विश्वास बक्शे हर वक्त नाम प्रीत बनी रहे।

बाल धर्म सम्बन्धी पत्र

१. बालकों के लिए शिष्टाचार पर जोर:

ईश्वर सत् श्रद्धा देवे | संगत के तमाम वाल मैम्बरान को आशीर्वाद कहनी । वाज्या होवे कि हर वक्त आला दिमाग लोगों की जिन्दगी का तरीका मुताल्या करें और उसके मुता- बिक अपना जीवन बनायें। अपनी खुराक, लिबास, संगत को नित ही पवित्र करें ईश्वर तुम बच्चों को होनहार बनावें जिससे अपने आपका और दूसरों का सुधार कर सकें हर वक्त समता के असूलों का विचार करें और अपनी उन्नति करें। तमाम दीगर प्रेमियों को आशीर्वाद कहनी । हर वक्त नेक अमल धारण करें । हर एक का अदब करें। फजूल खर्ची का बिलकुल त्याग करें। गरीब यतीमों की मदद करें। ईश्वर बल, बुद्धि देवें । गाह बगाह पत्र लिखा करें, ईश्वर सत बुद्धि देवे ।

२. समता के बाल मेम्बरों का धर्म :-

आशीर्वाद पहुँचे। ईश्वर तुम्हारे अन्दर धर्म का जज्बा पैदा करें । तुम बच्चों ने ही देश और धर्म की रक्षा करनी है । ताम बच्चों को महामन्त्र, मंगलाचरण, आरती और समतामंगल याद होना चाहिए और हर बाल मैम्बर सुबह पवित्र होकर पच्चीस मिनट तक महामन्त्र का जाप दिल में करें और फिर और कारवाई

करें। प्रभु सिमरन से बुद्धि तेज़ होती है और असली सुख प्राप्त होता है। मुनशी चीज़ और माँस से परहेज़ करना चाहिए। हर एक बाल मैम्बर का धर्म है। ईश्वर तुमको अधिक प्रेम और श्रद्धा देवे। पुस्तकें खुद भी पढ़ो मगर अभी तुम बच्चे हो इस लिए तुम सही मतलब नहीं निकाल सकते। बड़े मैम्बरों से सुनें भी और उनसे अर्थ पूछ लिया करें। तुम्हारे वास्ते यही वड़ी भक्ति है कि सदाचारी जीवन धारण करें। आपस में एकत्र होकर बैठें। और महामन्त्र का जाप किया करें ईश्वर पवित्र जीवन बख्शे।

३. समता के मैम्बर का फर्ज -

प्रेमीजी धर्म की जाग्रति बड़ी कुरबानी से होती है इस वास्ते हर एक समता के मैम्बर का फर्ज है कि समता का वकार हर एक के दिल में ज़ज्ब करें और खुद अपना जीवन अमली बनावें। बड़ी जरूरत है यह याद रखें कि तुमने सख्त जगह अपना जीवन भेंट किया है इस वास्ते दमबदम कोशिश करके 'धर्म को जाग्रत करें।

चेतावनी

गुरु देव जी की आखिरी चेतावनी :-

प्रेम पूर्वक ब्रह्म सत्यं स्वीकार करें जी। श्री सत्गुरु देव जी महाराज आशीर्वाद फरमाते हैं आप सब स्वीकार फरमायें जी। आप के प्रेम पत्रों द्वारा दर्शन हुये और सत्संग समाचार मिले श्री महाराज जी फरम हैं कि आप सत्संगियों के हालात मालूम हो रहे हैं कि आम प्रेमियों की गंर हाज़िरी एक अधिक अश्रद्धकपन का सबूत दे रही है जिससे ऐसा मालूम होता है कि बहुत सा सम प्रेमियों की उन्नति की खातिर सरफ (व्यतोत) हुआ है जिसका नतीजा कुछ नहीं निकला। हफ्ता में एक दफा (बार) जब मिलकर बैठना नहीं आया तो और सिद्धि को क्या प्राप्त कर सकेंगे। खैर यह समय का चक्कर है और कुछ इस देश की बदनसीबी है। जिससे सिद्ध पुरुषों के बचन पर भी एतमाद (भरोसा) नहीं रहा है और हर किसम की चालाकी फकीरों के दरबार में शुरू कर रखी है इन हालात को मदे नज़र रखते हुये अब ऐसे ना फरमान प्रेमियों से कतह ताल्लुक (सम्बन्ध विच्छेद) ही बेहतर रहेगा। जिसका सरूप एक साल एकान्त सेवन के बाद प्रेमियों तक नमूदार (जाहिर) हो जायेगा। ऐसे संतों के दरबार

में अधिक श्रद्धा और पूरी-पूरी कुर्बानी के जज्बात रखने वाले प्रेमो ही अपनी जिन्दगी सही धर्म के रंग में रंग कर दूसरों के वास्ते भी एक आदर्श सरूप बन सकेंगे। अब समय प्रेमियों के इहान का आ रहा है और यह भी निश्चय कर लेगें कि आइन्दा ऐसे संतों का हम कलाम होना भी बड़ी श्रद्धा और शुभ भाग की निशानी होगी। ऐसी आज़ादी ना रहेगी जो आगे तुमको मिली हुई है जिसका नतीजा कुछ नहीं निकला। इस वास्ते अपने-अपने फाइज को समझें और गरु बचनों को अपनायें इस में सब की कल्याण है यह एक आखिरी चेतावनी है एक देहली के नहीं बल्कि सब जगह के प्रेमियों के वास्ते है। ईश्वर सुमति देवे। श्री महाराज जी दोबारा आशीर्वाद फरमाते हैं। स्वीकार करें। ईश्वर नित ही सुमति हम सब को बख्श। तब ही सत नियमों को अपना सकेंगे। प्रेमियों को बार-२ उपर लिखे बचनो को सुना देवें हर एक प्रेमी विचार करके सत मार्ग में दृढ़ होने का यत्न करके सफलता प्राप्त करें। सब सँगत को ब्रह्म सत्यं॥

जीवन परिचय

पूज्यपाद श्री सत्गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी वर्तमान युग के जन्मसिद्ध सत्पुरुष हुए हैं। आपका जन्म मंगलवार दिनांक मग्घर सम्वत् १६६० तदनुसार २४ नवम्बर, १९०३ को शुभ स्थान गंगोठियाँ ब्राह्मणां, जिला रावलपिंडी (पाकिस्तान) के एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप बाल ब्रह्मचारी, पूर्ण योगी, परम त्यागी एवं ब्रह्मनिष्ठ आत्मदर्शी महापुरुष थे।

आप बाल्यकाल से हो सिद्ध पुरुष थे और आप में "स्थित प्रज्ञ" के समस्त लक्षण पूर्ण रूपेण घटते थे। १३ वर्ष की स्वल्पआयु में आत्म साक्षात्कार कर लेने के पश्चात् आप सांसारिक प्राणियों का उद्धार करते रहे। देश और काल के अनुसार जहाँ कहीं भी आपने धर्म की मर्यादा को भंग होते देखा तथा सामाजिक नियमों के पालन में त्रुटि पार्ट, वहाँ पर ही धर्म की मर्यादा की संस्थापना की और सदाचारी जीवन बिताने का उपदेश देकर सामाजिक ढाँचे को विच्छू खल होने से बचा लिया।

आप अपनी मधुर वाणी और निर्मल विचारों द्वारा हरएक को प्रभावित कर लेते थे और सरल एवं सुबोध भाषा में आध्या- "त्मिकता के गम्भीर विषयों को सहज हो समझा दिया करते थे। आपने समता के उद्देश्य का जगह-जगह पर प्रचार किया और यह सिद्ध कर दिया कि समता सिद्धान्त को अपनाकर मानव संकुचित विचारधारा, सांप्रदायिकता तथा जाति-पांति के बन्धनों से ऊपर उठ सकता है।

संगत समतावाद